ISSN-0971-8397

योजना

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दिसम्बर 2022 विकास को समर्पित मासिक ₹ 22

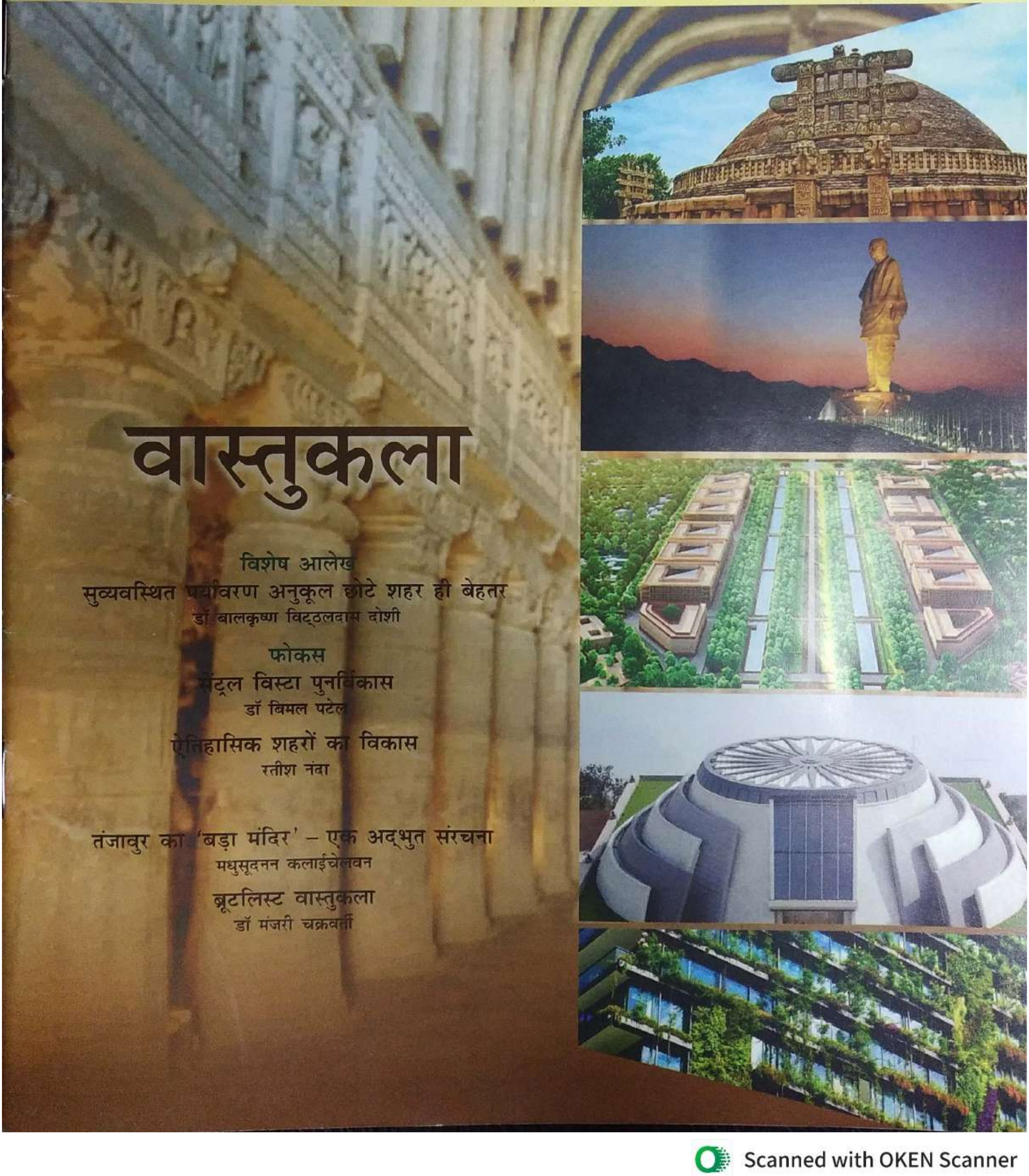

वास्तुकला

विशेष आलेख

सुव्यवस्थित पर्यावरण अनुकूल छोटे शहर ही बेहतर

डॉ बालकृष्ण विट्ठलदास दोशी

फोकस

सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास

डॉ बिमल पटेल

ऐतिहासिक शहरों का विकास

रतीश नंदा

तंजावुर का 'बड़ा मंदिर' – एक अद्भुत संरचना

मधुसूदनन कलाईचेलवन

ब्रूटलिस्ट वास्तुकला

डॉ मंजरी चक्रवर्ती

Scanned with OKEN Scanner

आपकी राय

yojanahindi-dpd@gov.in

मनोहारी समुद्री जीवन

योजना का अक्टूबर अंक 'हमारा पारिस्थितिकी तंत्र' बहुत ही ज्ञानास्पद रहा है। इस पत्रिका में बताया गया है कि प्राणी विविधता, जैव विविधता का एक नया रूप उभरता दिख रहा है। पत्रिका में भूवैज्ञानिक अन्वेषण आदि का प्रस्तुतीकरण बेहद रोचकता के साथ ज्ञानरूपी है।

मानवीय गतिविधियों द्वारा समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र धीरे-धीरे बर्बाद हो रहा है, इसी के परिप्रेक्ष्य में एक कहावत याद आ रही है -

बेहद मनोहारी है समुद्र का जीवन,
इनसे मिले हमें समृद्धि और ऊर्जा अपार,
इन्हें सहेजकर आओ करें इनका उद्धार।

डॉ रहीस सिंह द्वारा लिखित प्रकृति और विकास के बीच संतुलन काफी विचारत्मक रहा है। जल के महानायक कॉलम भी इतिहास के एक अनोखे अंदाज से मिलता है जो जानना बेहद आवश्यक है। इसके अतिरिक्त अंक में भारत अंटार्कटिक विधेयक, 2022 भी प्रस्तुत करने के लिए योजना टीम का बहुत-बहुत धन्यवाद। आगामी अंक 'भारतीय समुद्री क्षेत्र' का उत्सुकता से इंतजार रहेगा।

– मोहित यादव
खेरा अछल्दा, औरैया, उत्तर प्रदेश

अनावश्यक उपयोग से बचना होगा

योजना 'हमारा पारिस्थितिकी तंत्र' हमारी धरती-हमारा पर्यावरण के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। विभिन्न प्रजातियों और मानव जाति के बीच नाजुक संतुलन से ही पारिस्थितिकी तंत्र बनता है किन्तु इसकी जानकारी हममें से बहुत कम लोगों को है। योजना ने इस विषय पर विशेषांक निकाल कर आम आदमी को इस संबंध में जानकारी देने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। जैव तंत्र और अजैव तंत्र के सामंजस्य पर ही हमारा पारिस्थितिकी तंत्र चलता है।

श्रीमद्भगवद्गीता में इस थ्योरी को जड़ और चेतन के रूप में निरूपित किया गया है। आज जैव तंत्र या चेतन तंत्र अपनी अल्पकालिक सुविधा और लाभ के लिए इस तंत्र का सतुंलन बिगाड़ रहा है जिसके नकारात्मक परिणाम हमारी आनेवाली पीढ़ी को भुगतने होंगे। आज संसाधनों का दुरुपयोग हो रहा है। कम खाना और उसे बर्बाद नहीं करना गरीबी की निशानी नहीं है और न ही खाने का अनावश्यक उपयोग करना और बर्बादी करना अमीरी की निशानी। देश के सभी लोगों को पारिस्थितिकी तंत्र को स्वस्थ बनाये रखने के लिए जागरूक होना होगा।

– विश्वनाथ सिंहानिया
जयपुर, राजस्थान

पारिस्थितिकी तंत्र पर दुर्लभ अंक

पारिस्थितिकी पर आधारित विशेष और दुर्लभ, संग्रहणीय अंक मिला। सभी लेख विविधतापूर्ण एवं जानकारी से परिपूर्ण हैं। ईकोलॉजी, जो पर्यावरण विज्ञान और भूगोल विषय के अंतर्गत पढ़ाई जाती है, सभी प्रतियोगी परीक्षाओं में समान रूप से अनिवार्य है, इसके साथ ही सामान्य नागरिकों से अपेक्षा की जाती है कि अपने आसपास घट रही पर्यावरणीय घटनाओं से परिचित हो, जैसे जल का प्रदूषित होना, हवा का जहरीला होना, जंगलों का तेज़ी से कटाव, मिट्टी का अपदन होना, ये सभी सामान्य नागरिकों के जीवन चर्चा से खास जुड़ी है। आज विश्व में जैव विविधता जिस तरह से नष्ट हो रही है, वह चिन्ता का विषय बन गई है। भारत में स्थल और जल पारिस्थितिकी को भविष्य के लिए बचाये रखना, न केवल सरकार का दायित्व है, बल्कि आम नागरिकों की इसमें महत्वपूर्ण भागीदारी होनी चाहिए।

हमारे देश में पारिस्थितिकी तंत्र पर जो खतरा मंडराने लगा है वह आधुनिक समय में उपभोक्तावादी प्रवृत्ति का बेहतरीन उदाहरण है। मानवीय हस्तक्षेप से हमारी समृद्ध जैव-विविधता पर संकट मंडराने लगा है, जैसा कि संपादकीय पन्ने में कहा गया है, ''भारतीय उपमहाद्वीप को प्रकृति ने मनोरम भौगोलिक विविधता का वरदान दिया है जिसमें अनेक प्रकार के जीवधारी पनपते हैं, चाहे स्थलीय प्रदेश हो या महासागरीय भाग। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में विषुवतीय जलवायु के पाए जाने से अनेक वनस्पतियां और हरी-भरी जमीन है। भारत-प्रशांत क्षेत्र में अनूठे कोरल (मूंगा द्वीप) के दर्शन होते हैं, जो पारिस्थितिकी तंत्र में बहुत नाजुक जीव-जंतुओं के निवास का साक्षात्कार (दर्शन) सहज ही करवाते हैं।

इस अंक में प्रकाशित आलेख 'भूवैज्ञानिक अन्वेषण' डॉ. एस राजू द्वारा भूभौतिकी तथा भूरासायनिक विषयों तथा इससे जुड़े विषयों पर अनेक अत्याधुनिक तथ्यों, नवीनतम तकनीकी, डेटा, नवीनतम अनुसंधान पर नई जानकारी सरल भाषा में दी गई है, जिससे एक ही पत्रिका में विषय से संबंधित जटिलताओं से रूबरू होना आसान हो गया है। महासागरीय जीवों और संसाधनों, हैबिटेट पर डॉ मनीष मोहन गोरे का आलेख पूर्णतः वैज्ञानिक तथा अनेक बहुमूल्य तथ्यों से परिपूर्ण है। जैविक संपदा से परिपूर्ण सी शिवपेरूमन के लेख में सचित्र विविध जीव जंतुओं का परिचय कराया गया है। अंत में इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों के विद्वान लेखकों को बहुत-बहुत धन्यवाद। यह अंक दुर्लभ और अनुपम है, यह परंपरा आगे भी जारी रखें।

– शैलेन्द्र कुमार पांडेय
पटना, बिहार

Scanned with OKEN Scanner

संपादकीय

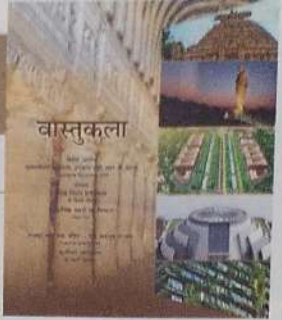

निर्माण की भव्यता

"...लेकिन बहुत कम लोग यह समझते हैं कि कोई भवन का स्वरूप हमारे मन में एक भव्य प्रतीक की तरह बसा होता है। भवन का निर्माण उस जीवंत प्रतीक को एक ठोस यथार्थ में बदलने का– उसे एक भंगिमा और रूप प्रदान करने का प्रयास है। जो व्यक्ति इस तथ्य को समझता है, उसके लिए उसका घर उसके अस्तित्व की पहचान है।"

– आयन रेंड, द फाउंटेनहैड*

*(*रूस में जन्मी महान अमरीकी लेखिका एवं दार्शनिक, जिनके उपन्यास 'एटलस श्रग्ड' और 'द फाउंटेनहैड' बेहद लोकप्रिय रहे)*

वास्तुकला या स्थापत्य किसी स्थान की पहचान है। यह किसी इमारत, बस्ती, कस्बे, नगर या देश का शरीर और आत्मा है। अक्सर विभिन्न स्थानों की पहचान उनके आसपास के स्मारकों, भव्य इमारतों, आस-पास के परिदृश्य, आराधना-स्थलों – यहाँ तक कि गली-कूचों से भी होती है। उत्साही सैलानियों के लिए किसी शहर के नए-पुराने हिस्सों को बस के जरिए या पैदल ही देखना एक विविधताओं से सम्पन्न अवसर होता है।

बहुत कम सजावट वाली पुरानी इमारतें हों या रंगीन शीशों वाले भव्य भवन हों, घरों की चौखटें और झरोखे हों या खुला अग्रभाग (फसाड) हो, बहुमंजिला इमारतें हों या विशाल बरामदों वाले भवन हों, प्राचीन धरोहर और कलात्मकता को प्रदर्शित करते निर्माण हों या आधुनिक नगर-नियोजन हो – स्थापत्य की विविधता सभी ओर नज़र आती है। प्राचीन और नवीन के संगम वाले वाराणसी और दिल्ली जैसे नगरों में तो देखने का दोहरा सुख है। हर विशिष्ट-निर्माण-शैली, इस्तेमाल की गई सामग्री, डिज़ाइनों और सम्पूर्ण प्रभाव में उनके निर्माण का काल प्रतिबिम्बित होता है। इन विशिष्टताओं से उन इमारतों के निर्माताओं और वहाँ रहने वालों की जरूरतों, उनके सौन्दर्य-बोध और डिज़ाइन की उनकी समझ का भी पता चलता है।

ऐसे ही अनुभव किसी देश को भी परिभाषित करते हैं। दूर देशों से आने वाले सैलानियों की आँखों में उनके गंतव्य देश की भव्य इमारतें और अन्य निर्माण बस जाते हैं। ऐसी ही इमारतों-निर्माणों को अक्सर उस देश से सम्बन्धित इंटरनेट और प्रकाशन प्रचार-सामग्री में प्रतीक-चिह्न के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। स्थापत्य की व्यापकता का यही महत्व है।

योजना के इस अंक में हमने स्थापत्य के क्षेत्र में श्रेष्ठ निर्माणों के दृष्टिकोण (विज़न) और परिप्रेक्ष्य और उनकी वर्तमान स्थिति को समझने का प्रयास किया है। प्रख्यात विद्वानों और वास्तुविदों ने अपने-अपने नज़रिए से यह बताने का प्रयास किया है कि कैसे ईंट-गारे के ढेर से स्थापत्य की अनुपम कृतियों का निर्माण हो सकता है। इन विद्वानों ने यह विश्लेषित करने का भी प्रयास किया है कि आधुनिक समय में शहर कैसे फ़ैल रहे हैं या विस्तार कर रहे हैं और टिकाऊ विकास, बढ़ती जनसंख्या और बस्तियों के स्वरूप और जीवन-शैली के बदलावों से जुड़ी चुनौतियों से कैसे निपटा जा सकता है। यह भी चर्चा की गई है कि कैसे सामुदायिक प्रयासों और भागीदारी के जरिए, इन निर्माणों के आस-पास रह रहे लोगों को इनके स्थापत्य और इनकी धरोहर से जुड़ी गाथाओं से जोड़ा जा सकता है।

भारत इस समय अनेक क्षेत्रों में पूर्ण रूपांतरण या बदलाव के दौर से गुज़र रहा है। इन बदलावों में औपनिवेशिक अतीत से जुड़ी राष्ट्र की पहचान को भी बदल कर नया स्वरूप देना भी शामिल है। राजधानी नई दिल्ली में *'सेंट्रल विस्टा'* के निर्माण जैसी अनेक विकास परियोजनाओं में ऐसे प्रयास प्रतिबिम्बित होते हैं। आज़ादी के अमृत महोत्सव के साथ-साथ अनेक भव्य निर्माण हुए हैं। प्रधानमंत्री संग्रहालय, कर्त्तव्य पथ और स्टैच्यू ऑफ यूनिटी जैसे निर्माण देश के जन-मन में गर्व का संचार करते हैं।

हमें उम्मीद है कि योजना का यह अंक पाठकों को ऐसी दृष्टि से सम्पन्न होने में सहायक होगा जिससे वे हमारे देश के इन निर्माणों के स्थापत्य और डिज़ाइन के सौन्दर्य तथा उनसे जुड़ी गाथाओं को बेहतर तरीके से समझ सकेंगे और इनकी सराहना कर सकेंगे। ■

Scanned with OKEN Scanner

विशेष आलेख

सुव्यवस्थित पर्यावरण अनुकूल छोटे शहर ही बेहतर

डॉ बालकृष्ण विट्ठलदास दोशी

भारत के नक्शे को देखते हुए हमें एक विशिष्ट लक्षण नज़र आता है। इसमें बड़े-छोटे आकार के अनेक बिन्दु नज़र आते हैं जो हमारे महानगर, शहर और कस्बे हैं। ये 'शहरी मंदाकिनियों' (अरबन गैलेक्सीज़) जैसे नज़र आते हैं। इनमें विभिन्न स्थान परस्पर स्वाभाविक रूप से जुड़े हैं और उनके बीच आना-जाना आसान है। आगे और अध्ययन करने से पता चलता है कि इन नेटवर्कों की अपनी विशिष्ट जीवन-शैली और पर्यावास हैं जो स्थानीय संसाधनों, जलवायु तथा जमीन की प्रकृति और उपलब्धता से जुड़े हैं। इस प्रकार के विकास का विस्तार और इनके संपर्क-बिन्दु 'जैविक' वृद्धि जैसे प्रतीत होते हैं जिसमें जैविक वृद्धि जैसी ही अनुकूलन, उत्प्रेरण और एक चरम स्थिति तक पहुँच कर थम जाने की प्रवृत्तियाँ होती हैं जो समाज के टिकाऊ और संरक्षित रहने के लिए आवश्यक है। हमें अनेक स्तरों पर पनपते समाजों की ज़रूरत है, न कि ऐसे अकेले विशाल वट-वृक्ष की जो आस-पास के छोटे-छोटे इलाकों को समेटता हुआ बेतरतीब बढ़ता जाए और इन छोटी इकाइयों की जीवनी-शक्ति नष्ट कर दे।

आजकल भारतीय नगरों-कस्बों के टिकाऊ विकास को लेकर बड़ी चर्चा है। लेकिन हमें इस धारणा को ठीक से समझना होगा और कि टिकाऊ विकास से जुड़ी अन्य बातें क्या हैं और सम्बन्धित क्षेत्र और जीवन-शैली पर बुरा प्रभाव डाले बिना कैसे यह लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। मेरे लिए टिकाऊ होने का मतलब ऐसा दीर्घकालीन विकास है जो बहुत अधिक केंद्रीकृत न हो जाए। हमें जैव-जगत की ही तरह ऐसे निर्माण करने चाहिए जिनमें पिछले निर्माणों के स्थान पर एक नई और बेहतर कृति बन सके। उदाहरण के लिए, कोई मनुष्य हो, हाथी हो या चींटी हो, वह अपने 'सामान्य' आकार से ज्यादा विशाल नहीं होते। अगर किसी प्राणी का आकार असामान्य रूप से बढ़ जाए तो वह बाहरी दबावों अथवा शरीर की आंतरिक गड़बड़ियों की वजह से नष्ट हो जाएगा। जुरासिक काल के विशाल डाइनोसोरों का इसी तरह अंत हुआ होगा।

हमें अपने विशाल महानगरों के बारे में भी इसी नज़रिए से सोचना होगा। हम उनकी मूलभूत सुविधाओं का विस्तार कर उनकी कार्यप्रणाली को सुधार सकते हैं, लेकिन ज़रूरी नहीं कि ऐसा करने से उनका जीवन-स्तर भी सुधर जाए। साथ ही, किसी एक शहर पर

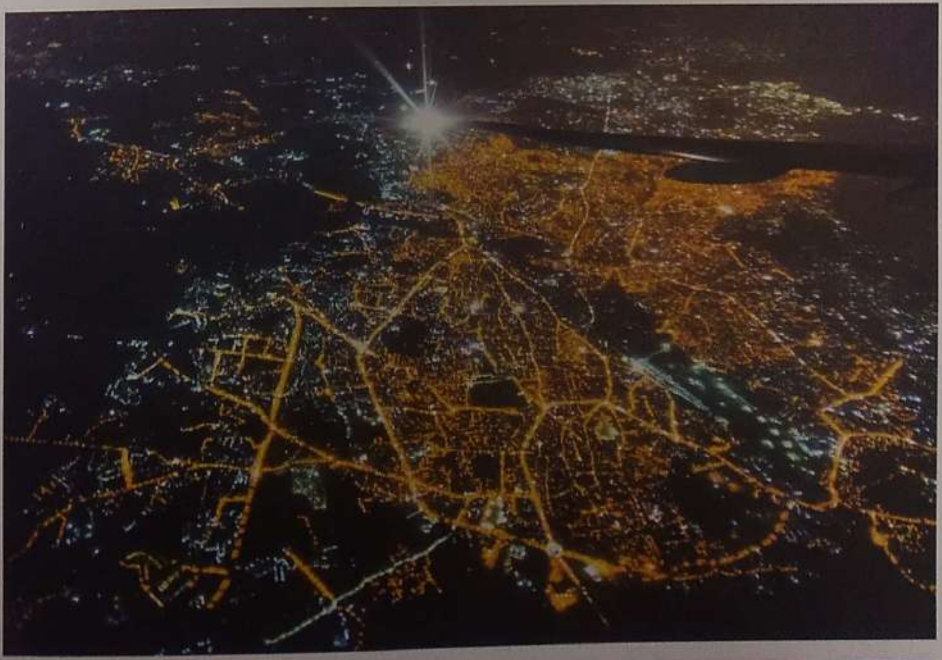

लेखक पहले भारतीय वास्तुकार हैं जिन्हें प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय प्रित्ज़कर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पद्मभूषण और पद्मश्री से सम्मानित 95 वर्षीय वयोवृद्ध वास्तुकार श्री दोशी ने सात दशकों से अधिक लंबे और शानदार करियर में 100 से अधिक परियोजनाओं को पूरा किया है, जिनमें से कई प्रतिष्ठित सार्वजनिक संस्थान हैं। इनमें आईआईएम बेंगलुरु, आईआईएम उदयपुर, राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली, अहमदाबाद में टैगोर मेमोरियल हॉल, कलोल का इफको टाउनशिप और अमदावाद दी गुफा शामिल हैं। ईमेल : vsf@sangath.org

Scanned with OKEN Scanner

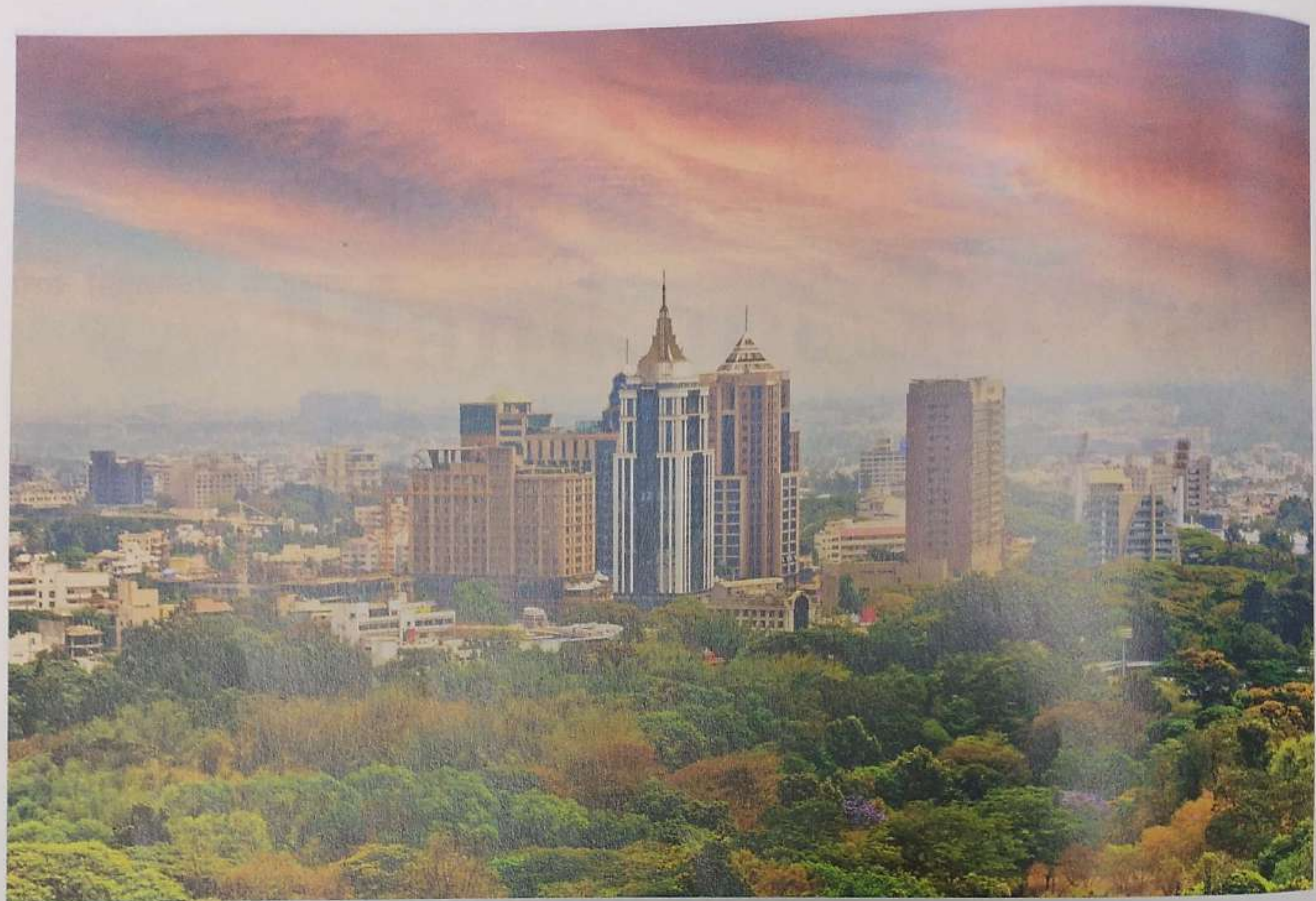

केन्द्रित विकास के फोकस की वजह से, हम तमाम संस्थानों और रोज़गार के अवसरों को उस शहर में ही केन्द्रित कर देते हैं जिसकी वजह से उस क्षेत्र के छोटे कस्बों के लघु शिल्प और उद्यम बर्बाद हो जाते हैं, वहाँ से पलायन को बढ़ावा मिलता है और बड़े शहरों में भीड़-भाड़ बढ़ जाती है। इस भीड़-भाड़ से जुड़ी प्रबंधन-समस्याओं, जटिलताओं और बड़ी जनसंख्या को ठीक से रोजी-रोटी और सुविधाएं नहीं दे पाने से बड़े शहर भी बर्बाद होने लगते हैं। शहरों के विस्तार का मतलब है, ज़रूरी कामों और मिलने-जुलने के लिए ज्यादा दूरियाँ, रोजी-रोटी के लिए आने-जाने में ज्यादा समय और ऊर्जा की खपत और ज्यादा मानसिक तथा दिमागी थकान।

आजकल बड़े पैमाने पर बनने वाली ब्रांडेड वस्तुओं को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाने के लिए बड़े शहरों का विस्तार ज़रूरी हो गया है। इसके लिए निरंतर विशाल होते उत्पादन केन्द्रों, औद्योगिक परिसरों, परिवहन सुविधाओं के बढ़ते नेटवर्क, शहरों की खास ज़मीनों पर बहुमंजिला इमारतों, विशाल बैंकिंग प्रणालियों और बढ़ी ब्याज दरों की ज़रूरत होती है। इसी के परिणाम-स्वरूप हमारे दिल्ली, कोलकाता, मुंबई और बेंगलुरु जैसे महानगर लगातार फैलते हुए अनेक समस्याओं से जूझ रहे हैं। इन महानगरों को चलाने के लिए तेल, पानी, जमीन और मानवीय ऊर्जा जैसे निरंतर खपत वाले संसाधनों की बेतहाशा जरूरत पड़ती है। दूसरी ओर, इन शहरों में जीवन की गुणवत्ता निरंतर घटती जा रही है। इस तरह, हम 'छोटा ही सुंदर है' (small is beautiful) की बजाय 'बड़ा बेहतर है' (bigger is better) का मंत्र अपनाने लगे हैं और इस राह को अपनाने के लिए ज़रूरी फंडिंग तथा सहमति के लिए पश्चिमी देशों की ओर रुख करने लगे हैं।

नियोजन मात्र भौतिक नहीं, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रगति भी है जो संसाधनों की उपलब्धता पर टिकी है। भारत के विभिन्न भागों के शहरों-कस्बों को देखने के बाद हमें पता चलता है कि स्थानीय लोगों की क्षेत्र-विशेष से जुड़ी विशिष्ट जीवन-शैली और कौशल विकसित हो जाते हैं।

भारत के नक्शे को देखते हुए हमें एक विशिष्ट लक्षण नज़र आता है। इसमें बड़े-छोटे आकार के अनेक बिन्दु नज़र आते हैं जो हमारे महानगर, शहर और कस्बे हैं। ये 'शहरी मंदाकिनियों' (urban galaxies-अरबन गैलेक्सीज़) जैसे नज़र आते हैं। इनमें विभिन्न स्थान परस्पर स्वाभाविक रूप से जुड़े हैं और उनके बीच आना-जाना आसान है। विभिन्न स्थानों के बीच खाली स्थान हैं जो स्थानीय परिवहन व्यवस्था, जैसे पैदल, साइकिलों, जानवरों से चलाए जाने वाले वाहनों से जुड़े हैं। इनके करीब ही ऐसे स्थान हैं जहां से भारी मोटर-वाहन सुलभ हो जाते हैं। मैं इसे समग्र रूप से विकसित, परस्पर निर्भर पर्यावास कहूँगा।

आगे और अध्ययन करने से पता चलता है कि इन नेटवर्कों की अपनी विशिष्ट जीवन-शैली और पर्यावास हैं जो स्थानीय संसाधनों, जलवायु तथा जमीन की प्रकृति और उपलब्धता से जुड़े हैं। बार-बार इस्तेमाल हो सकने वाले इन साझा संसाधनों (मैं इनमें मानवीय ऊर्जा को अवश्य शामिल करना चाहूँगा) और उपलब्ध संसाधनों के

Scanned with OKEN Scanner

अनुरूप जीने से, इनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी जीवन-शैली पनपी है और कृषि, शिल्पों और सांस्कृतिक मूल्यों का विकास हुआ है। इन कारणों से इन क्षेत्रों में आपसी घनिष्ठता विकसित हुई है और परस्पर संवाद आसान हुआ है। दिन-रात के 24 घंटों और मौसमों का चक्र समय, ऊर्जा और पारिवारिक जीवन से जुड़ा है। छोटे कस्बों का समग्र विकास हुआ और धीरे-धीरे वहाँ घरों, दुकानों, स्कूलों और जन-जीवन के केंद्र सार्वजनिक स्थानों का विकास हुआ।

इन कस्बों का अधिक गहनता से अध्ययन करने से हमें अपने नियोजन के लिए और भी महत्वपूर्ण तरीकों का पता चलता है। नियोजन मात्र भौतिक नहीं, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रगति भी है जो संसाधनों की उपलब्धता पर टिकी है। भारत के विभिन्न भागों के शहरों-कस्बों को देखने के बाद हमें पता चलता है कि स्थानीय लोगों की क्षेत्र-विशेष से जुड़ी विशिष्ट जीवन-शैली और कौशल विकसित हो जाते हैं। स्थानीय लोग ऐसे कौशल तभी विकसित कर पाते हैं जब व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण हो और मानवीय ऊर्जा को अपने आप को संसाधनों और मूल्यों के स्थानीय संदर्भों में समझने के अवसर मिलें। इस तरह की प्रगति विविधता में एकता के बीच अभिव्यक्त होती है और क्षेत्र-विशेष को समग्रता में समेट लेती है।

अगर हर छोटे कस्बे-शहर में औद्योगिक समूह बनाए जा सकें तो औद्योगिक परिसरों के निर्माण और रख-रखरखाव की भारी लागत बच सकती है और पैदल आने-जाने योग्य, शांत जीवन वाले परिवेश बन सकते हैं जिनका समृद्ध जीवन हर नागरिक पसंद करेगा। साथ ही, इन बस्तियों में सहज रूप से सांस्कृतिक टोलियों, सहकारी शिल्प प्रदर्शनों और छोटी विज्ञान प्रदर्शनियों का आना-जाना लगा रहना चाहिए जिससे स्थानीय लोग नई बातें सीख सकेंगे और अपने परिवेश तथा जीवन-शैली को बेहतर बना सकेंगे।

इस प्रकार के विकास का विस्तार और इनके संपर्क-बिन्दु 'जैविक' वृद्धि जैसे प्रतीत होते हैं जिसमें जैविक वृद्धि जैसी ही अनुकूलन, उत्प्रेरण और एक चरम स्थिति तक पहुँच कर थम जाने की प्रवृत्तियाँ होती हैं जो समाज के टिकाऊ और संरक्षित रहने के लिए आवश्यक है। हमें अनेक स्तरों पर पनपते समाजों की ज़रूरत है, न कि ऐसे अकेले विशाल वट-वृक्ष की जो आस-पास के छोटे-छोटे इलाकों को समेटता हुआ बेतरतीब बढ़ता जाए और इन छोटी इकाइयों की जीवनी-शक्ति नष्ट कर दे।

इलाकों में जल-आपूर्ति और सिंचाई सुनिश्चित करने वाले नदी-तालाबों, वन-क्षेत्रों और जैव जीवन को हमेशा महत्व दिया जाता रहा। बिना मशीनों वाले परिवहन से पर्यावरण के अनुकूल, प्रदूषण रहित और शांत रहन-सहन को बढ़ावा मिला। हर स्तर पर ऐसे खुले, मुक्त स्थान भी होते थे जहां लोग मिल-बैठ सकें। समुदाय का हर व्यक्ति रोजाना ऐसे मुक्त सामुदायिक स्थानों पर लोगों के साथ कुछ समय ज़रूर बिताता था और कभी-कभी तो उत्सवों के अवसर पर समाज के लोग ज्यादा समय एक साथ बिताते थे।

दूसरे, अध्ययनों से पता चलता है कि हर क्षेत्र के संस्कृति-केन्द्रित विशिष्ट नियम थे जिनसे उनकी ज़रूरतें निर्धारित होती थीं और इन जरूरतों के अनुरूप संसाधनों का उपभोग निर्धारित होता था। इसी तरह, रोजमर्रा के, साप्ताहिक, मासिक और मौसमी बाज़ारों से, उत्पादन और उपभोग - दोनों के लिए अर्थतन्त्र का समुचित स्तर, यानी अर्थव्यवस्था का सबसे किफ़ायती स्तर ('इकोनोमी ऑफ स्केल') निर्धारित होता था। दोनों में से कोई भी ज्यादा नहीं बढ़ पाता था और दोनों का स्तर संतुलित बना रहता था। 'इकोनोमी ऑफ स्केल' की हमारी वर्तमान समझ मुनाफा कमाने पर बहुत अधिक आधारित है और उत्पादन और उपभोग के संतुलन को पूरी तरह बिगाड़ देती है। इस असंतुलन की मांग-आपूर्ति,उद्यमों के उत्पादक स्तर तक पहुँचने की अवधि (जेस्टेशन), मूल्य-निर्धारण और साज-सामान तथा व्यवस्थाओं (लोजिस्टिक्स) पर अलग-अलग तरीकों से असर पड़ता है।

स्पष्ट है कि 'उपयुक्तता' के आदर्श ने भारत के प्रत्येक पर्यावास के अर्थ-तंत्र के स्तर और जीवनदायी विशेषताओं को दिशा दी है। बाढ़ों-अकालों के बावजूद इसी आदर्श की वजह से हमारे पर्यावास सदियों से सुरक्षित रहे हैं। मैं इस प्रवृत्ति के सार को इन शब्दों में व्यक्त करना चाहूँगा- यह सीमित संसाधनों का अनेक वैकल्पिक उपयोगों में रूपान्तरण है जिसके अंतर्गत मानवीय ऊर्जा सहित सभी संसाधनों का उपयोग अपेक्षाकृत छोटी, किफ़ायती पूंजी वाली और पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों के जरिए किया जाता है। साथ ही, यह इतनी ही उपयुक्त वित्तीय रणनीति के बिना संभव नहीं हो सकता इसलिए हमें सामूहिक हिस्सेदारी और ज़िम्मेदारी की पारंपरिक राह अपनानी होगी। हमें इसका

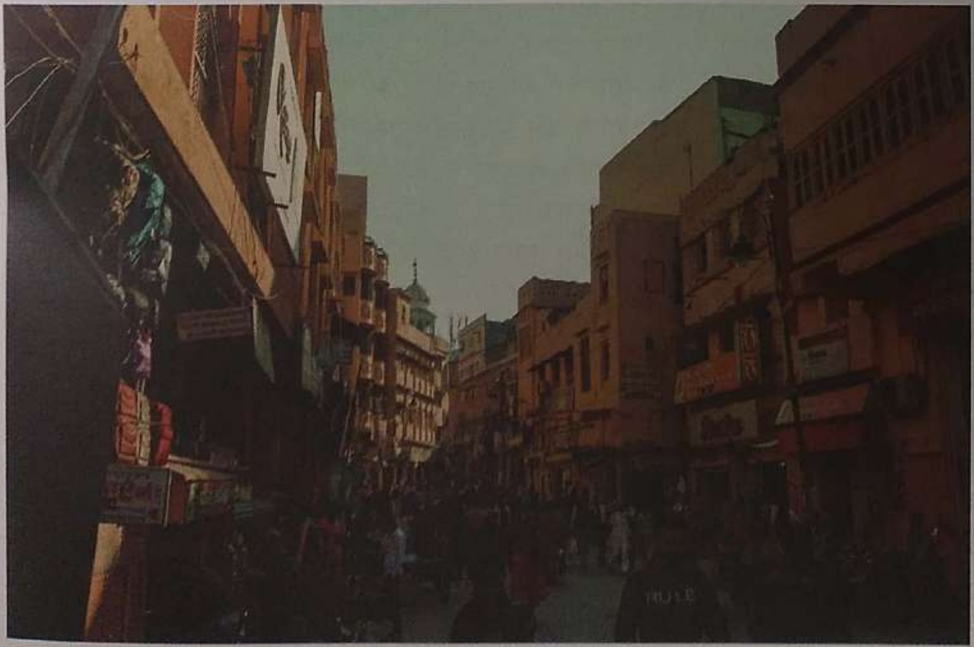

Scanned with OKEN Scanner

स्थानीय लोग नई बातें सीख सकेंगे और अपने परिवेश तथा जीवन-शैली को बेहतर बना सकेंगे। पारंपरिक कस्बों-गांवों के साथ-साथ, लोग गर्व के साथ स्थानीय जीवन-मूल्य विकसित कर सकेंगे जो उनके परिवेश और जीवन-शैलियों में स्पष्ट नज़र आएंगे।

गांधीजी का चरखा घर के हर सदस्य को उसके खाली समय में काम दिलाने वाला, सामाजिक दृष्टि से उत्पादक और सांस्कृतिक दृष्टि से प्रासंगिक सरल समाधान था। हमारे समय में इंटरनेट वैसी ही भूमिका निभा सकता है। पूरे परिवार के लिए एक ही इंटरनेट कनेक्शन से परिवार का हर सदस्य अपने खाली समय का अपने तरीके से उत्पादक इस्तेमाल कर सकता है और विश्व भर से जुड़ कर अपने व्यक्तित्व का भी विकास कर सकता है। यह वैश्विक और स्थानीय (ग्लोबल और लोकल) – दोनों तरह का प्रयास है जिसमें निरंतर सीखा जा सकता है, तरक्की करते हुए आत्म-निर्भर हुआ जा सकता है और इस प्रयास में बहुत ज़रूरी होने पर ही कहीं आने-जाने में अपनी ऊर्जा और समय खपाने होते हैं। इन छोटी आवश्यकताओं के लिए बिजली भी छोटे बार-बार इस्तेमाल हो सकने वाले स्रोतों से हासिल की जा सकती है।

ई एफ शुमाखेर हमें बताते हैं कि वस्तुओं और सेवाओं के रोज़मर्रा के उत्पादन के साथ-साथ हमें जो स्वाभाविक प्रतिभाएँ और हुनर मिले हैं, उन्हें भी विकसित करना और लोगों से साझा करना चाहिए ताकि हमारी आत्म-केंद्रिकता की जकड़न दूर हो सके। साथ ही, प्रकृति के स्वाभाविक 'प्रवाहों' की भी समझ होनी चाहिए और यह एहसास भी होना चाहिए कि मनुष्य इन विरत प्रवाहों का एक हिस्सा भर है। हमें साथी मनुष्यों और अन्य प्राणी-प्रजातियों के साथ साझेदारी की प्रवृत्ति विकसित करनी चाहिए। माइक्रो-फाइनेंसिंग और जीवन में विभिन्न कार्यों में किफ़ायती जीवन-शैली अपनाने से हमारे गांवों और सुदूर क्षेत्रों में सदियों से टिकाऊ तरीके से समाज चल रहा है। अपेक्षाकृत छोटी, सरल-सहज, कम पूंजी पर आधारित और पर्यावरण-अनुकूल बस्तियाँ विकसित करने की सच्ची चाह होती चाहिए। हमारे पुरखों ने जैसी मौलिक दुनिया बसाई, शहरों के नियोजन और स्थापत्य से जिस तरह संपदा बढ़ाई और ऐसी वस्तुएँ तैयार कीं जिनकी धरोहर आज भी हमें गौरवान्वित करती है– क्या हमें उस परिवेश को फिर से नहीं समझना चाहिए? क्या हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि जो महानगर हम बना रहे हैं, उन्हें आने वाली पीढ़ियाँ उतना ही सराहेंगी जितना हम अपने पुरखों की विरासत को सराहने योग्य समझते हैं? क्या हमें संग्रहालयों और पुराने शहरों को देखने की बजाय, एक नए तरीके के शहरी परिवेश का निर्माण नहीं करना चाहिए? क्या हमें एक 'नई विरासत' नहीं गढ़नी चाहिए? ■

उदाहरण अपने सफलतम सहकारी आंदोलनों, जैसे गुजरात में अमूल दुग्ध सहकारिता और पंजाब के किसानों के विविध प्रयासों में नज़र आते हैं। अहमदाबाद में कपड़ा मिलों के विकास के शुरुआती दौर में मिल-मालिकों और मज़दूर-महाजनों के बीच जैसी सहकारी भागीदारी विकसित हुई थी, उससे रोज़गार से आमदनी में अच्छी वृद्धि हो सकती है और आम लोगों की खुशहाली बढ़ सकती है। यही नागरिकों की सच्ची भागीदारी का तरीका है जिसमें चंद नेताओं और प्रबन्धकों को ज़िम्मेदारी सौंप कर केन्द्रीयकरण नहीं किया जाता, बल्कि साझा ज़िम्मेदारी निभाई जाती है।

हमें छोटे, ज्यादा सुगठित-सुव्यवस्थित शहर बनाने होंगे। इसका एक आयाम 'पैदल चल कर आने-जाने योग्य' शहर बनाना है। यह संभव है कि आजीविका, बुनियादी शिक्षा और मनोरंजन के साधनों सहित जीवन से जुड़ी सभी आवश्यक सुविधाएं आधे घंटे पैदल चलने के दायरे में हों। इससे ज्यादा दूर जाने के लिए सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका हो। ऐसे शहरों की मूल योजना समग्र रूप से बनाई जानी चाहिए। करीब एक लाख जनसंख्या (भारत-भर में 50 हज़ार से दो लाख तक जनसंख्या के करीब एक हज़ार ऐसे कस्बे हो सकते हैं) के छोटे शहर-कस्बे विकास-केन्द्रों की तरह विकसित किए जा सकते हैं जो आस-पास के गांवों-बस्तियों को सीखने, कमाने और विकसित होने का अवसर प्रदान करें और इन गांवों-बस्तियों के लोगों को इन छोटे शहरी केन्द्रों में आने-जाने में ज्यादा वक्त न लगे और दिक्कत न हो। अपने पुरखों के घर-जमीन के करीब रह पाने से पारिवारिक और सामुदायिक जीवन अधिक समृद्ध होता है। अगर हर छोटे कस्बे-शहर में औद्योगिक समूह बनाए जा सकें तो औद्योगिक परिसरों के निर्माण और रख-रखरखाव की भारी लागत बच सकती है और पैदल आने-जाने योग्य, शांत जीवन वाले परिवेश बन सकते हैं जिनका समृद्ध जीवन हर नागरिक पसंद करेगा। साथ ही, इन बस्तियों में सहज रूप से सांस्कृतिक टोलियों, सहकारी शिल्प प्रदर्शनों और छोटी विज्ञान प्रदर्शनियों का आना-जाना लगा रहना चाहिए जिससे

Scanned with OKEN Scanner

सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास

डॉ बिमल पटेल

सेंट्रल विस्टा भारत के लिए एक राष्ट्रीय प्रतीक है। नई दिल्ली के केंद्र में राष्ट्रपति भवन और इंडिया गेट के बीच 3 कि.मी. का यह क्षेत्र केंद्र सरकार का प्रशासनिक केंद्र है। यह क्षेत्र भारत के राष्ट्रीय आयोजनों के केंद्र नागरिक उद्यान और दिल्ली के निवासियों तथा पर्यटकों के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य है। इस लेख में राष्ट्रीय महत्व की इस स्थापत्य परियोजना की परिकल्पना और इस पर कार्य करते हुए प्राप्त ज़मीनी अनुभवों के बारे में बताया गया है।

हमारे राष्ट्र के इतिहास के एक हिस्से के रूप में, सेंट्रल विस्टा को ब्रिटिश आर्किटेक्ट एडविन लुटियंस और हर्बर्ट बेकर द्वारा ब्रिटिश राज के स्थान के रूप में डिज़ाइन किया गया था और 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र भारत द्वारा अपना लिया गया था। सेंट्रल विस्टा ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर हमारी विजय का प्रतीक है। भारतीय संविधान यहां लिखा गया था, हमने भारत की संसद के रूप में इंपीरियल काउंसिल हाउस को अपनाया, वायसराय हाउस को राष्ट्रपति भवन के रूप में अपनाया गया, इंडिया गेट एक राष्ट्रीय स्मारक बन गया, जुलूसों का गढ़ रहे लॉन सार्वजनिक उद्यान बन गए, और अपने निर्माण के समय भारत पर औपनिवेशिक शासन की शक्ति का प्रतीक रहे नॉर्थ तथा साउथ ब्लॉक भारत सरकार के कार्यालय बन गए। सेंट्रल विस्टा की समकालीन जीवंतता और इसका ऐतिहासिक महत्व, एक वास्तुकार के रूप में मेरे लिए इसे बहुत विशेष और रोमांचक परियोजना बनाता है। मैं इस अवसर पर

लेखक वर्तमान में सेंट्रल विस्टा पुनर्विकास परियोजना पर काम कर रहे हैं और सीईपीटी विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के अध्यक्ष और कार्यवाहक निदेशक हैं। एक वास्तुकार, शहरी डिज़ाइनर, शहरी योजनाकार और 30 से अधिक वर्षों से शिक्षाविद् के रूप में, उन्होंने यह पता लगाने के लिए पेशेवर और संस्थागत सीमाओं से आगे जाकर बढ़चढ़ कर काम किया है कि कैसे वास्तुकला, शहरी डिज़ाइन और शहरी नियोजन भारत के शहरों में रहने वाले लोगों के जीवन को समृद्ध कर सकते हैं। ईमेल: president@cept.ac.in

Scanned with OKEN Scanner

अपने काम, सामने आने वाली चुनौतियों और डिज़ाइन प्रक्रिया में उनसे निपटने के लिए अपनाई जाने वाली रणनीतियों के बारे में बात करना चाहता हूं।

ब्राउनफील्ड साइट पर कार्य करना

भारतीय शहरों में अधिकांश सार्वजनिक स्थानों की तरह, सेंट्रल विस्टा एक ब्राउनफील्ड साइट यानी पुनर्विकास परियोजना स्थल है। यह स्थल सक्रिय प्रशासनिक कार्यालयों के साथ सार्वजनिक स्थान के रूप में भी है। इसकी अपनी विशेष चुनौतियां हैं। एक ब्राउनफील्ड साइट में विविध प्रकार की आवश्यकताएं होती हैं। कर्त्तव्य पथ एक ऐतिहासिक स्थान होने के साथ-साथ एक नागरिक उद्यान और राष्ट्रीय आयोजनों का स्थान भी है। इसलिए, इसके इतिहास को संरक्षित करते हुए इसे कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए गुणवत्तापूर्ण सार्वजनिक सुविधाओं और तकनीकी बुनियादी ढांचे की भी आवश्यकता थी। इन आवश्यकताओं के मद्देनजर इसका प्रबंधन एक बड़ी डिज़ाइन चुनौती है। उदाहरण के लिए, कर्त्तव्य पथ पर सार्वजनिक सुविधा ब्लॉकों का निर्माण भूमिगत और पेड़ों के बीच किया गया ताकि सेंट्रल विस्टा के सौंदर्यशास्त्र में हस्तक्षेप न हो और पेड़ों को बचाया जा सके। इसी तरह, राष्ट्रीय आयोजनों के लिए तकनीकी सुविधाएं प्रदान करते हुए केंद्रीय सड़क के साथ ऐतिहासिक प्रकाश खंभों को भी बहाल किया जाना था। इसलिए, हमने उन्हें नई तकनीकी विशेषताओं के साथ फिर से तैयार किया और आवश्यक तकनीक प्रदान करते हुए उनके परंपरागत सौंदर्यशास्त्र को बनाए रखा। इसके अतिरिक्त, निर्माण के दौरान सेंट्रल विस्टा जैसे स्थलों पर काम होता रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, नॉर्थ और साउथ ब्लॉक में सबसे महत्वपूर्ण सरकारी मंत्रालय हैं और इन्हें राष्ट्रीय संग्रहालय में बदल दिया जाएगा। सरकारी काम में बाधा डाले बिना यह काम करने के लिए हमने रणनीतिक रूप से परियोजना को चरणबद्ध किया है। सामान्य केंद्रीय सचिवालय (सीसीएस) की इमारतों को पहले पूरा किया जाएगा, फिर

इसके इतिहास को संरक्षित करते हुए इसे कुशलतापूर्वक कार्य करने के लिए गुणवत्तापूर्ण सार्वजनिक सुविधाओं और तकनीकी बुनियादी ढांचे की भी आवश्यकता थी। इन आवश्यकताओं के मद्देनजर इसका प्रबंधन एक बड़ी डिज़ाइन चुनौती है।

मंत्रालयों को नॉर्थ और साउथ ब्लॉक से इन भवनों में स्थानांतरित किया जाएगा। फिर, नॉर्थ और साउथ ब्लॉक को संग्रहालय के अनुरूप बुनियादी ढांचे के साथ उन्नत किया जाएगा और फिर, अंत में, कलाकृतियों को ब्लॉकों में स्थानांतरित कर दिया जाएगा। स्टेकहोल्डर फीडबैक सेंट्रल विस्टा एक ऐसा स्थान है जिसमें गतिविधियों की एक विस्तृत शृंखला को समायोजित किया जाता है और इसलिए, विभिन्न हितधारकों को संलग्न किया जाता है। डिज़ाइन करते समय, अंतिम उपयोगकर्ता को, हमेशा वास्तुकार की प्रक्रिया के केंद्र में होना चाहिए। इसे केवल सक्रिय हितधारक जुड़ाव के माध्यम से ही किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कर्त्तव्य पथ को डिज़ाइन करते समय, हमने वहां आयोजित होने वाले राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए सेवाओं की व्यवस्था की। इन आयोजनों में सशस्त्र बलों, दूरदर्शन, संस्कृति मंत्रालय आदि की केंद्रीय भूमिका होती है। हमारा कार्यालय इन हितधारकों के साथ लगातार संपर्क में रहा, और हमने इनसे प्राप्त जानकारी के अनुसार एकीकृत भूमिगत सेवाओं और चैनलों को डिज़ाइन किया। हमने राष्ट्रपति के अंगरक्षक को फर्श की जांच करने के लिए कर्त्तव्य पथ के नमूना खंड पर घोड़ों की सवारी करने के लिए आमंत्रित भी किया। इसके आधार पर, हमने खंड के डिज़ाइन में बदलाव किया है। कर्त्तव्य पथ पर, हमने उस प्रतिक्रिया से भी सीखा जो हमें एवेन्यू के उद्घाटन के बाद मिली थी। हमने महसूस किया कि हमारे संकेतों में अधिक व्याखान की आवश्यकता है क्योंकि कुछ लोगों को वर्तमान - ग्राफिक प्रारूप में उन्हें समझने में मुश्किल हुई। हम इस मुद्दे को भी सुलझाने पर काम कर रहे हैं। इसी तरह, लॉन के कुछ हिस्सों में हमने देखा कि हमारी अपेक्षा से अधिक लोगों का आना-जाना है और इसके फलस्वरूप घास क्षतिग्रस्त हो रही है, इसलिए इन क्षेत्रों में और रास्ते बनाए जाएंगे। सांसदों के कार्यालयों में, जिन्हें लेजिस्लेटिव एन्क्लेव के हिस्से के रूप में डिज़ाइन किया गया है, हमने ऑफिस स्पेस के 1:1 स्केल मॉक-अप बनाए। इन रिक्त स्थान और फर्नीचर का अंतिम उपयोगकर्ताओं द्वारा परीक्षण किया गया और हमारी टीम ने उनकी प्रतिक्रिया को सावधानीपूर्वक दर्ज किया। नए संसद भवन के कक्षों के लिए, वहां काम करने वाले लोगों से बात करते हुए, हमें पता चला कि हॉल के बीचोंबीच- अध्यक्ष और सदस्यों के बीच की जगह, जहां सदन के महासचिव और उनके आशुलिपिकों की टीम बैठती है उसकी वजह से सदस्यों को सामने देखने में रुकावट आती है। सदन के

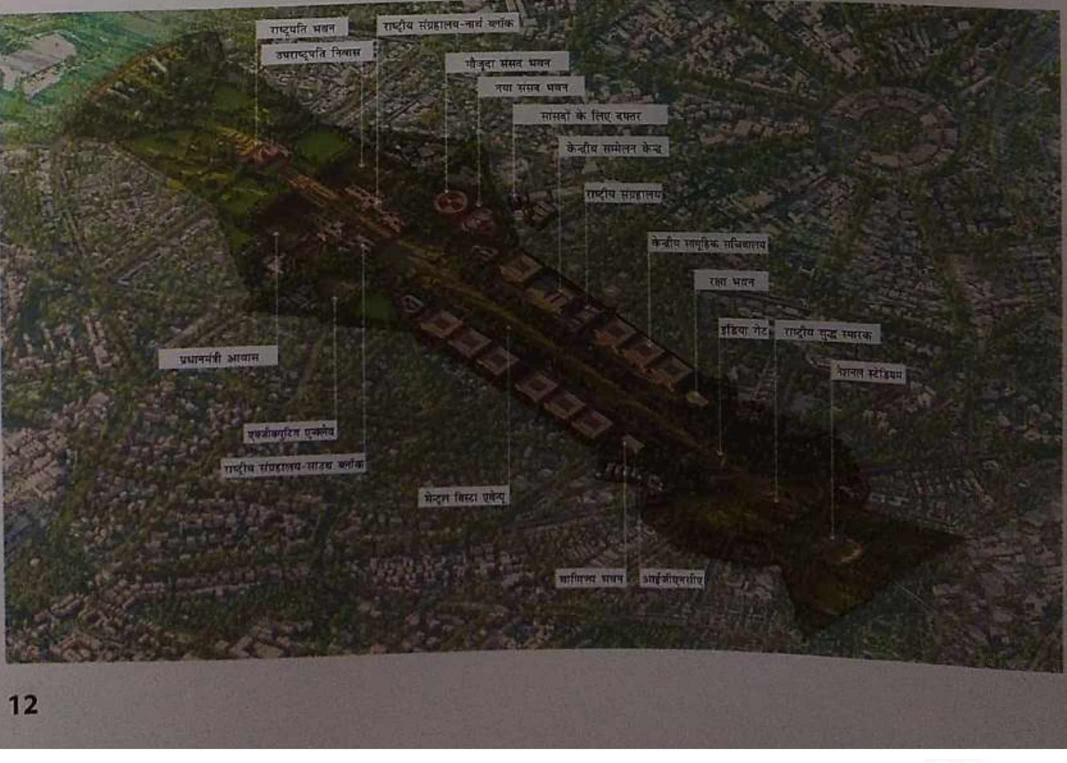

Scanned with OKEN Scanner

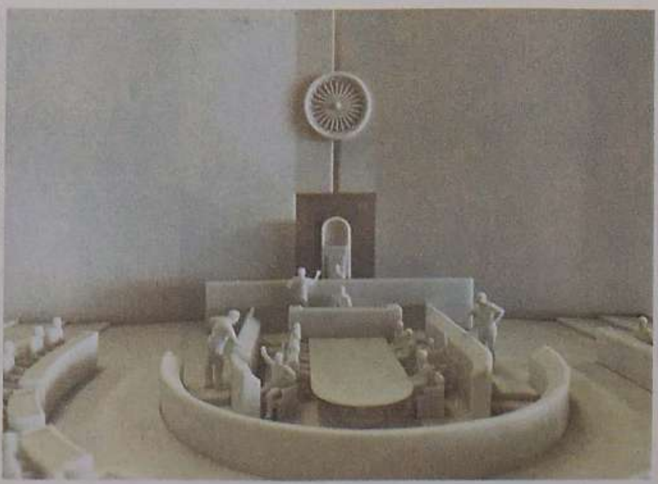

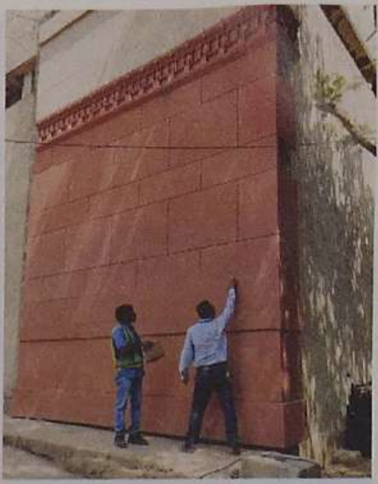

बीचोंबीच इस स्थान पर काफी भीड़ रहती है, क्योंकि यहां बैठने वाले आशुलिपिकों को हर 30 मिनट में बदला जाता है और दस्तावेजों को भी लगातार प्रसारित किया जाता है। नए संसद भवन को डिज़ाइन करते समय हम इस समस्या के प्रति सचेत थे और हमने अनुभाग का विकास और विश्लेषण करते समय कई विकल्प बनाने के लिए 3डी प्रिंटिंग तकनीक का इस्तेमाल किया।

विशेषज्ञों की सेवाएं

सेंट्रल विस्टा के पैमाने और जटिलता वाली कोई परियोजना तभी सफल हो सकती है जब पेशेवरों की एक बड़ी टीम कुशल सहयोग से उस पर काम करे। इसके साथ ही ऐसी परियोजना के लिए विशेषज्ञता भी जरूरी है। हालांकि सेंट्रल विस्टा के वास्तुकार नियमित रूप से स्ट्रक्चरल इंजीनियरों और इसी तरह के अन्य विशेषज्ञों के साथ काम करते हैं, लेकिन विभिन्न विषयों में विशिष्ट विशेषज्ञ ज्ञान बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। इसलिए, हम परियोजना पर साठ से अधिक सलाहकारों के साथ काम कर रहे हैं। हमारे पास राष्ट्रीय अभिलेखागार और अन्य भवनों पर काम करने के लिए विशेषज्ञ सेवाओं के वास्ते एक अभिलेखागार विशेषज्ञ भी है। कुशल पार्किंग डिज़ाइन करने के लिए हम एक पार्किंग विशेषज्ञ के साथ काम कर रहे हैं। लॉन और उनकी वनस्पतियों के लिए, हम एक बागवानी विशेषज्ञ और एक पेड़ सर्वेक्षक के साथ काम कर रहे हैं। हमारे पास पत्थर के काम का विशेषज्ञ सलाहकार भी है ताकि विवरण और क्लैडिंग के साथ न्याय सुनिश्चित किया जा सके। अनुशासनात्मक और तकनीकी विशेषज्ञों की इस तरह की विविध श्रेणी के साथ काम करते हुए, परियोजना के वास्तुकार के रूप में हमारी भूमिका, उनके विशेषज्ञ ज्ञान को हमारे डिज़ाइन में शामिल करना है। इनमें से कुछ विशेषज्ञों का एचसीपी के साथ दीर्घकालिक व्यावसायिक संबंध है और कुछ को विशेष रूप से सेंट्रल विस्टा परियोजना के लिए संलिप्त किया गया है।

लोगों को जोड़ना

सेंट्रल विस्टा राष्ट्रीय महत्व की परियोजना है। यह सरकार द्वारा चलाई जा रही एक सार्वजनिक परियोजना है। इसलिए, यह जरूरी है कि इस प्रकार की परियोजना पर व्यावसायिक चर्चा हो। मेरा मानना है कि एक वास्तुकार के रूप में, हमारी जिम्मेदारी है कि हम लोगों को सार्वजनिक परियोजनाओं को उसी प्रकार समझाएं जैसे हम अपने ग्राहकों को अपनी परियोजनाओं की व्याख्या करते हैं। इस उद्देश्य के साथ, हमें परियोजना प्रदान किए जाने के तुरंत बाद, मैंने बड़े पैमाने पर यात्राएं कीं – साथी वास्तुकारों, शिक्षाविदों, लैंडस्केप डिज़ाइनरों, इंजीनियरों आदि को प्रस्तुतियां दीं और उनकी राय मांगी। मैंने मीडिया के साथ भी बातचीत की और सम्मेलनों में चर्चा की ताकि यह समझा जा सके कि लोग परियोजना के बारे में क्या कह रहे हैं और उनके प्रश्न और चिंताएं क्या हैं। जब हम लगातार प्रेस और लोगों से बातचीत कर रहे थे, उनके प्रश्नों का उत्तर दे रहे थे और जानकारी का प्रसार कर रहे थे, हमें यह भी विश्वास था कि एक बार जब लोग स्वयं इस परियोजना को देखेंगे और हमारे द्वारा डिज़ाइन की गई सुविधाओं का उपयोग करेंगे, तो उनके अधिकांश प्रश्नों का समाधान हो जाएगा। कर्त्तव्य पथ के उद्घाटन के एक सप्ताह बाद, ठीक ऐसा ही हमने पाया। जब लोगों ने देखा कि हमने किस प्रकार स्थान हासिल किया है, तो सार्वजनिक स्थान पर अतिक्रमण और बगीचे के नष्ट होने की उनकी आशंका दूर हो गई। कर्त्तव्य पथ की सफलता और स्थान के बारे में लोगों की सकारात्मक स्वीकृति इस बात का प्रमाण है कि अगर हम लोगों को सही जानकारी और तथ्य देते हैं, और अगर हम अपनी परियोजनाओं को तर्क और सम्मान के साथ समझाते हैं, तो सार्वजनिक परियोजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर लोगों का समर्थन जुटाया जा सकता है।

कर्त्तव्य पथ की सफलता और स्थान के बारे में लोगों की सकारात्मक स्वीकृति इस बात का प्रमाण है कि अगर हम लोगों को सही जानकारी और तथ्य देते हैं, और अगर हम अपनी परियोजनाओं को तर्क और सम्मान के साथ समझाते हैं, तो सार्वजनिक परियोजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर लोगों का समर्थन जुटाया जा सकता है।

समय-सीमा के साथ काम करना

डिज़ाइन एक पुनरावृत्त प्रक्रिया है और एक वास्तुकार के रूप में, डिज़ाइन करने के लिए हम हमेशा और अधिक समय चाहते हैं। सेंट्रल विस्टा के मामले में, कभी-कभी, परियोजना के डिज़ाइन और समन्वय के संदर्भ में उसकी समय सीमा एक चुनौती रही है। समर्पित पेशेवरों की टीम और डिज़ाइन प्रबंधन की रणनीतियों ने हमारे लिए तेज़ गति से काम करना संभव बना दिया है। हमारे द्वारा अपनाई गई रणनीतियों में से एक डिज़ाइन प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को टालना और समग्र समयसीमा

Scanned with OKEN Scanner

क्रमिक तरीके से जमा करने की आवश्यकता होती है। कई एजेंसियों को एक साथ आवेदन जमा नहीं किया जा सकता है। काम के साथ तालमेल बिठाने के लिए, हम एक एजेंसी को आवेदन जमा करते हैं, और हम अपने कार्यालय में आगे भी डिज़ाइन पर काम करना जारी रखते हैं क्योंकि हमें मंजूरी का इंतजार है। एक बार सभी आवश्यक मंजूरी मिल जाने के बाद, हम साइट पर निर्माण के लिए चित्र जारी करते हैं। इन और ऐसी कई प्रबंधन रणनीतियों का उपयोग करते हुए, और उत्प्रेरित तथा सक्षम पेशेवरों की टीम के साथ, हम बहुत तेज गति से काम करने में सक्षम हुए हैं।

को कम करना था। एक वास्तुकार के कार्यालय में, प्रत्येक डिज़ाइन एक अवधारणा चरण से शुरू होता है। इसके बाद प्रस्तुति ड्रॉइंग, योजनाबद्ध ड्रॉइंग और अंततः निर्माण के लिए ड्रॉइंग जारी किए जाते हैं। लेकिन सेंट्रल विस्टा परियोजना पर काम करते हुए, हमने एक साथ कई चरणों पर काम किया- ठीक उसी तरह जैसे कि कोविड-19 वैक्सीन का उत्पादन विभिन्न चरणों के परीक्षणों को एक साथ कर रिकॉर्ड समय में किया गया था। इसके लिए बहुत अधिक समन्वय और डिज़ाइन प्रबंधन की आवश्यकता थी। सेंट्रल विस्टा जैसी परियोजना को भी किसी भी अन्य परियोजनाओं की तुलना में अधिक सरकारी एजेंसियों से मंजूरी की आवश्यकता होती है। इन एजेंसियों को स्वीकृति संबंधी आवेदन

निष्कर्ष

सेंट्रल विस्टा जैसी परियोजना किसी वास्तुकार के लिए बड़ी चुनौतियों के साथ आती है। इसके लिए उसे अपने सहज क्षेत्र (कम्फर्ट ज़ोन) से बाहर निकलने और समस्याओं का सामना करने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता होती है। इसके लिए हम समस्याओं को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं और समस्या-समाधान दृष्टिकोण अपनाते हुए उन्हें हल करने के उद्देश्य से व्यवहार्य और टिकाऊ डिज़ाइन तैयार करते हैं। विशेषीकृत ज्ञान, लोगों तथा हितधारकों के स्वस्थ तथा सक्रिय जुड़ाव और सक्षम पेशेवरों की टीम के माध्यम से, वास्तुकला परियोजनाओं को सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है। मुझे आशा है कि सेंट्रल विस्टा परियोजना एक अच्छे उदाहरण के रूप में इतिहास में दर्ज होगी।

(परियोजना पर सक्रिय डैशबोर्ड के लिए www.centralvista.gov.in पर जाएं।) ■

कबाड़ से जुगाड़

मेरठ नगर निगम ने शहर के चौराहों और पार्कों को अपनी टीम द्वारा चलाए 'कबाड़ से जुगाड़' अभियान के तहत सुदंर बनाने की पहल शुरू की है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' कार्यक्रम में इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इससे नगर पालिका के सभी टीम-सदस्यों का उत्साह बढ़ा है। जब सरकार ने सिंगल यूज़ प्लास्टिक पर रोक लगाई तो माना जा रहा था कि हमारे सैनिटेशन स्टोर में जो भी कबाड़ पड़ा है उसका शहर को सुंदर बनाने के काम में इस्तेमाल किया जाना चाहिए और बस इसी भावना के साथ 'कबाड़ से जुगाड़' कार्यक्रम की शुरुआत हो गई। स्टोर में पड़े पुराने टायर, ड्रम और प्लास्टिक का कचरा शहर के विभिन्न स्क्वायरों में विभिन्न आकारों के सजावटी सामान बनाने में इस्तेमाल किए गए। मेरठ नगर निगम को 'भारतीय स्वच्छता लीग' पुरस्कार के लिए चुना गया जो भारत सरकार की ओर से दिया जाता है। ऐसी योजना है कि जनसहयोग से जोड़कर सौंदर्यीकरण कार्यक्रम आगे बढ़ाया जाएगा ताकि मेरठ स्वच्छ और स्वस्थ शहर बन सके।

(सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा हर महीने प्रकाशित की जाने वाली पुस्तिका 'मन की बात' से लिए गए अंश) ■

'कबाड़ से जुगाड़' कार्यक्रम पर विशेष रिपोर्ट देखने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

Scanned with OKEN Scanner

कर्त्तव्य पथ

पुराना 'राजपथ' जहां सत्ता का प्रतीक था, वहीं कर्त्तव्य पथ सार्वजनिक स्वामित्व और सशक्तीकरण का बोध कराता है।

पिछले कुछ साल से राजपथ और सेंट्रल विस्टा स्थल के आसपास के इलाकों में आने वाले लोगों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी होने से वहां मौजूद आधारभूत ढांचे पर दबाव बढ़ गया था। साथ ही, इस इलाके में सार्वजनिक शौचालय, पीने के पानी, पार्किंग की जगह और जगह-जगह पर बेंच जैसी सुविधाओं की कमी थी। इसके अलावा, रास्तों के बारे में बताने वाले बोर्ड, पानी की सुविधाओं और व्यवस्थित पार्किंग का भी अभाव था। साथ ही, इस बात की भी ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि गणतंत्र दिवस और अन्य राष्ट्रीय अवसरों पर लोगों की आवाजाही कम से कम प्रभावित हो। इन बातों को ध्यान में रखते हुए यहां पुनर्निर्माण कार्य किया गया है। हालांकि, इस बात का ध्यान रखा गया है कि यहां की वास्तु कला के मूल स्वरूप में किसी तरह की छेड़छाड़ न हो।

- कर्त्तव्य पथ का काम मार्च 2021 में शुरू हुआ और इसका पहला चरण गणतंत्र दिवस के परेड के समय पूरा हुआ
- इस परियोजना के लिए आवंटित राशि 608 करोड़ रुपये थी और पहले चरण का खर्च 522 करोड़ रुपये रहा
- ग्रेनाइट से बने पथ की कुल लंबाई 16.5 किलोमीटर है
- इस जगह पर 300 सीसीटीवी कैमरे, पत्थर के 422 बेंच, पत्थर से बने कूड़ेदान वगैरह लगाए गए हैं
- सेवाओं के लिए जमीन के नीचे तकरीबन 165 किलोमीटर लंबी पाइपलाइन मौजूद है और 19 किलोमीटर लंबा नाला तैयार किया गया है
- मुख्य मार्ग को पूरी तरह से दुरुस्त करने के बाद भूभाग को पहले जैसा किया गया है
- पैदल चलने वालों के लिए इसे और अनुकूल बनाया गया है और ट्रैफिक के हिसाब से भी रास्ते को सुगम बनाने की कोशिश की गई है
- पैदल चलने वाले लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कुल 4 पदयात्री अंडरपास बनाए गए हैं- इसके तहत जनपथ और सी-हेक्साजन जंक्शन पर दो-दो अंडरपास बनाए गए हैं
- जमीन के नीचे सार्वजनिक सुविधाओं वाले 8 ब्लॉक बनाए

गए हैं और मौजूदा पेड़ों को ध्यान में रखते हुए 6 स्टॉल का भी प्रावधान किया गया है, ताकि नागरिकों और पर्यटकों को सुविधा हो

- पहले चरण में 580 कारों और 35 बसों के लिए पार्किंग का इंतज़ाम किया गया है
- इस क्षेत्र में किनारे पर मौजूद फुटपाथ पर पहले बजरी/मुर्रम का इस्तेमाल किया गया था, जहां अब ग्रेनाइट लगा दी गई है
- जलाशय के पार के इलाकों में पैदल पथ और 16 स्थायी पुल बनाए गए हैं, ताकि लोग इन इलाकों में भी जा सकें। अब तक लोगों के लिए इन इलाकों तक पहुंचना संभव नहीं था
- घास के मैदान को भी बेहतर बनाया गया है और जामुन के ज़्यादातर पेड़ों को सुरक्षित रखा गया है। साथ ही, वृक्षारोपण की रणनीति के तहत कुछ और पेड़ लगाए गए हैं
- तकरीबन 90 एकड़ में मौजूद घास के मैदानों को फिर से विकसित किया गया है
- इस जगह की वास्तु कला को ध्यान में रखते हुए पथ पर मौजूद ऐतिहासिक जंजीरों और बिजली के 79 खंबों को सुरक्षित रखते हुए 58 नए खंबे भी जोड़े गए हैं
- पेंट वाले मजबूत खूंटे के बजाय अब पत्थर वाले खूंटों का इस्तेमाल किया जा रहा है
- रिसाव को रोकने के लिए जलाशयों का नवीनीकरण किया गया है
- इसके अलावा, 60 नए वातकों और 26 नए फिल्टर टैंकों का भी इस्तेमाल किया जाएगा, ताकि जलाशयों में पानी साफ रहे।

Scanned with OKEN Scanner

कर्त्तव्य पथ में आपको बेहतर प्राकृतिक दृश्य, मैदान के साथ-साथ पैदल चलने वाला रास्ता, प्रचुर हरियाली, नाले की बेहतर व्यवस्था, नई सुविधाएं, बेहतर मार्ग सूचक बोर्ड और स्टॉल भी दिखेंगे। इसके अलावा, पैदल चलने वालों के लिए अंडरपास, पार्किंग की ज़्यादा जगह, नए प्रदर्शनी पैनल और रात में बेहतर रोशनी का इंतज़ाम भी देखने को मिलेगा। यहां पर पर्यावरण संबंधी उपायों का भी ध्यान रखा गया है, मसलन ठोस कचरे के प्रबंधन, बारिश के पानी के संचय, जल संरक्षण और कम बिजली की खपत वाले लाइटिंग वगैरह के लिए भी ज़रूरी इंतज़ाम किए गए हैं।

कर्त्तव्य पथ पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा भी स्थापित की गई है। ग्रेनाइट के पत्थरों से बनी यह मूर्ति स्वतंत्रता संग्राम में नेताजी के योगदान के लिए उन्हें श्रद्धांजलि है। यह नेताजी के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता का प्रतीक होगा। इस प्रतिमा के मुख्य मूर्तिकार अरुण योगीराज हैं। यह 28 फुट लंबी है और इसे ग्रेनाइट पत्थर के एक टुकड़े से तैयार किया गया है। इसका वजन 65 मीट्रिक टन है। यह मूर्ति कलाकारों की कड़ी मेहनत का परिणाम है और इसमें कुल 26,000 मानव घंटे लगे हैं। यह मूर्ति पूरी तरह से हाथ से बनाई गई है और इसमें पारंपरिक तकनीकों और आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल किया गया है। यह भारत की सबसे लंबी, आकर्षक और हाथ से बनी बेहतरीन मूर्तियों में से एक है। ग्रेनाइट पत्थर को लाने के लिए खास तौर पर 140 पहियों वाला 100 फुट लंबा ट्रक बनाया गया और इस ट्रक के ज़रिए इस पत्थर को तेलंगाना के खम्मम से नई दिल्ली लाया गया। ■

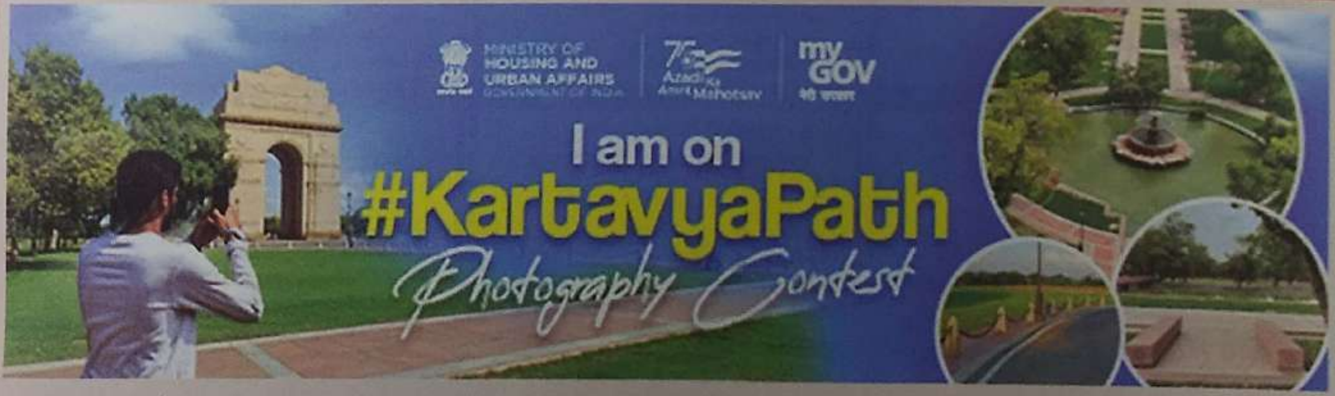

आवास और शहरी विकास मंत्रालय ने 'मैं कर्त्तव्य पथ पर हूं' फोटोग्राफी प्रतियोगिता शुरू की है। इसके तहत, कर्त्तव्य पथ पर आकर्षक तस्वीरें खींचकर शानदार इनाम जीतने का मौका है। इस प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले #KartavyaPath का इस्तेमाल कर इंस्टाग्राम, फेसबुक, ट्विटर, कू जैसे किसी भी सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म पर/MyGovIndia को टैग कर तस्वीरें साझा कर सकते हैं (using #KartavyaPath tagging @MyGovIndia)। आप भी इस प्रतियोगिता का हिस्सा बनें!

पुरस्कार

1. हर सप्ताह दो बेहतरीन तस्वीरों को 5,000-5,000 रुपये का पुरस्कार दिया जाता है।
2. हर महीने 'एक कर्त्तव्य पथ तस्वीर' को चुना जाएगा और विजेता को 10,000 का पुरस्कार दिया जाएगा।
   इसके लिए तस्वीर भेजने की आखिरी तारीख 31 जनवरी 2023 है। ■

स्रोत: पत्र सूचना कार्यालय और माइगव (MyGov)

Scanned with OKEN Scanner

ऐतिहासिक शहरों का विकास

रतीश नंदा

भारत के राष्ट्रीय स्मारक देश और इसके नागरिकों के लिये अनमोल और महत्वपूर्ण धरोहर हैं। इनके साथ हमारे भावनात्मक, धार्मिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, वास्तुशिल्पीय और पुरातात्विक मूल्य जुड़े हुए हैं। इन स्मारकों के संरक्षण के काम में पारंपरिक सामग्रियों, औजारों और भवन निर्माण तकनीकों का इस्तेमाल करने वाले कारीगरों की जरूरत होती है। लिहाजा, स्मारकों के संरक्षण की रोज़गार पैदा करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। सौभाग्य से, पश्चिम के विपरीत हम भारतीय अपनी शिल्प परंपराओं को मौजूदा समय में बचाने में कामयाब रहे हैं। बेहतर होगा कि संरक्षण के साथ ही आधुनिक सार्वजनिक इमारतों में भी शिल्प आधारित दृष्टिकोण पर जोर दिया जाये।

भारत को पारंपरिक वास्तु शिल्प में झलकने वाली अपनी हजारों वर्षों की निर्मित विरासत और जीवित संस्कृति पर गर्व है। इक्कीसवीं सदी में हमें इस विरासत के संरक्षण के लिये सही मायनों में भारतीय नज़रिये के बारे में सोचने की जरूरत है। यह नज़रिया ऐसा होना चाहिये जिसमें ऐतिहासिक धरोहरों का इस्तेमाल हमारे पुराने शहरों के निवासियों की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में सुधार के लिये किया जा सके।

संरक्षण और परिरक्षण के प्रयासों को सार्वजनिक नीतियों और विकास की योजनाओं से जोड़े जाने से हमारे अनेक ऐतिहासिक शहरों के निवासियों को लाभ होगा। आगा खान संस्कृति न्यास (एकेटीसी) ने इस नज़रिये को अपनाते हुए भारतीय पुरातत्व संरक्षण (एएसआई), केंद्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडब्ल्यूडी) और दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के सहयोग से हुमायूं का मक़बरा-निज़ामुद्दीन क्षेत्र में 15 वर्षीय शहरी नवीकरण परियोजना चलायी है। इस परियोजना में संरक्षण के प्रयासों में रोज़गार सृजन, इलाके के शिल्पों और कलाओं को प्रोत्साहन, अवसंरचना निर्माण, पर्यावरण का बचाव और सौंदर्यीकरण के जरिये स्थानीय क्षेत्र विकास को भी शामिल किया गया है।

एएसआई ने हमारी राष्ट्रीय विरासतों का दीर्घकालिक और संवहनीय संरक्षण सुनिश्चित करने के लिये कई कदम उठाये हैं। वह हमारी विरासत के महत्व के बारे में जागरुकता बढ़ाने के प्रयास कर रहा है। एएसआई संरक्षण के प्रयासों में सिविल सोसायटी की भागीदारी बढ़ाने के लिये भी प्रयासरत है। पिछले दो दशकों में ऐतिहासिक स्थलों के मूल चरित्र को बरकरार रखने के लिये उनके शहरी विन्यास के महत्व के प्रति जागरुकता बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप 1992 में दिशानिर्देश जारी किये गये और राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण (एनएमए) का गठन हुआ। एनएमए को हरेक राष्ट्रीय संरक्षित स्मारक के विन्यास में नयी इमारतों के लिये दिशानिर्देश तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी। इन दिशानिर्देशों को प्रतिबंधात्मक बनाये जाने के बजाय इनमें सुधार के उपायों और ऐसे प्रोत्साहनों पर जोर दिया जाना चाहिये जिनसे ऐतिहासिक शहरी परिवेश में सुधार होने के साथ ही स्थानीय निवासियों के जीवन की गुणवत्ता भी बढ़े।

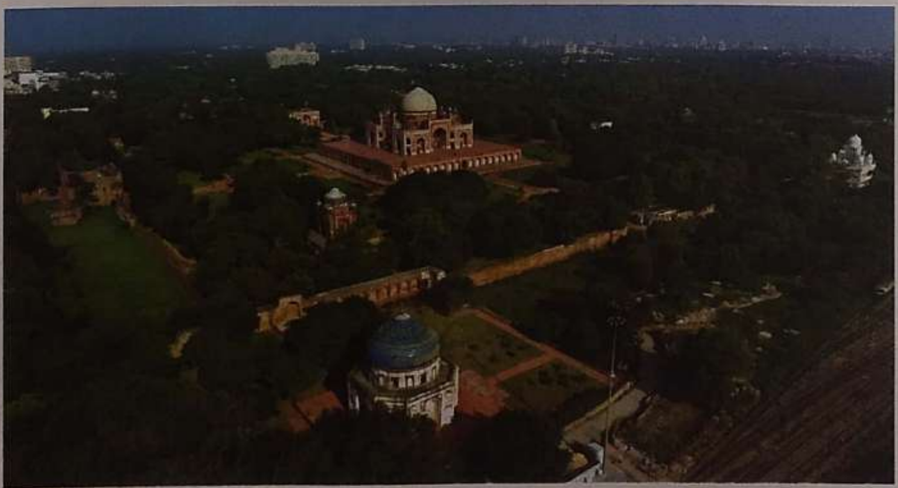

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण हमारे देश की विरासत का दीर्घकालिक सतत संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठा रहा है

लेखक संरक्षण वास्तुकार और आगा खान सांस्कृतिक न्यास के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं। ईमेल : ratish.nanda@akdn.org

Scanned with OKEN Scanner

90 एकड़ के सुंदर नर्सरी पार्क में 2021 में 7 लाख से अधिक आगंतुक आए। यहां स्थित छह यूनेस्को विश्व विरासत संरचनाओं, 30 एकड़ जंगल क्षेत्र, एम्फीथिएटर और बच्चों के खेलने के क्षेत्र जैसी सुविधाएं इस पार्क को दिल्ली के शीर्ष पर्यटक आकर्षणों में से एक बनाती है

भारत की आज़ादी की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर 1997 में विश्व विरासत स्थल हुमायूं का मकबरा के परिसर में बाग के उद्धार का काम शुरू किया गया। परियोजना 2003 में पूरी हुई तथा मुगल गार्डन और जल प्रवाह के उद्धार के बाद कुछेक महीनों में ही हुमायूं के मकबरे में आने वालों की संख्या में 1000 प्रतिशत का इजाफा हो गया। बाग के उद्धार की सफलता के बाद भारत सरकार ने एकेटीसी से भारत में और काम अपने हाथ में लेने के लिये कहा। इस बात पर सहमति बनी कि एकेटीसी बाग के उद्धार को आगे बढ़ाते हुए एक बड़ी शहरी नवीकरण परियोजना शुरू करेगा। इस परियोजना में अनेक स्मारकों का संरक्षण शामिल होगा। इसके साथ ही नजदीकी हजरत निज़ामुद्दीन बस्ती के निवासियों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिये कदम उठाये जायेंगे। परियोजना में पर्यावरण की बहाली के लिये 200 एकड़ से ज्यादा के डिस्ट्रिक्ट पार्क का सौंदर्यीकरण भी शामिल था।

पुरातत्व के लिहाज से हुमायूं के मकबरे को इससे ज्यादा प्रसिद्ध ताजमहल का पूर्ववर्ती माना जाता है। इस मकबरे को एक सदी से ज्यादा समय तक अनुपयुक्त संरक्षण कार्यों के कारण काफी नुकसान उठाना पड़ा। मकबरे की छत से 10 लाख किलो कंक्रीट हटाये जाने की आवश्यकता थी। इस कंक्रीट को 20वीं सदी में बारिश के पानी का रिसाव रोकने के लिये डाला गया था। इसी तरह दो लाख वर्ग फीट से ज्यादा सीमेंट प्लास्टर को हटा कर उसकी जगह पारंपरिक चूने का पलस्तर लगाये जाने की जरूरत थी। इमारत के मूल दरवाजों को 20वीं सदी में ही जलावन की लकड़ी बना लिया गया था। इसके अलावा मकबरे के अंदरूनी हिस्से की टाइलों को हटा कर पलस्तर कर दिया गया था।

भारत के अनेक अन्य स्मारकों का भी यही हाल था। अनुपयुक्त आधुनिक सामग्री से की गयी मरम्मत से मूल डिज़ाइन नष्ट होने के साथ ही उनके क्षय की प्रक्रिया भी तेज हो गयी। एएसआई की सहमति से एकेटीसी ने हुमायूं के मकबरे के लिये जो संरक्षण योजना तैयार की उसके तहत पहले की गयी अनुपयुक्त मरम्मत को हटाया जाना था। उसकी जगह पारंपरिक सामग्रियों और निर्माण तकनीकों तथा कुशल कारीगरों के जरिये प्रामाणिक मरम्मत की जानी थी।

एएसआई ने हमारी राष्ट्रीय विरासतों का दीर्घकालिक और संवहनीय संरक्षण सुनिश्चित करने के लिये कई कदम उठाये हैं। वह हमारी विरासत के महत्व के बारे में जागरुकता बढ़ाने के प्रयास कर रहा है। एएसआई संरक्षण के प्रयासों में सिविल सोसायटी की भागीदारी बढ़ाने के लिये भी प्रयासरत है।

हमारे पूर्वजों ने पत्थर, मिट्टी, बांस, लकड़ी और ईंट जैसी पारंपरिक निर्माण सामग्रियों के उपयोग से शानदार इमारतें बनायी हैं। इनमें अद्‌भुत शहरों में छोटे मकानों से लेकर भव्य महल, मठ, मंदिर, मकबरे और स्तूप शामिल हैं। सिर्फ कुछेक दशक पहले की इमारतों की भारतीय शहरों में वर्तमान में कुकुरमुत्ते की तरह उग रहे भवनों से तुलना कर यह समझना आसान नहीं है कि हमने डिज़ाइन और शिल्प की अपनी क्षमताओं को सीमेंट, इस्पात और शीशा जैसी सामग्रियों के आसानी से उपलब्ध होने के कुछ वर्षों के अंदर ही कैसे गंवा दिया। पारंपरिक छोड़ सस्ते आधुनिक को अपनाने के क्रम में हम उन वास्तु कौशलों से हाथ धो बैठे जिनमें लाखों कार्य दिवस का रोज़गार पैदा करने की क्षमता थी। ये वास्तु कौशल यह भी सुनिश्चित करते थे कि हमारे शहरों की पहचान अनूठी और जीवन की गुणवत्ता ऊंची हो।

संरक्षण के काम में पारंपरिक सामग्रियों, औजारों और भवन निर्माण तकनीकों का इस्तेमाल करने वाले कारीगरों की जरूरत होती है। लिहाजा, रोज़गार पैदा करने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। सौभाग्य से, पश्चिम के विपरीत हम भारतीय अपनी शिल्प परंपराओं को मौजूदा समय में बचाने में कामयाब रहे हैं। बेहतर होगा कि हम संरक्षण के साथ ही आधुनिक सार्वजनिक इमारतों में भी शिल्प

Scanned with OKEN Scanner

आधारित दृष्टिकोण पर जोर दें। संगतराश, पलस्तरकार, राजमिस्त्री, बढ़ई और ईंट बनाने वाले जैसे कारीगर अपने पूर्वजों के काम की नकल करने में काफी गर्व महसूस करते हैं। भवन संरक्षण में उनकी अग्रणी भूमिका से मूल निर्माताओं की डिज़ाइन का सम्मान होगा। इससे आगंतुकों में हमारी निर्मित विरासत के महत्व की समझ और दिलचस्पी बरकरार रहेगी। इसके साथ ही शिल्पकार एक बार फिर से संरक्षण के काम में हितधारक बनेंगे। वे अपनी उस अगली पीढ़ी को पारंपरिक कौशलों का प्रशिक्षण देना जारी रखेंगे जो बड़ी संख्या में अन्य उद्यमों की ओर पलायन कर रही है।

भारत के राष्ट्रीय स्मारक देश और इसके नागरिकों के लिये अनमोल और महत्वपूर्ण धरोहर हैं। इनके साथ हमारे भावनात्मक, धार्मिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, वास्तुशिल्पीय और पुरातात्विक मूल्य जुड़े हुए हैं। लेकिन शहरीकरण के दबाव से इन धरोहरों पर खतरा मंडरा रहा है। संरक्षण और विकास के लक्ष्यों को हासिल करने के लिये सरकार की विभिन्न एजेंसियों को शैक्षिक संस्थानों, सिविल सोसायटी और स्थानीय समुदायों को भागीदार बनाना चाहिये। इस तरह के प्रयासों में संसाधनों के किसी भी निवेश से कई फायदे मिलने के अलावा सरकार के अनेक लक्ष्य भी पूरे होते हैं।

निज़ामुद्दीन शहरी नवीकरण की सफलता ने समुदाय आधारित संरक्षण का एक आदर्श दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। घनी आबादी वाली हजरत निज़ामुद्दीन बस्ती में अनेक संरक्षित इमारतों के संरक्षण के अलावा शिक्षा, स्वास्थ्यसेवाएं और स्वच्छता मुहैया कराने के कदम उठाये गये हैं। स्थानीय युवाओं और महिलाओं को आर्थिक अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उनके लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी है। इलाके के पार्कों का सौंदर्यीकरण और गलियों में सुधार किया गया है। इसके अलावा सूफीवाद और कव्वाली के इर्दगिर्द केंद्रित 700 साल पुरानी संस्कृति को पुनर्जीवित करने के प्रयासों के तहत सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिये स्थल तैयार किये गये हैं।

ऐतिहासिक शहरों में हमारे अनेक स्मारक घनी आबादी के बीच में हैं। घनी बस्तियों में इन इमारतों के आसपास रहने वाले लोग अक्सर गरीब और बुनियादी शहरी अवसंरचना से वंचित होते हैं। निज़ामुद्दीन शहरी नवीकरण की सफलता ने समुदाय आधारित संरक्षण का एक आदर्श दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। घनी आबादी वाली हज़रत निज़ामुद्दीन बस्ती में अनेक संरक्षित इमारतों के संरक्षण के अलावा शिक्षा, स्वास्थ्यसेवाएं और स्वच्छता मुहैया कराने के कदम उठाये गये हैं। स्थानीय युवाओं और महिलाओं को आर्थिक अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से उनके लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी है। इलाके के पार्कों का सौंदर्यीकरण और गलियों में सुधार किया गया है। इसके अलावा सूफीवाद और कव्वाली के इर्दगिर्द केंद्रित 700 साल पुरानी संस्कृति को पुनर्जीवित करने के प्रयासों के तहत सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिये स्थल तैयार किये गये हैं। उम्मीद है कि हज़रत निज़ामुद्दीन बस्ती के निवासी अपने इलाके की निर्मित विरासत के संरक्षण में अब केंद्रीय भूमिका निभायेंगे। भारत में इस तरह के अन्य ऐतिहासिक शहरी क्षेत्रों में विकास के लिये संरक्षण और संस्कृति को औजार की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है।

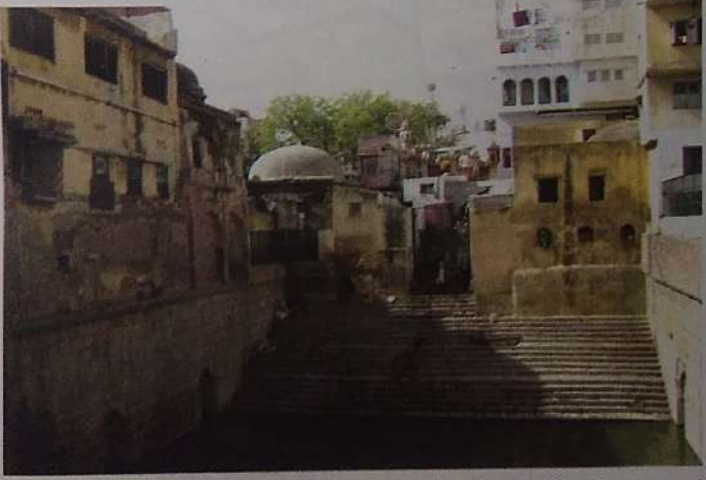

14वीं शताब्दी के निज़ामुद्दीन बावली का दृश्य, जो चारों ओर ऐतिहासिक स्मारकों के बीच स्थित है। जुलाई 2008 में इसके ढहने के बाद यहाँ बड़ा शहरी संरक्षण कार्यक्रम चलाया गया था, जिसके तहत इस संरचना के संरक्षण के अलावा परिसर में 10 से अधिक अन्य स्मारक का पुनरुद्धार किया गया। शताब्दियों बाद पहली बार इसका पानी साफ किया गया, और बस्ती के युवाओं को क्षेत्र में हेरिटेज वॉक संचालित करने के लिए प्रशिक्षण दिया गया।

संरक्षण आधारित विकास के निज़ामुद्दीन मॉडल को दोहराने के लिये सरकारी और निजी क्षेत्र के बीच भागीदारी महत्वपूर्ण है। इसके लिये गैरसरकारी संगठनों, निवासी कल्याण संघों, अनुदान देने वाली संस्थाओं, कॉरपोरेट क्षेत्र तथा नगर पालिकाओं और निगमों को दीर्घकालिक दृष्टि के साथ एकजुट होना होगा। वैश्विक उदाहरण बनने वाली यह पहल इसलिये कामयाब हो सकी कि इसकी सफलता के लिये एक बहुविषयक टीम ने संरक्षित और अच्छे रखरखाव वाली विरासतों के साथ ही निवासियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिये अनुकूलित, प्रासंगिक और स्थानीय समाधान तैयार किये।

कई लोकप्रिय स्थलों पर मौजूदा इमारतों के अंदर ही या संवेदनशीलता से डिज़ाइन किये गये नये भवनों में संग्रहालय या विवेचना केंद्र खोलने की जरूरत महसूस की जा रही है। आगंतुकों के अनुभव की समृद्धि और नयी पीढ़ी को प्रमुख स्थलों और स्मारक समूहों की ओर आकृष्ट करने के मकसद से नयी मीडिया के इस्तेमाल से आधुनिक डिस्प्ले लगाने की योजना बनायी गयी है। विश्व भर के उदाहरणों से जाहिर है कि महत्वपूर्ण आधुनिक स्थापत्य से विरासत स्थलों की अर्थव्यवस्था मजबूत होने के साथ ही इनमें आगंतुकों की दिलचस्पी पैदा होती है। एकेटीसी मौजूदा समय में हुमायूं के मकबरे और हैदराबाद के गोलकोंडा में कुतुबशाही मकबरे में संग्रहालयों का निर्माण कर रहा है। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने इन दोनों परियोजनाओं के लिये धन मुहैया कराया है।

संरक्षण और विकास को साथ-साथ चलना चाहिये। लेकिन ऐसे किसी भी विकास के संवहनीय और दीर्घकालिक होने के लिये संरक्षण को सबसे ऊपर रखे जाने की जरूरत है। ■

Scanned with OKEN Scanner

तंजावुर का 'बड़ा मंदिर' - एक अद्‌भुत संरचना

मधुसूदनन कलाईचेलवन

तंजावुर (तंजौर) का बड़ा मंदिर चोल युग की स्थापत्य कला की भव्यता के बारे में बहुत कुछ बयां करता है। भगवान शिव जी के इस मंदिर में विशाल शिव लिंग हैं। एक राजसी नंदी (बैल), मंदिर पर पहरा दे रहा है। एक ही पत्थर से तराशा गया यह भारत में दूसरा सबसे बड़ा नंदी है। यह मंदिर यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में भी शामिल है। अपनी भव्यता और विशालता के कारण ही इसे बृहदेश्वर या बड़ा मंदिर कहा जाता है।

तंजावुर (तंजौर) का प्राचीन नगर कावेरी डेल्टा (नदीमुख भूमि) की सांस्कृतिक राजधानी है। यह नगर और इसकी सांस्कृतिक विरासत 3 सशक्त साम्राज्यों - चोल, विजयनगर और मराठा राजाओं की देन है जिन्होंने तमिलनाडु के इस भाग पर एक सहस्राब्दी से अधिक समय तक शासन किया। इन तीनों में से चोलों को इसे संभावित राजनीतिक राजधानी के रूप में ढालने का श्रेय जाता है जब 9वीं शताब्दी के आरंभ में विजयला चोलों ने इसे अपने अधीन कर लिया था। तब से उनके उत्तराधिकारी हर संभव दिशा में सम्राट की सीमा का विस्तार करने में जुटे रहे। राजराजा प्रथम अपने अनेक सैन्य अभियानों के दौरान पल्लवों और अन्य पूर्ववर्तियों के संरक्षण में पनपने वाली उत्कृष्ट मंदिर वास्तुकला से प्रेरित हुए होंगे। शैव संप्रदाय के अनुयायी उनके पूर्वजों ने भी, जिन्होंने शिव के कई लोकप्रिय मंदिरों के विकास में योगदान दिया, उन्हें प्रेरित किया होगा। इसलिए राजराजा प्रथम के लिए यह स्वाभाविक ही है कि उन्होंने शिव के प्रति अपनी सबसे विराट विनम्र भेंट के रूप में इस विशाल निर्माण कार्य को अपने हाथ में लिया।

मंदिर अभिन्यास और योजना:

मंदिर परिसर पूर्व पश्चिम में लगभग 244 मीटर और उत्तर-दक्षिण में 122 मीटर तक फैला है और शिवगंगई छोटे क़िले के भीतर स्थित है। यह अतिरिक्त क़िलाबंदी कार्य 17 वीं शताब्दी के आसपास सेवाप्पानायक द्वारा नवीनीकरण के दौरान किया गया था। इस क़िले के चारों ओर एक खाई भी है जिसे पार करके मंदिर परिसर में प्रवेश किया जाता है। मराठा काल के दौरान निर्मित एक अति अलंकृत मेहराबदार प्रवेश द्वार, जिस पर विभिन्न देवी-देवताओं की प्लास्टर छवियां उत्कीर्ण हैं, आपका स्वागत करता है।

जैसे ही आप इस प्रवेश द्वार से भीतर प्रवेश करते हैं आपका स्वागत एक पारंपरिक राजराजा काल गोपुरम करता है जिसका नाम केरलंतकन तिरुवासल है जो 29.25 मीटर लम्बा और 17.4 मीटर चौड़ा है। इस पांच मंज़िले गोपुरम के दोनों ओर एक कोष्ठकीय गलियारा है। यहां से साठ मीटर की दूरी पर दूसरा गोपुरम है जिसे राजराजन तिरुवासल कहा जाता है। इस गोपुरम के पूर्वी भाग में विशाल एकाश्मक द्वारपालक या द्वार संरक्षक हैं। इसके अलावा इस गोपुरम के शिला आधार पर नक्काशे हुए पैनल हैं जिन पर पुराणों के प्रसंगों को दर्शाया गया है। इस गोपुरम में प्रवेश करने पर आगंतुक को श्री विमानम और देवालयों के मनभावन सौंदर्य से परिपूर्ण भव्य चित्रावली दृष्टिगोचर होती है। परिसर की दीवार की परिधि के चारों ओर बहुउद्देशीय स्थान के रूप में उपयोग करने के लिए दुमंजिले पृथक कक्षों का निर्माण किया गया है। इन कक्षों के बीच अष्टदिकपालक (आठ दिशाओं की रक्षा करने वाले देवता), गणेश और मंदिर यागसलाई के लिए देवालय बनाए गए हैं।

लेखक एक वास्तुकार हैं जो मंदिर वास्तुकला के विशेषज्ञ हैं और केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा मंदिर संरक्षण पर गठित कई समितियों में हैं।
ईमेल : madhu.kalai0324@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

दक्षिण-पश्चिम छोर पर गणेश का मंदिर है जिसे साराभोजी द्वितीय के समय में निर्मित किया गया था। राजराजा के शासनकाल में निर्मित मंदिर को जिसका परिवारा- अलयट्टू पिल्लैयार के नाम से उल्लेख शिलालेख में किया गया है तहस नहस कर दिया गया था इसलिए मराठा राजा ने एक नई संरचना का निर्माण किया। इस मंदिर का दृष्टिगत रूप से संतुलन 17वीं शताब्दी के दौरान उत्तर पश्चिम छोर पर निर्मित सुब्रह्मण्य के मंदिर से होता है। यह एक अत्यंत अलंकृत मूर्तिकला दीर्घा है जिसमें मुरुगन या सुब्रह्मण्य को उनकी पत्नियों वल्ली और देवसेना के साथ उत्कीर्ण किया गया है। चौखट के चारों ओर बने स्तंभ, भित्ति स्तंभ और कुडु नायककालीन कारीगर के बेहतरीन शिल्प कौशल की मिसाल हैं। इस मंदिर के द्वारपाल बहुत ही चमकदार ग्रेनाइट पत्थर से तराशे गए हैं और प्रक्षालन जल को इकट्ठा करने के लिए स्थापित पत्थर का टब अपनी कारीगरी के लिए उल्लेखनीय हैं। इस मंदिर के सामने बने खम्बेदार कक्ष में मराठा राजशाही के सदस्यों के चित्र हैं।

गर्भगृह के उत्तर में चंडीकेश्वर को समर्पित चोल काल का एक परिष्कृत मंदिर है। अग्र भाग में बने एक कक्ष एक अर्ध मंडप और एक विस्तृत विमान के साथ यह चंडीकेश्वर का बेहतरीन ढंग से परिकल्पित मंदिर है जो आधिकारिक रूप से शिव मंदिर का मुख्य लेखाकार है। दिलचस्प बात यह है कि मंदिर को दिए गए दान और मंदिर में विभिन्न गतिविधियों के लिए बनायी गयी अक्षयनिधि को स्वयं राजा द्वारा विस्तृत रूप से अनेक शिलालेखों की श्रृंखला के रूप में प्रलेखित किया गया है। इस मंदिर के सामने की दीवार पर पहला शिलालेख शुरू होता है।

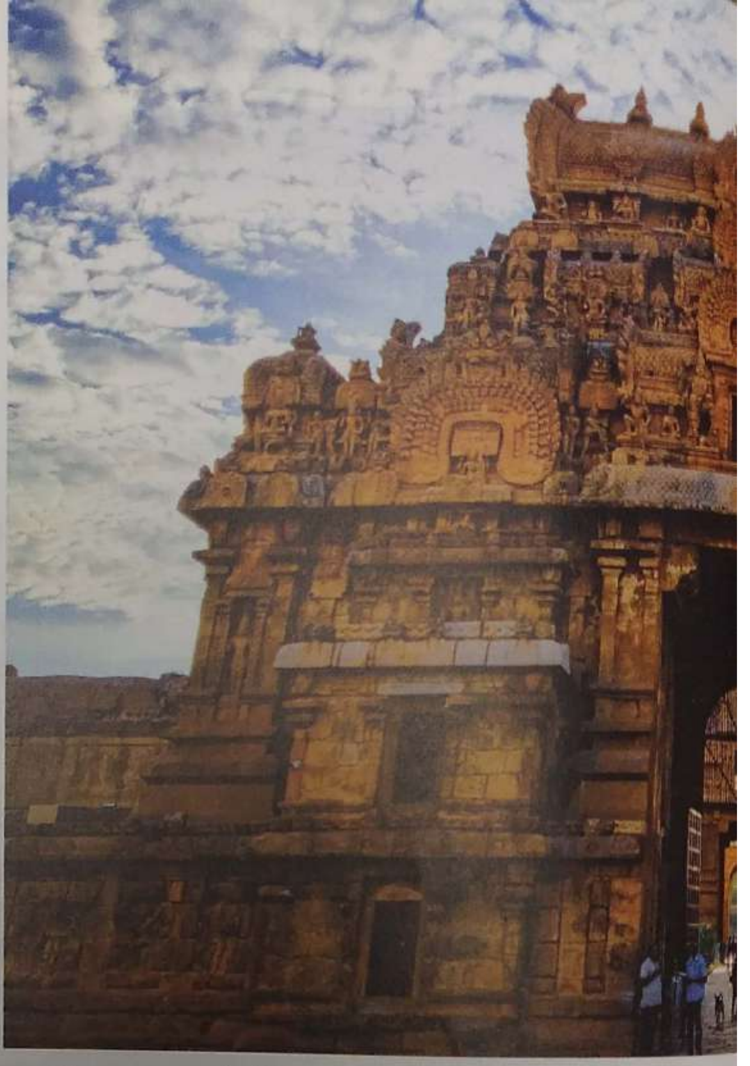

देवी पार्वती का मंदिर मुख्य परिसर के उत्तर की ओर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा बृहन्नायकी, पेरियानायकियोर उलागममुजुधुदैयाल के रूप में पूजनीय बृहदेश्वर की पत्नी के रूप में देवी का मंदिर पांड्या राजाओं द्वारा 13वीं शताब्दी में बनाया गया था। कम उठे हुए चबूतरे और दहलीज़ पर एकमंजिला विमान अग्र भाग में बने मंडप के साथ बाद में बढ़ा दिया गया था। इस मंदिर की छत और दीवारों पर मराठा काल के दौरान की गई चित्रकारी अंकित है।

श्री विमानम:

श्री के ए नीलकांत शास्त्री कहते हैं, "यह मंदिर जो दक्षिण भारतीय इतिहास के एक उत्कृष्ट काल का बेहतरीन स्मारक है और तमिल वास्तुकला की सबसे मनोहर बानगी है अपने विलक्षण अनुपात और विन्यास की सादगी के लिए उल्लेखनीय है।" यह तब समझ आता है जब आगंतुक श्री विमान के सामने विनयपूर्वक खड़ा होता है और एक क्षण के लिए भक्ति की शक्ति के बारे में सोचता है। इस महान उपलब्धि को प्राप्त करने के लिए राजराजा ने कितने पर्वतों का उपयोग किया होगा हमें एक भावनात्मक ज्वार से ओत प्रोत कर देता है।

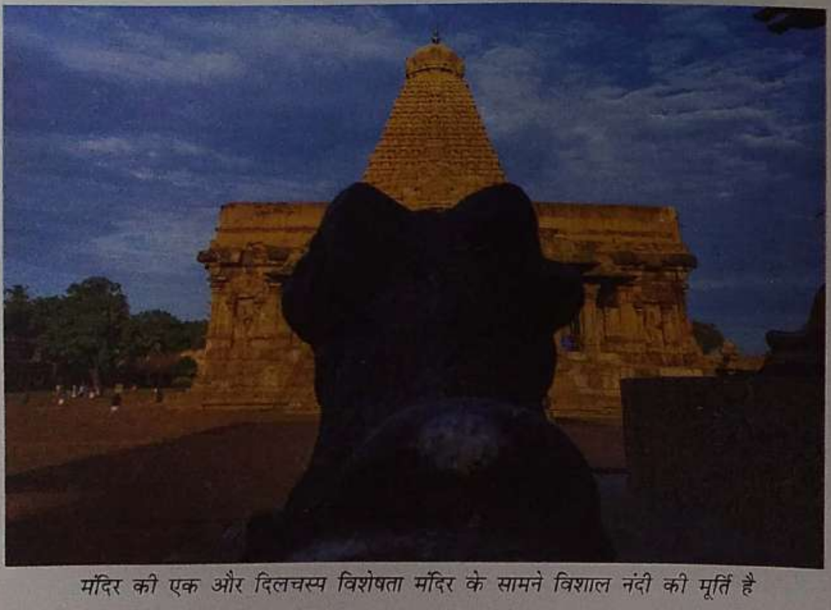

मंदिर की एक और दिलचस्प विशेषता मंदिर के सामने विशाल नंदी की मूर्ति है

विमान 29 मीटर के वर्गाकार आधार पर स्थित है। विमान की सिलसिलेवार मंजिलों का अनुपात संरचना के आकर्षक स्वरूप का कारण है। 13 मंजिला और 66 मीटर लंबा पिरामिड रूपी विमान समानांतर परतों के रूप में उपयुक्त रूपांकनों, बनावट की विशेषताओं और विभिन्न देवी-देवताओं की प्रतिमाओं से अलंकृत है। इसका शिखर गोलाकार गुम्बद है जिस पर 12 फुट ऊंचा सोना मढ़ा कलश विराजमान है। एक आम धारणा है कि शीर्ष पर गोलाकार पत्थर एक एकाश्म है जिसका वजन 88 टन है और जिसे दूर बने रैंप द्वारा ऊपर ले जाया गया था। हालांकि तथ्य यह है कि यह एक पत्थर नहीं है बल्कि कई टुकड़ों को विशेष आकार में ढालने के लिए व्यवस्थित और प्लास्टर किया गया है। पुरालेख के साक्ष्यों के अनुसार राजराजा प्रथम ने अपने पच्चीसवें शासकीय वर्ष के दो सौ पचहत्तरवें दिन अर्थात् 1009-10 ईसवी में

Scanned with OKEN Scanner

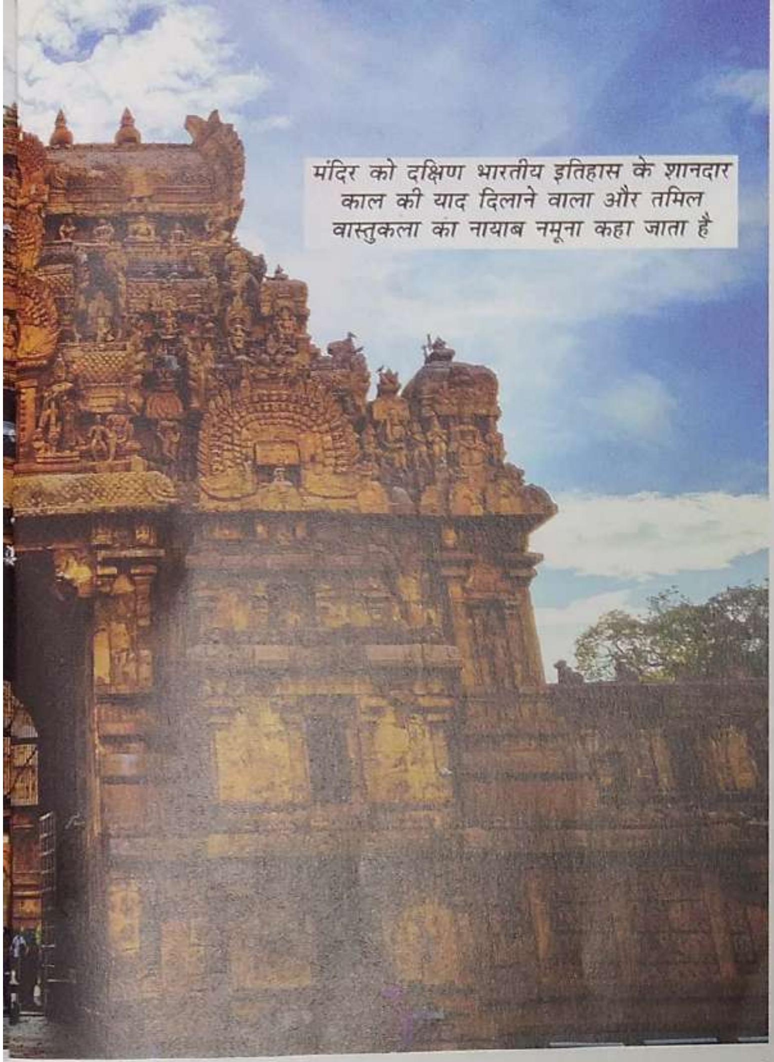

मंदिर को दक्षिण भारतीय इतिहास के शानदार काल की याद दिलाने वाला और तमिल वास्तुकला का नायाब नमूना कहा जाता है

विमानम पर जड़ने के लिए सोना मढ़ा कलश प्रदान किया था।

आगमों के अनुसार गर्भगृह के शीर्ष पर स्थित विमानम को सुखमलिंग का प्रतीक माना जाता है। यह वास्तव में एक धार्मिक प्रतीक है जिसे स्थापना के दौरान आह्वानकारी अनुष्ठानों की आवश्यकता होती है। इसे पवित्र पर्वत के रूप में माना जाता है और इसलिए, राजराजा इस विमानम को दक्षिण मेरु के रूप में वर्णित करते हैं जो दक्षिण का परम पूजनीय मेरु पर्वत है। इसलिए पूर्वी अग्रभाग पर कैलाश की स्थलाकृति को एक पत्थर पर उत्कीर्ण किया गया है जिसे कैलाश के दैनिक दृश्य से अलंकृत किया गया है जिसमें देवी, गणेश, मुरुगा, नंदी, ऋषियों और अन्य दिव्यजन दर्शाये गए हैं जो शिव के अलौकिक परिवार के सदस्य हैं।

इंजीनियरिंग की अद्‌भुत मिसाल :

दुमंजिला गर्भगृह अपने शीर्ष पर विमान के साथ वास्तव में एक अद्‌भुत निर्माण रचना है। निर्माण सामग्री का स्रोत, उन्हें किसको ले जाया गया, नींव का प्रकार और जोड़ने वाली सामग्री की उत्कृष्टता जैसे बुनियादी सवालों के अलावा इस डील डौल के भवन के निर्माण के लिए प्रेरणा का स्रोत अभी भी एक अनसुलझा रहस्य है। संरचनात्मक भार सहयोजन (स्ट्रक्चरल लोड शेयरिंग) की बहुत ही शानदार ढंग से योजना तैयार की गयी है। पिरामिड में ढलान लाने के लिए सिलसिलेवार परतों को कुछ इंच अंदर धकेला गया और इस प्रक्रिया से एक सौम्य ढलान तैयार हुई। इस पिरामिड के ऊपर स्थापित शिखर उन सभी को अपनी जगह जमाये रखने के लिए प्रतिभार (काउंटर वेट) के रूप में कार्य करता है। गर्भगृह से जब हम ऊपर देखते हैं तो खोखला विमानम दन्तुरित(इंडेंटेड) ढलान की सुरम्यता के साथ मनोहारी रूप से ऊपर की ओर बढ़ता दिखाई देता है।

गर्भगृहः

बृहदेश्वर का गर्भगृह एक विशाल चौकोर कक्ष है जिसकी भुजाएं 7.90 मीटर की हैं। पूर्वी और पश्चिमी दीवारों पर 2 शहतीर (बीम) लगाए गए हैं और कोनों में 4 विकर्ण बीम (शहतीर) लगाए गए हैं। यह स्पष्ट है कि गर्भगृह के निर्माण से पहले विशाल शिवलिंगम स्थापित किया गया होगा। गर्भगृह एक दोहरी दीवार वाली संरचना है जिसमें कक्ष के चारों ओर लगभग 2 मीटर चौड़ा स्थान है। पूर्वी भाग में मुख्य मंदिर का भव्य प्रवेशद्वार है। इस संकरे परिक्रमा पथ में खुलने वाले 2 छोटे द्वार हैं जिन्हें संधारराइ कहा जाता है। इस गलियारे में दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर मुख करके तीन देवों को स्थापित किया गया है। इन देवों के अलावा राजराजा के समय में बनाये गए अमूल्य भित्तिचित्रों की खोज 20वीं शताब्दी की शुरुआत में हुई। ऐसा ही स्थान विमानम की पहली मंजिल में भी है। वहां परिधि के चारों ओर भरतनाट्यकरणों यानी शिव की नृत्य मुद्राओं को दर्शाने वाले नक्काशे शिलापट्ट स्थापित किए गए हैं। यह श्रृंखला अधूरी है क्योंकि यहां पारंपरिक नृत्य नियमावली में वर्णित 108 मुद्राओं में से केवल 81 दर्शायी गयी हैं।

लगभग 1.6 मीटर व्यास का लिंगाबनम 5.25 मीटर व्यास के वृत्ताकार पीठिका में स्थित है। लिंगम के ऊपर की दूसरी मंजिल खाली है और विमानम की पूरी ऊंचाई तक केवल खोखला स्थान है। इस कोष्ठ को जानबूझकर शिव के अरूप या निराकार रूप को दर्शाने के लिए बनाया गया है। इसे पराकाशा या व्योम स्थान के रूप में भी देखा जाता है जहां शिव अपना आनंदतांडव करते हैं।

भव्य स्थापत्यः

पूर्व की ओर से मंडपमों की एक श्रृंखला गर्भगृह की ओर बढ़ती है। मुख मंडपम बाद में जोड़ा गया है और अब यह आगंतुकों के लिए पोर्टिको का काम करता है। इसके बाद एक भव्य महा मंडपम है, जो लंबे स्तंभों की पंक्तियों के साथ अति सुन्दर ढंग से निर्मित विविक्त कक्ष है। इस कक्ष से गुजरना अपने आप में एक सुखद अनुभव है। इसके

मंदिर के चारों ओर भगवान शिव जी के भरतनाट्यकरणों या भंगिमाओं को दर्शाने वाली मूर्तियाँ स्थापित की गई हैं

Scanned with OKEN Scanner

यह भव्य मंदिर एक सहस्राब्दी से भी पहले यहाँ के लोगों द्वारा हासिल किए गए सौंदर्यशास्त्र और योजना को दर्शाता है

बाद हम अर्ध मंडप में प्रवेश करते हैं एक अपेक्षाकृत छोटा कक्ष जिसमें फिर से ऊंचे स्तंभ हैं। इस मंडपम से पहली मंजिल तक पहुंचा जाता है। अंतराला तक उत्तर और दक्षिण की ओर बनी सीढ़ियों से पहुंचा जा सकता है। यह वह जगह है जहां श्रद्धालु श्री राजराजेश्वरम उदैयापरमास्वामी की आराधना के लिए खड़े होते हैं जिन्हें स्वयं राजराजा इस नाम से संबोधित करते थे।

नंदी मंडप:

इसी समान मंदिर की एक अन्य दिलचस्प विशेषता मुख्य मंदिर के सामने स्थापित पवित्र बैल नंदी की एकाश्म विशाल प्रतिमा है। जिस मंडप पर नंदी विराजमान हैं उसे बाद में निर्मित किया गया है। एकाश्म नंदी नायक कालीन है जिसे राजराजा द्वारा स्थापित पुरानी नंदी से बदलने के लिए लाया गया था। मंडपम भी उनके द्वारा निर्मित किया गया था और इस मंडपम की छत पर जो भित्तिचित्र अंकित हैं उन पर यूरोपीय प्रभाव दिखता है। नंदी के बदले जाने का यह मामला मंदिर में आने वाले कई लोगों के लिए एक कम ज्ञात तथ्य है। लेकिन फिर चोलकालीन नंदी का क्या हुआ? शुक्र है कि उन्हें दक्षिण की ओर थिरुमलीगाइपथी यानी अहाते की दीवार के साथ-साथ बने पृथक कक्ष में रखा गया। अभी भी आप मंदिर के अंदर वराही के लिए बने आधुनिक देवालय के पास उन्हें करीब से देखने के लिए रुक सकते हैं।

कला और सौंदर्यशास्त्र:

मंदिर अपार भव्यता से परिपूर्ण है जो सौंदर्यशास्त्र और निर्माण योजना के परिपक्व भाव को दर्शाती है और जिसे इस भूमि और उसके वासियों ने एक सहस्राब्दी पूर्व आत्मसात किया था। गर्भगृह की बाहरी दीवार में विभिन्न देवी-देवता स्थापित हैं जैसा आगमों में निर्दिष्ट है। दीवार पर बने आले एक आवृत्ति में हैं और मकरतोरण से अलंकृत हैं। गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा जैसे कुछ ऐसे देवी-देवता हैं जो अपनी-अपनी दिशाओं में विराजमान हैं। शिव के विभिन्न रूपों की एक श्रृंखला आलों में स्थापित की गई है और ये रूप वे हैं जिनका उल्लेख आगमों में किया गया है और पवित्र थेवरम ग्रंथों में गाया गया है। शिव के विभिन्न रूपों में नटराज, लिंगोधभव, गंगाधर, अर्धनारीश्वर, कला सम्हरा, हरिहर और अन्य शामिल हैं। यह व्यवस्था पहली मंजिल तक भी जारी है और वहां के आलों में शिव त्रिपुरांतक और विंध्येश्वर के रूप में हैं। आलों में विराजमान प्रत्येक देवता के अपने परिचारक और श्रद्धालु भी हैं जिन्हें आलों के दोनों ओर दर्शाया गया है।

गर्व का प्रतीक:

राजराजेश्वरम जैसा कि मंदिर को राजराजा ने नाम दिया था एक व्यक्ति के जीवन काल के ध्येय के रूप में माना जा सकता है और जिसे लाखों व्यक्तियों के संयुक्त प्रयास ने साकार रूप दिया। परंपराओं का पालन करते हुए सर्वशक्तिमान को एक विशाल भेंट अर्पित करने का स्वप्न एक सहस्राब्दी पूर्व हासिल किया गया और मंदिरों के समाज की प्रमुख धुरी के रूप में सेवा करने की अवधारणा की परख और स्थापना हुई। इस मंदिर के निर्माण में राजराजा ने जिन विभिन्न इंजीनियरिंग चुनौतियों का सामना किया वह सोचा-समझा प्रतीत होता है मानो वह कुछ सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे। उथली खाई की नींव रखना और उस आकार-प्रकार का लक्ष्य साधना जिसे पहले कभी नहीं आजमाया गया था, यह दर्शाता है कि संरचना संबंधी विशेषज्ञों ने कितनी गहराई से इसका अध्ययन किया होगा।

संरचना को जिस रूप में बनाया जा रहा था उसके अनुरूप उसे मिट्टी से भरना और ढंकना इस पैमाने और आकार के लिए विश्वसनीय सिद्धांत प्रतीत होता है। अन्यथा शीर्ष भागों तक मचान की सहायता से पहुंचना व्यावहारिक रूप से असंभव होता। इसलिए जैसे-जैसे परतें बनाई गई उन्हें साथ-साथ भर दिया गया और मिट्टी से ढक दिया गया जिससे एक रैंप का निर्माण हुआ जो सामग्री को अगले स्तरों तक पहुंचने में सहायक हुआ। निर्माण कार्य के सम्पूर्ण होने पर भव्य संरचना को उसकी पूर्ण महिमा में प्रकट करने के लिए मिट्टी को खोद कर निकाला गया। यह निश्चित रूप से हमारे लिए गर्व का प्रतीक है और इस विस्मयकारी संरचना का संरक्षण करना हमारा परम कर्त्तव्य है। ■

Scanned with OKEN Scanner

ब्रूटलिस्ट वास्तुकला

डॉ मंजरी चक्रवर्ती

ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर 1950 के दशक से 1980 के दशक के बीच की अवधि में विकसित नई वास्तुकला, असल में ऐसी विचारधारा से उत्पन्न हुई जिसमें इमारतों में से अनावश्यक बारीक नक्काशी, सजावटी डिज़ाइन, थोपी गई सी भारी भरकम सज्जा, इमारत के मूल ढांचे को ढकने के लिए आवरण सामग्री के इस्तेमाल और फ़िनिश देने के लिए कृत्रिम निर्माण वगैरह से परहेज किया गया। ब्रूटलिस्ट वास्तुकला में ऐसे निर्माण करने पर बल दिया गया जो मज़बूत, साधारण और सजावटरहित हों।

80 के दशक में बना नई दिल्ली का पालिका केन्द्र ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर का जीवन्त उदाहरण है जो अनावश्यक नक्काशी सजावट के बिना एक सरल डिज़ाइन है

ब्रूटलिस्ट वास्तुकला की पहचान

सामान्य रूप से वास्तुकला में ब्रूटलिज़्म को आधुनिक वास्तुकला की विशेष शाखा माना जाता है। ब्रूटलिज़्म शब्द का असल में डरावनी वास्तुकला से बिल्कुल संबंध नहीं है बल्कि यह निर्माण कार्य के लिए उपयोग होने वाली सामग्री का आभास कराने वाला शब्द है जिसमें साधारण और री-इनफोर्स्ड (दमदार) कंकरीट का इस्तेमाल सबसे प्रमुख था। बेतों ब्रूट मूल रूप से फ्रेंच भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'ग्रॉस सीमेंट' या 'रॉ सीमेंट' अर्थात् सकल सीमेंट या कच्चा सीमेंट और ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर की विशेष पहचान के लिए समय-समय पर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। इस चलन को समझाने के लिए स्वीडिश भाषा का शब्द नीब्रूटलिज़्म भी प्रयोग किया जाता है। 'न्यूब्रूटलिज़्म' शब्द पहली बार ब्रिटिश आर्किटेक्ट एलीसन और पीटर स्मिथसन ने गढ़ा था, उन्होंने ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर के कुछ जबरदस्त निर्माण-कार्यों के डिज़ाइन विकसित किए थे।

ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर को निर्णायक रूप से चिह्नित करने के उद्देश्य से हम इमारत के सरल डिज़ाइन, विशालता, कम से कम सामग्रियों के प्रयोग, अनावश्यक सजावटी कार्यों का कोई प्रयास नहीं या नक्काशी, बेलबूटे और कृत्रिम प्रभाव दर्शाने पर कतई ज़ोर नहीं, बाहर और भीतर से विकराल निर्माण का आभास, मूर्तिकला की गुणवत्ता और फिर भवन-निर्माण में प्रयोग की गई सामग्रियों का स्पष्ट प्रदर्शन जैसे मूल कारकों को आधार बना सकते हैं। इसी क्रम में हम सशक्त, रोमांचहीन, बिना किसी बारीक सजावटी कार्य के, साधारण सीधी रेखाओं, सामग्री को मूलरूप में दिखाने, कोणीय और उभरे डिज़ाइन जिनमें सामग्री साफ तौर पर दिखे, सीधे कट, आक्रामक, विशालकाय, वास्तुकला के गुणों से भरपूर निर्माण कार्यों को भी इस विधा की पहचान मान सकते हैं।

लेखक झारखंड में रांची के मेसरा में बिड़ला इंस्टिच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के आर्किटेक्चर एवं प्लानिंग विभाग की अध्यक्ष और प्रोफेसर हैं।
ईमेल: dr_manjari@bitmesra.ac.in, hod.arp@bitmesra.ac.in

Scanned with OKEN Scanner

चर्च, वियना, आस्ट्रिया

नई भवन सामग्रियों का चलन

आधुनिक चलन (ट्रेंड) पुरानी या नीरस वास्तुकला की लगातार घटती गति से उत्पन्न नई विचारधारा के कारण ही नहीं और न ही सिर्फ किसी नई कलात्मक उत्कंठा की वजह से आया और किसी बड़े सामाजिक बदलाव की झलक भी इसका कारण नहीं था बल्कि भवन निर्माण की नई सामग्रियों और नई भवन निर्माण तकनीकों से यह चलन आया और फिर बढ़ता चला गया। समाजिक बदलाव से नए स्टाइल विकसित किए गए और तकनीकी नवाचारों से इन्हें अमली जामा पहनाना संभव हुआ।

आसान तरीके से समझना चाहें तो ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर यानी 1950 के दशक से 1980 के दशक के बीच की अवधि में विकसित नई वास्तुकला की पहचान कुछ विशेष मानदंडों के आधार पर की जा सकती है। यह ब्रूटलिस्ट वास्तुकला असल में इसकी स्वयं की परिभाषा के अनुसार ऐसी विचारधारा से उत्पन्न हुई जिसमें इमारतों में से अनावश्यक बारीक नक्काशी, सजावटी डिज़ाइन, थोपी गई सी भारी भरकम सज्जा, इमारत के मूल ढांचे को ढकने के लिए आवरण सामग्री के इस्तेमाल और फ़िनिश देने के लिए कृत्रिम निर्माण वगैरह को हटाने का सिलसिला चल निकला। 1950 के आसपास शुरू हुए इस साहसिक अभियान में ऐसे निर्माण करने पर बल दिया गया जो मज़बूत, साधारण, सजावटरहित और अपने आकार-प्रकार से विशाल हों। ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर का चलन पहले पहल ब्रिटेन में दिखाई दिया जब विश्वयुद्ध के बाद के दौर में पुनर्निर्माण अभियान चलाया जा रहा था। इन विशालकाय इमारतों में निर्माण कार्य कम से कम लेकिन आकार में अत्यंत विकराल था जिसमें भवन निर्माण सामग्री को दर्शाने और सजावटी डिज़ाइन से मूल ढांचे को ढांपने का चलन रोकने पर जोर दिया गया था।

ब्रूटलिस्ट वास्तुकला असल में इसकी स्वयं की परिभाषा के अनुसार ऐसी विचारधारा से उत्पन्न हुई जिसमें इमारतों में से अनावश्यक बारीक नक्काशी, सजावटी डिज़ाइन, थोपी गई सी भारी भरकम सज्जा, इमारत के मूल ढांचे को ढकने के लिए आवरण सामग्री के इस्तेमाल और फ़िनिश देने के लिए कृत्रिम निर्माण वगैरह को हटाने का सिलसिला चल निकला।

कुछ जानी-मानी पत्रिकाओं ने ब्रूटलिज़्म को तकनीकी संगीत वाली वास्तुकला की संज्ञा दी जो भयावह और विकराल थी।

यहां यह याद रखना बहुत जरूरी है कि इस प्रकार की ब्रांडिंग के बिना अनेक पुरानी इमारतों और खासकर पिछले दौर में गरीबों और माध्यम वर्गों के लोगों के मकानों में ब्रूटल वास्तुकला की कई खूबियां सहज और कुदरती ढंग से अपनाई गई थीं क्योंकि सीमित संसाधनों के कारण वे लोग सिर्फ ढांचा तैयार करने की सोचते थे और विविधतापूर्ण अथवा साज-सज्जा वाली निर्माण सामग्री नहीं लगा पाते थे। इस प्रकार सीमित सामग्रियों का प्रयोग होने से ये इमारतें एक प्रकार से उधड़ी हुई दिखती थीं।

ब्रिटिश वास्तुकला समीक्षक रैनार बैनहैम ने वर्ष 1955 में ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर पर चर्चा करते हुए इसकी विशेषताओं, उत्पत्ति और प्रभावों को विस्तार से समझाया था और तभी से करीब 20 वर्ष तक इस शब्द का प्रयोग चलता रहा। उनका यह लेख इंटरनेट पर उपलब्ध है और वास्तुकला के इस अज्ञात आलोचक विद्वान की ओर से कलात्मक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से सशक्त सम्मिश्रण के तौर पर रचित

Scanned with OKEN Scanner

उल्लेखनीय कृति है। बैनहैम ने ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर को 'कच्ची कला' की संज्ञा दी थी। हम भी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और जनसंख्या विस्फोट तथा पर्यावरण की दृष्टि से इस मुद्दे को वास्तुकला के रूप में ही जानने-समझने का प्रयास कर सकते हैं।

किफायती और सादगीपूर्ण

वास्तुकला मात्र ऐसा व्यवसाय नहीं है जो बिना सोचे-समझे समाज और अर्थव्यवस्था की ज़रूरतें पूरी करता चला जाए। इससे रोज़गार और कामधंधा भी मिलता है और तभी यह व्यावसायिक सीमाओं को पार कर लेता है तथा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ उसकी रुचियों का भी पूरा-पूरा ध्यान रखता है। ब्रूटलिस्ट आंदोलन की अगुवाई करने वाले वास्तु विशेषज्ञ चाहते थे कि वास्तुकला में कोई अनावश्यक सज्जा नहीं होनी चाहिए और यह विश्व के समक्ष अपने मूल रूप में दिखनी और दिखाई जानी चाहिए। वे चाहते थे कि उनकी इमारतें उस समय के सामाजिक अस्थिरता के दौर में भी मज़बूती और भरोसे की प्रतीक दिखनी चाहिए और इमारतों से ऐसा विश्वास मिलना चाहिए जो सामाजिक -राजनैतिक-आर्थिक उठापटक के उस तूफानी दौर में प्रकाशस्तंभ की तरह सकारात्मक सोच को बल प्रदान करे। विश्वयुद्ध में नगर ध्वस्त हो गए थे जिससे प्राचीन वास्तुकला को भारी क्षति पहुंची थी। ऐसे में, नई अवधारणा के बारे में सोचना शुरू किया गया और नए तौर-तरीके अपनाने पर ज़ोर दिया जाने लगा तथा नए डिज़ाइन और नई प्रौद्योगिकी विकसित करने की प्रक्रिया भी शुरू हुई। देखा जाए तो इस प्रकार से नगरों में नए डिज़ाइन की इमारतें बनाने की मज़बूरी तो थी ही लेकिन इससे एक बड़ा अवसर भी प्राप्त हुआ। नई

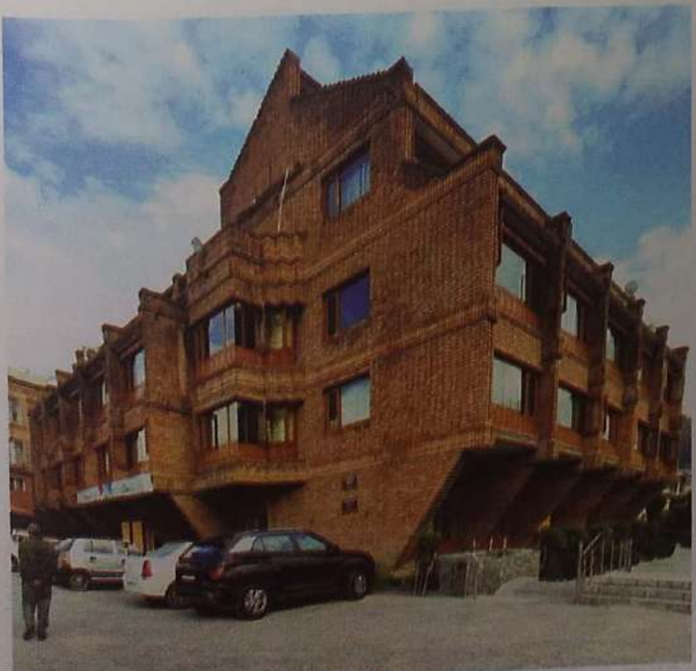

श्रीनगर का एक होटल

ब्रूटलिज़्म शब्द का असल में डरावनी वास्तुकला से बिल्कुल संबंध नहीं है बल्कि यह निर्माण कार्य के लिए उपयुक्त होने वाली सामग्री का आभास कराने वाला शब्द है जिसमें साधारण और री-इनफोर्स्ड (दमदार) कंकरीट का इस्तेमाल सबसे प्रमुख था। बेतों ब्रूट मूल रूप से फ्रेंच भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'ग्रॉस सीमेंट' या 'रॉ सीमेंट' अर्थात् सकल सीमेंट या कच्चा सीमेंट और ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर की विशेष पहचान के लिए समय-समय पर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है।

इमारतों के माध्यम से समाज को सभी प्रकार की गतिविधियों के लिए मजबूत और टिकाऊ आवासीय सुविधाएं उपलब्ध कराने पर भी जोर दिया गया। उसी समय निर्माण सामग्री के तौर पर कंकरीट के प्रयोग से वास्तुकला में अनेक बड़े विकल्प मिल गए क्योंकि सख्त होने के साथ ही इसे ढाला भी जा सकता है और इसे विभिन्न आकार और डिज़ाइन बनाने में भी बखूबी इस्तेमाल किया जा सकता है तथा इससे इमारत में मजबूती और टिकाऊपन भी आता है। इसलिए ब्रूटलिज़्म अपनाने वाले आर्किटेक्टों ने इस स्थिति का लाभ उठाते हुए किफ़ायती, सादगीपूर्ण और मजबूत इमारतों के डिज़ाइन ज्यादा अपनाए जो देखने में विशालकाय तो थे पर उनमें सजावटी और अनेक भांति की निर्माण सामग्री का उपयोग कम से कम किया गया था।

नाम की उत्पत्ति

ब्रूटलिज़्म के नामकरण के ज्ञात स्रोतों को देखने के साथ ही यदि इस शब्द की व्याख्या करने के उद्देश्य से विचार करें कि क्या यह 'ब्रूट' शब्द से बना है तो शब्दकोश में इसके अर्थ देखने पर हम पाएंगे कि इसका मतलब वहशी, हिंसक, भयावह, कठोर, हृदयहीन, निर्दयी, अमानवीय, राक्षस और वीभत्स तक होता है। थोड़ी कोमलता का भाव रखने पर भी इसका मतलब 'स्पष्ट और छिपी हुई अप्रसन्नता' होगा। सकारात्मक प्रयोग में भी इसे 'निर्मम ईमानदारी' (ब्रूटल ऑनेस्टी) कहा जाएगा। इस तरह हम देख सकते हैं कि शब्दकोश और नामकरण के अन्य स्रोतों में इस्तेमाल किए गए इन सभी समानार्थक शब्दों का संबंध ब्रूटल आर्किटेक्चर से जुड़ा मिलता है और सही शब्द का चयन समीक्षक अथवा उपयोगकर्ता के विवेक पर निर्भर करता है।

कला की किसी भी विधा की समीक्षात्मक आलोचना करने के लिए और खासकर आर्किटेक्चार या वास्तुकला जैसी किसी सार्वजनिक और रहने योग्य कला की समीक्षा करने के लिए यह याद रखना होगा कि इमारतों के गुण-दोष की समीक्षा जानेमाने विशेषज्ञ ही नहीं करते बल्कि समाज के सभी वर्गों के लोग इन्हें देखते-परखते हैं और उनकी अच्छे-खराब के रूप में विवेचना करते हैं। इन लोगों में खास पसंद और रुचि रखने वाले अभिजात्य वर्ग के लोग, साधारण प्रभाव रखने वाले मध्यमवर्गीय लोग तथा आम आदमी शामिल हैं। इसलिए इमारतों के बारे में विशेष व्यक्तिगत राय और आम राय पर विचार करके समाज की व्यापक जन-प्रतिक्रिया जान लेना ही बेहतर रहता है। फिर, ब्रूटलिस्ट इमारतों का विवेचनात्मक आकलन व्यक्तिपरक और यथार्थवादी दोनों दृष्टिकोणों से किया जाना चाहिए।

जो आलोचक ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर को कला और संस्कृति के आइने से देखते हैं उनकी राय में इसकी विशिष्ट पहचान और एकदम अलग अंदाज है और शिल्पकला होने के कारण यह मुख्यत: सूक्ष्म या एकरंगी होती है। इससे भी बढ़कर आश्चर्य की बात यह है कि निहित सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों के कारण रूस में क्रांति से पहले और क्रांति के बाद सार्वजनिक कला के क्षेत्र में भी ऐसी ही कठोर

Scanned with OKEN Scanner

और मज़बूत इमारतों का निर्माण हुआ जिसमें सरल और निर्णायक तौर पर शक्ति की भावना उकेरी गई थी। इसके ठीक विपरीत कुछ समीक्षक ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर को बेहद कठोर तथा अहंकारपूर्ण और भयावह और इतना नीरस मानते हैं जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। दार्शनिक ढंग से विचार करें तो उन्हें कई बार साहसिक कहा जाता था लेकिन वे इतने निर्लज्ज थे कि उन्हें ज़रूरत से ज्यादा हठीला भी माना जाता था। कुछ समाजशास्त्रियों और प्रेक्षकों ने वास्तुकला में ब्रूटलिज़्म को बढ़ती हृदयहीनता और अनुभूति के बढ़ते अभाव की सुप्त अभिव्यक्ति मान लिया जिसमें पहचान और शक्ति प्राप्त करने की इच्छा भी बनी रहती थी।

वास्तुकला के समीक्षकों की राय भी अलग-अलग थी। कुछ आलोचक इसे सौंदर्य का उत्कर्ष और निर्दोष मानते थे जबकि कुछ अन्य आलोचक इसे जरूरत से ज़्यादा उघड़ा और अनाकर्षक मानते थे। उनकी राय में इसमें गर्मजोशी और मैत्रीभाव का सर्वथा अभाव है। बाहर से देखने पर इन इमारतों में आमतौर पर ठोस ताकत दिखती है जिससे इनमें सौंदर्य का आभास बेहद कम है लेकिन कुछ विचारकों के अनुसार ये इमारतें भीतर से काफी आक्रामक हैं और उपयोगकर्ताओं के मस्तिष्क पर बोझ-सा बना रहता है। अपने कम जटिल स्वरूप और कम से कम प्रकार की निर्माण सामग्री का इस्तेमाल होने के कारण ये इमारतें बहुत रूखी, आकर्षणहीन और कम सुखी बनाने वाली लगती हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से ये इमारतें बाहर से तो ताक़त, टिकाऊपन और भरोसे का आभास देती हैं लेकिन भीतर से ये आमतौर पर नीरस और कांतिहीन होती हैं जिससे एक तरह से अवसाद-की सी स्थिति बन जाती है। ली कॉरब्रूज़िएर की वास्तुकला और पिएर लुइनी नेर्वी के टेक्नो-आर्टिस्टिक कार्यों में काफी ज़्यादा ब्रूटलिस्ट खूबियां दिखाई देती हैं।

ब्रूटलिस्ट इमारतों में कम प्रकार की सामग्री इस्तेंमाल होने और उनमें अत्यधिक परिमाण में साज सज्जा न होने के कारण विश्वयुद्ध के बाद की और क्रांति-पश्चात् की अवधि में बड़े पैमाने पर मकान बनाने की परंपरा की बड़ी संभावना पाई गई।

ब्रूटलिस्ट इमारतों के मज़बूत और टिकाऊ होने के कारण आंतरिक प्रावधानों के बारे में चिंताजनक स्थिति बन सकती है। ये इमारतें टिकाऊ और मज़बूत होती हैं जिससे इनका ढहना आसान नहीं होता लेकिन समय बीतने के साथ ही इन इमारतों के भीतर सुख सुविधा और साज़-सज्जा का स्तर बढ़ाने की मांग बढ़ सकती है। आज के दौर में इन आंतरिक प्रावधानों में फर्निचर, फर्निशिंग, फिटिंग्स, फिक्सचर्स, गैजेट, सुविधा-सेवाएं आदि शामिल हैं यानी समकालिक रेट्रोफिटिंग नैतिक और नैसर्गिक नीति-निर्माण और नीति क्रियान्वयन के मामले में चुनौतियां बनी रहती हैं। सभी पुरानी इमारतों में यह समस्या रहती है पर ब्रूटल इमारतों में ज़्यादा होती है।

पुनरुद्धार

वास्तुकला में ब्रूटलिज़्म का पुनरावलोकन करने पर हम पाते हैं कि समाज में व्यक्तिगत और सामूहिक सोच में बड़े बदलाव आए हैं। आधुनिक प्रौद्योगिकियां विकसित होने से आर्थिक संपन्नता आई है और जागरुकता भी बढ़ी है। इसी कारण सुविधाओं और सामाजिक सम्मान की मांग में भी कई गुणा वृद्धि हुई है। अब कई प्रकार की सामग्रियां विकसित होने से वास्तुकला विशेषज्ञों को अपने ग्राहकों को संतुष्ट करने के वास्ते आंतरिक फिनिशिंग, फिटिंग्स, फर्निशिंग, गैजेट, फिक्सचर्स, पर्दे, फर्नीचर, प्रकाश-व्यवस्था को भी वास्तुकला का अभिन्न अंग मानना पड़ता है। नई खर्चीली सामाजिक व्यवस्था में वास्तुकला में ब्रूटलिज़्म को नीरस, उबाऊ और आकर्षणहीन, असुविधाजनक और आराम की दृष्टि से भी अनुपयोगी पाया गया है। कुल मिलाकर इस कला में आए खुलेपन को भयावह बताया गया है। ब्रूटलिज़्म को इतना सुखकर नहीं माना गया और इसे आक्रामक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने वाला माना गया है। ब्रूटल इमारतों को बदरंग और गर्मजोशी और भावहीन प्रवृत्तियों को उकसाने वाला माना जा रहा था। इस प्रकार से ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर के नए अवतार को रोकने के लिए अनेक ताकतें उठ खड़ी हुईं। इसका मूल भाव यही है कि नई उभरती वास्तुकला को नए युग में नया नाम देना आवश्यक है।

आर्किटेक्चर में ब्रूटलिज़्म अपने चरम के दौर में नई निर्माण सामग्रियों की ताकत और निर्माण पद्धतियों के विकास के कारण ही पनपता जा रहा था। उस वक्त पर्यावरण का पहलू और टिकाऊपन का मुद्दा कहीं नहीं था। प्रैक्टिसिंग आर्किटेक्टों की अंतरात्मा एकदम साफ थी। आज के दौर में एक तरफ सामग्रियों और फिनिशेज़ के अनेकानेक विकल्प उपलब्ध हैं, फिर भी, पर्यावरण से जुड़ी चिंताओं ने मुक्त, बेलगाम और निरर्थक डिज़ाइनों पर अंकुश लगाने की बड़ी समस्या खड़ी कर दी है। गैर जिम्मेदाराना कल्पना और उपभोक्तावादी डिज़ाइनों की अब कोई तारीफ़ नहीं करता हालांकि ये काफी मात्रा में मौजूद हैं। वास्तुकला में पहचान और दिशा की खोज अभी जारी है जबकि समाज आरामदायक इमारतों में ही सुख की खोज में खोया है। जहां वास्तुकला के सभी स्वरूप इन नए मानकों के अनुसार विकसित हो रहे हैं वहीं ब्रूटल आर्किटेक्चर को प्रतिरोध और चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है तथा अकारण ही उसका अपना अस्तित्व खोता जा रहा है। हालांकि कुछ इमारतों में ब्रूटलिस्ट होने के कुछ चिह्न दिखाई देंगे पर कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भारत में वास्तुकला में ब्रूटलिज़्म का अभियान अब थम चुका है।

वर्तमान समय में ब्रूटलिस्ट आर्किटेक्चर के पुनरुद्धार या फिर अस्तित्व में आने की संभावना या आवश्यकता टिकाऊ वास्तुकला की मांग के कारण बढ़ सकती है और इसके लिए सादगी की नई भावना अपनाकर बर्बादी को पूरी तरह रोकना होगा। अब यह 'ईमानदारी' और 'कम खर्चीले' तरीके से अपनाने के द्वारा होगा। ब्रूटल आर्किटेक्चर की चुनौती की नई परिभाषा बिना साज-सज्जा वाली वास्तुकला के रूप में करने की चुनौती है जो सादी लेकिन रुचिकर, मज़बूत लेकिन मैत्रीपूर्ण, कठोर लेकिन आकर्षक, कलात्मक लेकिन बिना कृत्रिम सजावट वाली, काम करने वाली पर कम खर्चीली होगी तथा इसे टिकाऊ बनाने का लक्ष्य तय रहेगा। ब्रूटल आर्किटेक्चर की नई दिशा चुनने के नए कार्य के अंतर्गत इसे गुणात्मक और संख्यात्मक रूप से नए विकसित सांचे में ढालना होगा तथा वह भी इसकी क्रियात्मक, नैसर्गिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशिष्टताओं को बनाए रखकर करना होगा। ब्रूटलिटी का नया क्षितिज सभी पुरानी सीखों को अपनाते हुए व्यापक प्रावधानों के लिए सादगी की अर्थव्यवस्था अपनाकर खोजा जा सकता है।

वर्तमान दौर के ब्रूटलिज़्म को सरल और निष्पक्ष बना रहने दें। ब्रूटलिज़्म आधुनिक वास्तुकला की ही शाखा थी इसलिए नए ब्रूटलिज़्म को भी भविष्य की वास्तुकला का टिकाऊ माध्यम बनाएं। ■

Scanned with OKEN Scanner

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

डॉ पी एस एन राव
डॉ अनिल दीवान

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, एकता के आदर्श और राजनेता सरदार पटेल के जीवन के प्रति कृतज्ञता है। दुनिया की यह सबसे ऊंची प्रतिमा सरदार सरोवर बांध के सामने 3.2 किलोमीटर दूरी पर प्रकृति की गोद में स्थित है। यह विशाल प्रतिमा गुजरात के एकता नगर के जिला राजपीपला में नर्मदा नदी में साधु-बेट के द्वीप पर स्थित है, जिसकी पृष्ठभूमि में राजसी विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत शृंखलाएँ हैं। यह प्रतिमा तेजी से देश के शीर्ष पर्यटक आकर्षणों में से एक बन रही है। पीढ़ियों को प्रेरित करने के उद्देश्य से, यह प्रतिमा सरदार वल्लभभाई पटेल की एकता, देशभक्ति, समावेशी विकास और सुशासन के दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है।

भारत के लौह पुरुष के लिए सम्मान का प्रतीक, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी साधु-बेट के द्वीप पर स्थित 182 मीटर ऊंची एक प्रतिष्ठित प्रतिमा है। विंध्याचल और सतपुड़ा की पर्वत शृंखलाओं के बीच स्थित, इस स्मारक में कई अन्य आकर्षक पर्यटन स्थल हैं जैसे फूलों की घाटी, शूल्पनेश्वर अभयारण्य तथा पवित्र मंदिर, सरदार सरोवर बांध और इसके पानी के बांध, सुंदर जरवानी जलप्रपात और राजपीपला के राजसी महल। सुरम्य पृष्ठभूमि के साथ भव्य स्मारक इसे पर्यावरण-पर्यटन का एक आदर्श गंतव्य बनाता है।

डॉ पीएसएन राव, स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली में निदेशक और हाउसिंग के प्रोफेसर हैं। ईमेल: drpsnrao@hotmail-com
डॉ अनिल दीवान इसी संस्थान में आर्किटेक्चर विभाग के अध्यक्ष और प्रोफेसर हैं। ईमेल: a-dewan@spa-ac-in, hodarchitecture@spa-ac-in

Scanned with OKEN Scanner

भारत के पहले उप प्रधानमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल की इस प्रतिमा को बनने में चार साल लगे और डिज़ाइन करने में आठ साल लगे। भारतीय मूर्तिकार राम वी. सुतार द्वारा बनाया गया यह स्मारक, लगभग 50 मंजिला लंबा है और तीन स्तरों के आधार पर टिका है, जिसने ऊंचाई के मामले में विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया है। ज्यामितीय रूप से डिज़ाइन किया गया आधार अपने स्वयं के नदी द्वीप पर स्थित है और वाहनों तथा पैदल चलने वालों के लिए एक पुल द्वारा मुख्य भूमि पुंज से जुड़ा हुआ है। इसमें आगंतुक केंद्र, होटल और प्रदर्शनी हॉल है।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी सरदार पटेल के उत्कृष्ट योगदान और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रोत्साहन की याद के रूप में बना रहेगा। यह हमारे 'लौहपुरूष' की दूरदर्शिता एवं कौशल्य ही था कि जिससे 562 छोटी और बड़ी रियासतें सर्वसम्मति से भारत का अभिन्न हिस्सा बनने के लिए सहमत हुई। यह स्मारक हमारी एकता एवं मूल्यों का प्रतीक है। 182 मीटर ऊंचा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है। इसने चीन के 153 मीटर ऊंचे स्प्रिंग टेम्पल बुद्धा को पीछे छोड़ दिया है। यह न्यूयॉर्क में स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी से लगभग दोगुनी ऊंची है।

वर्ष 2013-14 के दौरान भारत के कई गांवों को इस परियोजना में सम्मिलित करने हेतु 'लोहा अभियान' आयोजित किया गया था। प्रतिष्ठित परियोजना के लिए स्वैच्छिक योगदान के रूप मे देश भर के किसानों के द्वारा इस्तेमाल किए गये कुल 169,078 कृषि उपकरण और मिट्टी के नमूने लोहा अभियान के तहत एकत्रित किए गए थे। इस 'लोहा अभियान' को विश्व के सबसे बड़े सामाजिक अभियानों मे से एक माना जाता है। इस अभियान के तहत समग्र राष्ट्र के गाँवों से 134.25 मेट्रिक टन लोहा प्राप्त किया गया था। इस लोहे को 109.17 मेट्रिक टन वजन की मजबूत पट्टियों में परिवर्तित किया गया और स्मारक के निर्माण में उसका उपयोग किया गया। देश के विभिन्न हिस्सों से एकत्रित की गई मिट्टी से प्रतीकात्मक 'वॉल ऑफ यूनिटी' का निर्माण किया गया।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी सरदार पटेल के उत्कृष्ट योगदान और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रोत्साहन की याद के रूप में बना रहेगा। 182 मीटर ऊंचा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है, जो चीन के 153 मीटर ऊंचे स्प्रिंग टेम्पल बुद्धा को पीछे छोड़ देगी और न्यूयॉर्क में स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी से लगभग दोगुनी ऊंची है।

सरदार पटेल की स्वाभाविक और प्रेरणादायक छवि के रूप मे यह स्मारक उनके लाक्षणिक वस्त्र, मुद्रा, गरिमा, आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छाशक्ति और दयालुपन को दर्शाता है। स्मारक का कांस्य आवरण प्रतिमा को विशेष एवं नयनरम्य बनाता है। प्रतिमा के निर्माण के लिए अत्याधुनिक सर्वेक्षण तकनीक जैसे लाइट डिटेक्शन एंड रेंजिंग (LIDAR) और टेलीस्कोपिक लॉगिंग का इस्तेमाल किया गया।

इस राष्ट्रीय स्मारक के निर्माण मे लगभग 70,000 मेट्रिक टन सीमेंट, सुदृढ़ीकरण हेतु 18,500 मेट्रिक टन सलाखें और 6,000 मेट्रिक टन स्ट्रक्चरल स्टील का उपयोग किया गया था। 22,500 वर्ग मीटर के सतह क्षेत्र को लगभग 1,700 मेट्रिक टन कांस्य से आवरित किया गया।

योजना और निर्माण चरण के दौरान, हवा और भूकंप सहित प्राकृतिक तत्वों संबंधी कई समस्याएं प्रस्तुत की गई। यह प्रतिमा, नदी के नीचे बहने वाली हवाओं के सुरंग प्रभाव के संपर्क में है क्योंकि यह सीधे नर्मदा नदी के केंद्र में स्थित है। वर्षों से हवा के पैटर्न के अध्ययन में पाया गया कि, सबसे खराब स्थिति में, 39 मीटर प्रति सेकंड (लगभग 130 कि.मी./घंटा के बराबर) की हवा की गति मूर्ति को धक्का दे सकती है। इंजीनियरिंग की बदौलत 50 मीटर/सेकेंड (लगभग 180 कि.मी./घंटा) तक हवा की गति को मूर्ति द्वारा रोका जा सकता है। चुनौती केवल स्मारक के प्रतिकूल दिशा में बहने वाली हवा नहीं है; संरचनात्मक डिज़ाइन में मूर्ति के पीछे पैदा होने वाले अनुक्रम प्रभाव को ध्यान में रखा जाना चाहिए। एक और दिलचस्प चुनौती, आधार थी जिसे पोशाक के कारण सबसे पतला होना था। चलने की स्थिति ने दो फीट के बीच 6.4 मीटर की जगह भी बनाई, जिसे हवा प्रतिरोध के लिए आंकलन करने की आवश्यकता थी। मूर्ति के रूप ने एक और बाधा प्रस्तुत की। चूंकि पटेल का चेहरा एक महत्वपूर्ण घटक था, इसलिए चेहरे की विशेषताओं को सटीक बनाने के लिए अतिरिक्त सावधानी बरती गई। मूर्ति को अपने बाएं पैर को थोड़ा सामने रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है क्योंकि यह सरदार सरोवर बांध की ओर बढ़ता है, जिससे यह आभास होता है कि यह पानी पर चल रहा है। एक मॉक-अप बनाया और प्रदर्शित किया गया ताकि अन्य लोग इसकी जांच कर सकें और प्रतिक्रिया दे सकें।

यह मूर्ति पहाड़ों वाले ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है, जिससे सामग्री लाना बेहद मुश्किल था। पहाड़ी और मुख्य भूमि एक अस्थायी बेली पुल से जुड़े हुए थे। प्रतिमा का आधार नर्मदा बांध से भी ऊंचा है, जो 100 साल की अवधि में दर्ज किए गए अधिकतम बाढ़ स्तर के निकट है। विभिन्न परिस्थितियों में नदी के स्तर और प्रवाह को निर्धारित करने के लिए, एक विशेषज्ञ सलाहकार ने एक संपूर्ण हाइड्रोलॉजिकल विश्लेषण किया। प्रतिमा को कुल पांच क्षेत्रों में बांटा गया है। पहला क्षेत्र इसके पिंडली तक फैला हुआ है और इसमें तीन स्तर हैं, जिसमें प्रदर्शन के लिए एक मंजिल, एक मेजेनाइन और एक छत शामिल है। वहां एक स्मारक उद्यान और एक बड़ा संग्रहालय होगा। जोन दो, 149 मीटर की ऊंचाई पर मूर्ति की जांघों तक पहुंचता है, और जोन तीन, 153 मीटर की ऊंचाई पर देखने वाली गैलरी में जाता है। आगंतुक, जोन चार और पांच तक पहुँचने में असमर्थ होंगे, जिसमें जोन चार रखरखाव क्षेत्र और जोन 5 सिर और कंधे बनाते हैं।

प्रतिमा के दो-परत वाले हिस्से के रूप में संरचनात्मक डिज़ाइन के लिए अपनाई जाने वाली कार्यप्रणाली 8 मि.मी. कांस्य कोटिंग के भीतर समाहित है। 127 मीटर ऊंचे दो सीमेंट कंक्रीट टावर सबसे गहरे स्तर में देखे जा सकते हैं। ये मीनारें छाती से ऊँची हैं। दूसरी परत स्टील फ्रेम से बनी है जो टावरों और क्लैडिंग के बीच में स्थित है। अन्य इंजीनियरिंग कठिनाइयाँ भी थीं। एक यह है कि स्टैच्यू ऑफ यूनिटी में स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी और क्राइस्ट द रिडीमर जैसे बड़े आधार का अभाव है।

किसी संरचना की मजबूती के लिए, आधार को व्यापक होना चाहिए। मूर्ति ऊपर से मोटी और नीचे पतली है, ठीक वैसे ही जैसे पटेल धोती में लगते थे। प्रतिमा की चौड़ाई और ऊंचाई के बीच 16:19 पतलापन अनुपात बनाए रखने के द्वारा इस समस्या को हल किया गया था, जो कि ऊंची इमारतों के डिज़ाइन में उपयोग किए जाने वाले 8:14 अनुपात दिशानिर्देश से काफी अधिक है। प्रतिमा का

Scanned with OKEN Scanner

देश के पहले उप-प्रधानमंत्री, देश के लौह पुरुष को समर्पित स्मारक

प्रमोटर: सरदार वल्लभभाई पटेल राष्ट्रीय एकता न्यास

परियोजना लागत

₹3,060.88 करोड़

निर्माण-2.332 करोड़ रु.
पीएमसी-55.63 करोड़ रु.
प्रूफ कन्सल्टेंसी- 16.25 करोड़ रु.
संचालन और रखरखाव- 667 करोड़ रु.
(पूर्ण होने के 15 साल बाद)

182 मीटर
स्टेच्यू ऑफ यूनिटी

शामिल कंपनियां

ईपीसी अनुबंधक
लार्सन एण्ड टूब्रो (संचालन और प्रबंधन सहित्त)
पीएमसी
तुमेर कंसोर्टियम जिसमें शामिल हैं
तुमेर प्रोजेक्ट मैनेजमेंट इंडिया (प्रमुख सदस्य)
मैनहराट इंडिया (स्ट्रक्चरल एण्ड एमईपी इंजीनियरिंग) एण्ड माइकल ग्रेव्स एसोसिएट्स (आर्चिटेक्चरल एण्ड मास्टर प्लानिंग सर्विसेज़)
प्रूफ कन्सल्टेंट्स
ईजीआईएस इंडिया कन्सलटिंग इंजीनियर्स
टाटा कन्सलटिंग इंजीनियर्स (जेवी)
डिजायनर एण्ड स्कल्प्टर
पुरस्कार विजेता डिजायनर: राम वी सुतार

स्थान: साधु बेत, निकट सरदार सरोवर बांध, गरुड़ेश्वर वेयर, केवड़िया, नर्मदा ज़िला, गुजरात

रोज़गार

4,076 श्रमिक को रोज़गार मिला

इस्तेमाल की गई सामग्री

- ब्रोन्ज़ क्लैडिंग 1,850 टन
- कन्क्रीट 75,000 क्यूबिक मीटर
- इस्पात संरचना 5,700 टन
- प्रबलित इस्पात 18,500 टन
- ब्रोन्ज़ शीट्स 22,500 टन
- तांबा 1,700 टन

तथ्य

- 182 मीटर की ऊंचाई पर स्थित दुनिया का सबसे ऊंची प्रतिमा
- समुद्र तल से ऊंचाई 237.35 मीटर
- आधारशिला रखने के लिए साधु बेत के 70 मीटर के हॉलॉक को 55 मीटर तक समतल किया गया
- सात किलोमीटर के दायरे से देखा जा सकता है
- सतपुड़ा और विंध्यांचल पर्वतमाला का दृश्य दिखता है जो एक ऐसा बिंदु बनाता है जहां मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात मिलते हैं।
- 212 किलोमीटर लंबे सरदार सरोवर जलाशय का दूरस्थ दृश्य

स्मारक दृश्य

- ज़ोन-1 तीन स्तर- एग्ज़ीबिट फ्लोर, मैज़नाइन तथा रूफ, स्मारक उद्यान और बड़ा संग्रहालय
- ज़ोन-2 149 मीटर पर प्रतिमा की जांघ तक विस्तार
- ज़ोन-3 सीने के स्तर के 157 मीटर पर दृश्य गैलरी तक गैलरी में एक समय में 200 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है यहा से सतपुड़ा और विंध्यांचल पर्वतमाला का दृश्य भी दिखता है।
- ज़ोन-4 रखारखाव क्षेत्र (आगंतुकों के लिए नहीं)
- ज़ोन-5 मूर्ति के सिर और कंधे (आगंतुकों की पहुंच से बाहर)

आधार लगभग 25 मीटर ऊंचा है, जो धोती में ढके पैरों के नीचे एक आठ मंजिला इमारत की ऊंचाई है। इमारत के इस क्षेत्र में स्थित दो विशाल लिफ्ट 25 से अधिक लोगों को 135 मीटर ऊंची गैलरी में ले जा सकते हैं।

इंजीनियरों को भूकंप और बाढ़ के जोखिम के साथ-साथ हवा की गति को भी ध्यान में रखना पड़ा। प्रतिमा को नदी के नीचे बहने वाली हवाओं के सुरंग प्रभाव से जूझना होगा क्योंकि यह नर्मदा के बीच में एक द्वीप पर बनाई गई थी। चलने की स्थिति के कारण मूर्ति के दो पैरों के बीच 6.4 मीटर का स्थान दिखाई दिया। इन समस्याओं को दूर करने और भूकंप और हवा के प्रभावों का सामना करते हुए ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज गति को सक्षम करने के लिए प्रतिमा के आवरण को अतिव्यापी पैनलों के साथ डिज़ाइन किया गया। दो 250 टन द्रव्यमान वाले डैम्पर्स का उपयोग किया गया है, जो कंपन के आयाम को कम करने के लिए इमारतों में स्थापित किए गए हैं।

इसलिए मूर्ति 220 किमी / घंटा से अधिक की हवा के झोंकों और रिक्टर पैमाने पर 6.5 या उससे अधिक तीव्रता के भूकंप को सहन करने में सक्षम है। दूर-दूराज में प्रतिमा की स्थापना और पहाड़ी रास्तों ने उपकरण और सामग्री की ढुलाई को कठिन और चुनौतीपूर्ण बना दिया। द्वीप पर जाने के लिए इसे आसान बनाने के लिए, मानसून में नदी में अधिक पानी होने के दौरान के लिए एक अस्थायी बैली पुल बनाया गया था, और उथले पानी पर एक चट्टान पुल बनाया गया है। प्रतिमा के निर्माण के लिए लगभग 210,000 क्यूबिक मीटर सीमेंट कंक्रीट, 18,500 टन प्रबलित स्टील, 6,500 टन संरचनात्मक स्टील, 1,700 टन कांस्य और लगभग 1,850 टन कांस्य क्लैडिंग के उपयोग की आवश्यकता थी, जो 565 मैक्रो और 6,000 माइक्रो पैनल से बना था। इस माल के अधिकांश भाग को स्थानांतरित करने के लिए दो पुलों का उपयोग किया गया था।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी इंजीनियरिंग की एक सच्ची उपलब्धि है। यह भारत के इंजीनियरिंग कौशल का सम्मान है। जटिल डिज़ाइनों के साथ कला के इस विशाल कार्य का निर्माण करने वाले वास्तुकारों, इंजीनियरों और कुशल श्रमिकों ने काफी प्रशंसा बटोरी है। हमें इस बात पर गर्व है कि हमारे देश में दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी शक्ति और एकता का प्रतीक है। यह सरदार पटेल के वास्तविक व्यक्तित्व के मजबूत और शक्तिशाली स्वभाव को दर्शाता है। ■

(अन्य योगदान करने वाले लेखक हैं- डॉ खुशाल मताई और डॉ अमित कुमार जगलान, दोनों स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर, नई दिल्ली में सहायक प्रोफेसर हैं।)

Scanned with OKEN Scanner

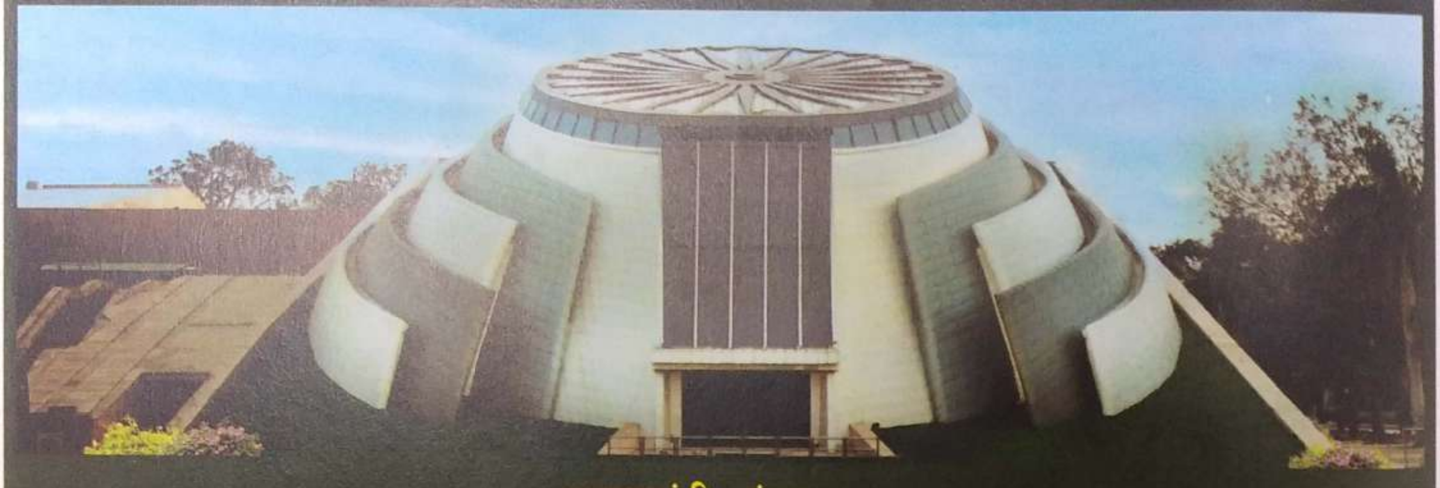

प्रधानमंत्री संग्रहालय

प्रधानमंत्री संग्रहालय स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत के प्रत्येक प्रधानमंत्री को एक श्रद्धांजलि है और पिछले 75 वर्षों में हमारे देश के विकास में प्रत्येक ने कैसे योगदान दिया है इसका एक विवरणात्मक दस्तावेज है। यह सामूहिक प्रयास का इतिहास है और भारत के लोकतंत्र की रचनात्मक सफलता का सशक्त प्रमाण है। हमारे प्रधानमंत्री समाज के हर वर्ग और स्तर से आए थे क्योंकि लोकतंत्र के द्वार सभी के लिए समान रूप से खुले हैं। प्रत्येक ने विकास, सामाजिक सद्भाव और आर्थिक सशक्तीकरण की यात्रा के दौरान महत्वपूर्ण पदचिह्न छोड़ा जिसने भारत को स्वतंत्रता को सही अर्थ प्रदान करने में सक्षम बनाया है। हमें ब्रिटिश उपनिवेशवाद के मलबे से एक कंगाल भूमि विरासत में मिली और सबने मिल कर इसे एक नया जीवन दिया, हमारे देश को अन्न से वंचित स्थिति से खाद्य-अधिशेष की स्थिति में ले जाया गया और लोगों के लाभ के लिए बंजर क्षेत्र पर बुनियादी ढांचे का निर्माण किया गया। भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का 16 वर्षों तक आवास रहा तीन मूर्ति एस्टेट प्रधानमंत्री संग्रहालय के लिए स्वाभाविक परिवेश था क्योंकि यह निरंतरता की गाथा है।

संग्रहालय एक सहज समावेश है जो पुनर्निर्मित और नवीनीकृत नेहरू संग्रहालय भवन से शुरू होता है जो अब श्री जवाहरलाल नेहरू के जीवन और योगदान का पूरी तरह से अद्यतन और तकनीकी रूप से उन्नत प्रदर्शन करता है। नए पैनोरमा में एक ऐसा खंड शामिल है जिसमें दुनिया भर से उन्हें बड़ी संख्या में भेंट में मिले दुर्लभ उपहार प्रदर्शित हैं जिनका पहले कभी प्रदर्शन नहीं किया गया था।

आधुनिक भारत की गाथा स्वतंत्रता संग्राम और एक गौरवमय संविधान की स्थापना से शुरू होती है। संग्रहालय में आगे बताया गया है कि कैसे हमारे प्रधानमंत्रियों ने विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुए देश को आगे बढ़ाया और उसकी सर्वांगीण प्रगति सुनिश्चित की। इस वृतांत में युवा पीढ़ी के लिए एक संदेश निहित है: भारत को नए भारत की ओर अग्रसर करने के लिए और अधिक उपलब्धियां हासिल करनी होंगी।

प्रधानमंत्री संग्रहालय ने विषयवस्तु में विविधता और प्रदर्शन के नियमित आवर्तन के लिए प्रौद्योगिकी-आधारित इंटरफेस का प्रयोग किया है। होलोग्राम, वर्चुअल रियलिटी, ऑगमेंटेड रियलिटी, मल्टी-टच, मल्टी-मीडिया, इंटरेक्टिव कियोस्क, कम्प्यूटरीकृत चलायमान मूर्तियां, स्मार्टफोन एप्लिकेशन, इंटरेक्टिव स्क्रीन, अनुभवात्मक इंस्टॉलेशन आदि प्रदर्शनी सामग्री को अत्यधिक इंटरेक्टिव बनाने में सक्षम करते हैं।

स्रोत: www.pmsangrahlaya.gov.in

हमारी पत्रिकाएं

योजना, कुरुक्षेत्र, आजकल, बाल भारती

में विज्ञापन देने हेतु

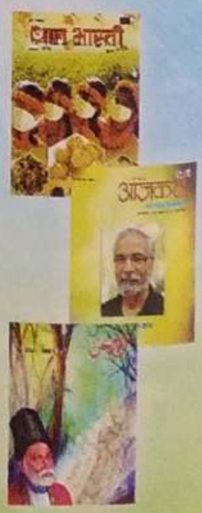

संपर्क करें :
अभिषेक चतुर्वेदी, संपादक
प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
सूचना भवन, सी जी ओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
दूरभाष : 011-24367453
ई मेल : pdjucir@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

भूकम्परोधी निर्माण

भारत की खास भू-भौतिकीय स्थिति की वजह से यहां अलग-अलग तीव्रता वाले भूकम्प का खतरा हमेशा बना रहता है। देश में कई विनाशकारी भूकम्प देखने को मिले हैं, जिनकी वजह से बड़े पैमाने पर जान-माल का नुकसान भी हुआ है। पिछली सदी में एम8 या इससे ज़्यादा तीव्रता वाले 5 भूकम्प आए। हाल के वर्षों में भी देश के अलग-अलग हिस्सों में जान-माल को क्षति पहुंचाने वाले कई भूकम्प आए हैं।

भूकम्पीय क्षेत्र (ज़ोन)

भूकम्पीय तीव्रता और बारंबारता के हिसाब से भारत को अलग-अलग ज़ोन में बांटा गया है। ज़ोन के नक्शे भूकम्प और इसकी तीव्रता के बारे में संकेत मुहैया कराते हैं और इस हिसाब से देश के अलग-अलग हिस्सों में इमारतों की डिज़ाइन के लिए मानक तय किए जा सकते हैं। ये नक्शे भूकम्प, भूगर्भ विज्ञान और वास्तु कला से जुड़ी उपलब्ध सूचना और अनुमान पर आधारित होते हैं। भारत में भूकम्पीय ज़ोन का निर्माण निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है और भूकम्प से जुड़ा अलग-अलग डेटा उपलब्ध होने के साथ ही भूकम्पीय ज़ोन में भी बदलाव होता रहता है। देश में भूकम्प के रिकॉर्ड के मद्देनज़र विशेषज्ञों ने भारत के 59 प्रतिशत ज़मीनी हिस्से को अलग-अलग तीव्रता वाले भूकम्पीय ज़ोन में बांटा है। इसके तहत, 11 प्रतिशत हिस्सा ज़्यादा जोखिम वाले ज़ोन-5 में आता है, जबकि 18 प्रतिशत हिस्सा ज़्यादा जोखिम वाले ज़ोन-4 में मौजूद है। इसी तरह, 30 प्रतिशत हिस्सा कम जोखिम वाले ज़ोन-3 के दायरे में आता है। गुवाहाटी और श्रीनगर भूकम्पीय ज़ोन-5 में आते हैं, जबकि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली भूकम्पीय ज़ोन-4 में है। मुंबई, कोलकाता और चेन्नई भूकम्पीय ज़ोन-3 में हैं। 5 लाख या इससे ज़्यादा की आबादी वाले 38 शहर इन तीन ज़ोन में मौजूद हैं।

थर्मोकोल से बनी बहु-मंज़िली इमारतें भविष्य की भूकम्प-रोधी इमारतें हो सकती हैं

भविष्य में भूकम्प-रोधी भवनों के निर्माण के लिए थर्मोकोल अहम सामग्री हो सकती है। साथ ही, इससे निर्माण सामग्री तैयार करने में ऊर्जा की बचत भी हो सकती है। आईआईटी रुड़की के शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि थर्मोकॉल या एक्सपैंडेड पॉलिस्ट्रिन (ईपीएस) का इस्तेमाल प्रबलित कंक्रीट सैंडविच में मिश्रित सामग्री के तौर पर किया जाता है और इससे 4 मंज़िल तक की इमारतों को भूकम्प-रोधी बनाया जा सकता है।

शोधकर्ताओं ने आईआईटी रुड़की के भूकम्पीय इंजीनियरिंग विभाग स्थित राष्ट्रीय भूकम्पीय जांच केंद्र (एनएसटीएफ) में थर्मोकॉल से बनी पूरी इमारत और कई तरह की दीवारों की जांच की। इन इमारतों और दीवारों का निर्माण विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के एक कार्यक्रम के तहत किया गया है। कंक्रीट दीवारों में ईपीएस के इस्तेमाल से न सिर्फ भूकम्प-रोधी क्षमता विकसित करने में मदद मिलती है, बल्कि यह सर्दी और गर्मी से भी राहत प्रदान करता है। ईपीएस के इस्तेमाल से इमारत के बाहरी और भीतरी हिस्से में ऊष्मा के अंतरण से बचाव होता है इससे गर्मी में इमारत

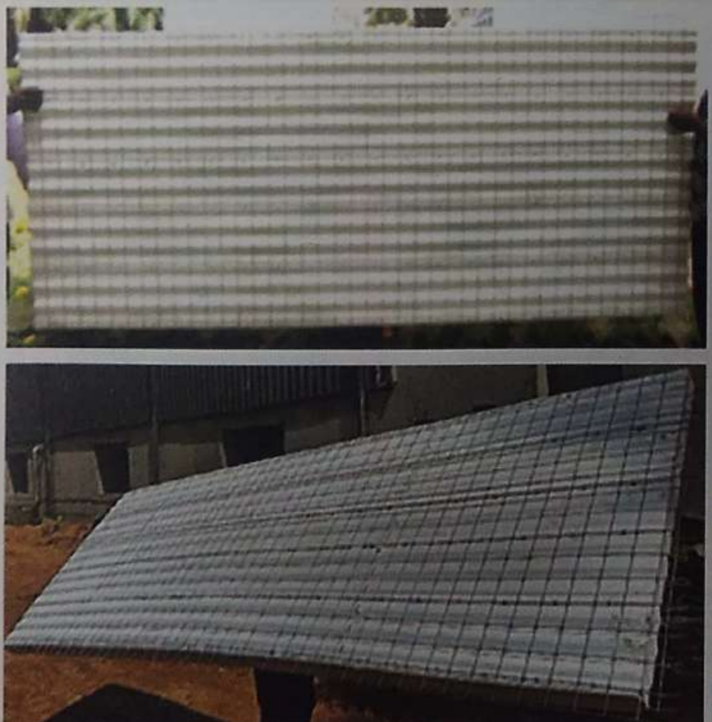

फैक्ट्री निर्मित ईपीएस कोर पैनल और मोटे तार की जाली लगाना

फैक्ट्री निर्मित ईपीएस कोर पैनल से बना इमारत का ढांचा

का आंतरिक हिस्सा ठंडा रहता है और ठंड में यह गर्म रहता है। भारत के अलग-अलग हिस्सों में, अलग-अलग मौसम में तापमान में काफी अंतर देखने को मिलता है। ऐसे में, इमारतों के ढांचे की सुरक्षा के साथ-साथ ठंड और गर्मी से बचाव का मामला भी काफी अहम है। इस तकनीक से निर्माण सामग्री और ऊर्जा की बचत संभव है और इमारतों के कार्बन उत्सर्जन को कम करने में भी मदद मिलेगी। इसके इस्तेमाल से दीवारों और फर्श/छत में बड़े पैमाने पर कंक्रीट में कमी आ सकती है। कंक्रीट की जगह बेहद हल्के ईपीए के इस्तेमाल से इमारतों में कंक्रीट की मात्रा कम होती है, जिससे इसे भूकम्प-रोधी बनाने में मदद मिलती है। इसके अलावा, सीमेंट में इस्तेमाल होने वाले प्राकृतिक संसाधनों और ऊर्जा की बचत भी की जा सकती है।

भूकम्पीय ज़ोन

भारत का नक्शा-2002

देश का तकरीबन 59 प्रतिशत भूभाग भूकम्पीय खतरे वाले इलाके के तौर पर जाना जाता है

ज़ोन	तीव्रता
ज़ोन-5	ज्यादा जोखिम वाला ज़ोन (9 से उससे ऊपर की तीव्रता वाला भूकम्पीय ज़ोन)
ज़ोन-4	ज्यादा जोखिम वाला ज़ोन (8 की तीव्रता वाला भूकम्पीय ज़ोन)
ज़ोन-3	कम जोखिम वाला ज़ोन (7 की तीव्रता वाला भूकम्पीय ज़ोन)
ज़ोन-2	कम जोखिम वाला ज़ोन (6 या उससे कम की तीव्रता वाला भूकम्पीय ज़ोन)

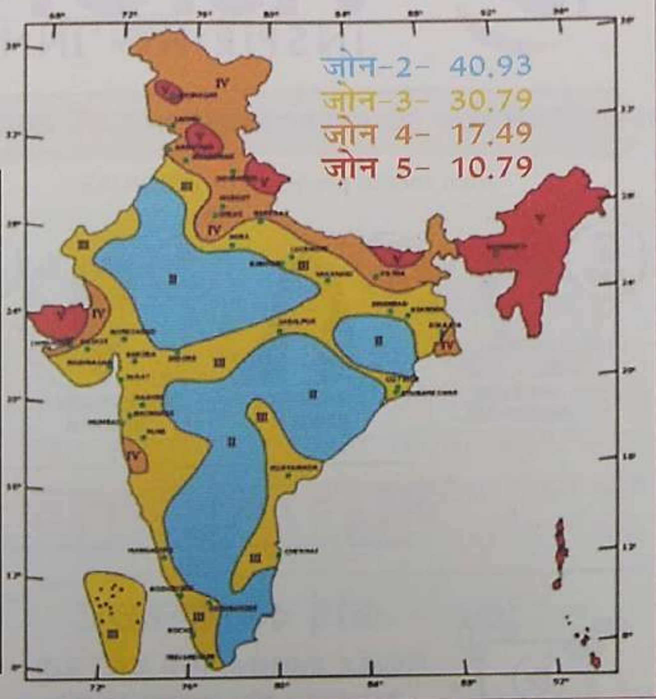

भारत के भूकम्पीय ज़ोन और संभावित तीव्रता के बारे में बताने वाला नक्शा

गैर-भूकम्परोधी इमारतों में यह सुविधा जोड़ना

शोधकर्ताओं ने पुराने गैर-भूकम्परोधी इमारतों में भी भूकम्प से बचाव का समाधान ढूंढ निकाला है। शोधकर्ताओं ने ऐसी तकनीक विकसित की है, जो भूकम्प आने पर इन इमारतों को क्षतिग्रस्त होने से बचा सकती है। साथ ही, इमारत की मज़बूती पर भी किसी तरह का असर नहीं होगा। एससी-यूआरबीएम नामक यह तकनीक भूकम्पीय क्षेत्रों वाले उन इमारतों की समस्या हल कर सकती है, जिनमें भूकम्परोधी तौर-तरीकों का इस्तेमाल नहीं किया गया है। इमारतों को मज़बूत और भूकम्परोधी बनाने की यह तकनीक न सिर्फ वास्तु कला के हिसाब से सुंदर है, बल्कि इसे स्थानीय तौर पर उपलब्ध कामगारों की मदद से आसानी से लागू किया जा सकता है।

स्रोतः एनआईडीएम (पसूका)

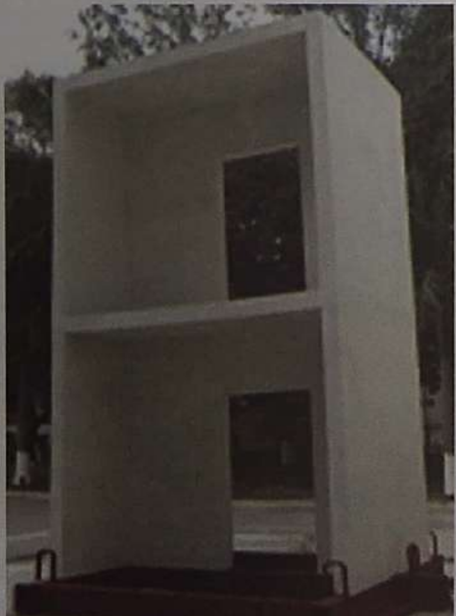

ईपीएस वाले कोर ढांचे और तैयार हो चुके इमारत के मॉडल पर कंक्रीट डालना

Scanned with OKEN Scanner

सुलभ और सुगम्य

डॉ जितेंद्रन एस

विविधतापूर्ण और मिले जुले समाज में सरकार का लक्ष्य अपने नागरिकों को सभी सुविधाओं तक समान पहुंच उपलब्ध कराना होता है। जब बात सार्वजनिक क्षेत्र के डिज़ाइनों की आती है तो शारीरिक अक्षमताओं वाले-दिव्यांगजनों के लिए बनाई जाने वाली बुनियादी ढांचागत सुविधाओं में वास्तुकला का एक भिन्न आयाम अपनाना होता है। इसके लिए जनसंख्या के उस वर्ग विशेष की आवश्यकताओं को देखते हुए अलग मानक रखने होते हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय सबके लिए समान रूप से उपयोगी और सुविधाजनक निर्माण के श्रेष्ठ डिज़ाइन बनाने की क्षमताएं विकसित करने में लगा है। भारत ने भी सबके लिए तैयार किए जाने वाले डिज़ाइनों के स्थायी लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रयास के अंतर्गत 'सुगम्य अभियान' आरंभ करके बड़ी पहल शुरू कर दी है।

हर क्षेत्र में विविधता मौजूद है। चाहे संस्कृति की बात करें या भाषा की अथवा जलवायु या स्थान विशेष की भौगोलिक स्थितियों या फिर लोगों के स्त्री-पुरुष होने अथवा उनकी योग्यताओं और क्षमताओं पर विचार करें-सभी क्षेत्रों में विविधता तो मिलेगी ही। समावेशन की भावना के अंतर्गत सभी लोगों तक सुविधाएं पहुंचाने और सामुदायिक एकजुटता का भाव जगाना होता है। जब आवासीय स्थान का मुद्दा आता है तो लोगों की जरूरतें और उनकी पसंद संसाधनों और कार्यात्मक ज़रूरतों के मुताबिक अलग-अलग हो जाती हैं। पर ज़्यादातर मामलों में आवासीय समाधान सामान्य उपभोक्ता को ध्यान में रखकर किए जाते हैं न कि विशेष प्रकार की आवश्यकताओं के अनुरूप। आवासीय स्थल के निर्माण में एक मानक दृष्टिकोण अपनाया जाता है जिसमें परंपरागत रूप से ही विशेष जरूरतों वाले लोगों पर ध्यान नहीं दिया जाता। पर जब सार्वजनिक क्षेत्र में आवासीय निर्माण का डिज़ाइन बनाना होता है तो वास्तुकला की अलग विधा का प्रयोग किया जाता है। इसमें देश के विकास के दृष्टिकोण, सरकारी बजट कोष के सूझबूझ से इस्तेमाल और जनसंख्या विशेष की आवश्यकताओं के मानक पर पूरा ध्यान केंद्रित किया जाता है। जब प्रशासक सार्वजनिक सुविधाओं और मकानों को बनाते समय सभी प्रकार की शारीरिक योग्यताओं वाले लोगों पर और उन तक सुविधाएं पहुंचाने की जरूरत पर ध्यान देते हैं तभी उसे सभी के लिए बनाया गया सार्वजनिक अथवा यूनिवर्सल डिज़ाइन माना जाता है। सार्वजनिक या समावेशी डिज़ाइन में सार्वजनिक स्थलों और साधन सुविधाओं के डिज़ाइन तैयार करते समय समग्र और व्यापक दृष्टिकोण रखना पड़ता है।

- अच्छी तरह से प्रकाशित गलियारा
- दृष्टिबाधित दिव्यांगजन के लिए स्पर्शनीय फर्श
- सहारा लेने के लिए डबल ऊँचाई रेलिंग
- व्हीलचेयर की आवाजाही के लिए चौड़ा बाधामुक्त गलियारा

लेखक केरल विश्वविद्यालय के आंबलापुझा गवर्नमेंट आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज में कॉमर्स के सहायक प्रोफेसर और रिसर्च सुपरवाइज़र हैं। वे दृष्टिबाधित दिव्यांगजन हैं। ईमेल : jithenair@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

दिव्यांग लोगों के अधिकारों पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेन्शन भी यूनिवर्सल यानी सर्वजनहिताय डिज़ाइनों के विकास को प्रेरित करता है। सभी को सुविधाओं तक पहुंच उपलब्ध कराना मौलिक अधिकार है और इसी कारण से सार्वभौम सरकार का दायित्व बनता है कि इस दिशा में आवश्यक सुधार लागू करे। सदस्य देश भी बाधाओं को सुनियोजित तरीके से समाप्त करें और लोगों की कार्यात्मक क्षमता, उनकी विशेष आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के बारे में सोचे बिना (मारिया, 2018) सभी को ध्यान में रखते हुए समावेशी समाधान खोजें। जब हम उच्च जीवन स्तर वाले लोगों को देखते हैं तो यूनिवर्सल डिज़ाइन जीवन की गुणवत्ता की दृष्टि से निश्चय ही मानक संकेतक की भूमिका निभाता है। नॉर्डिक देश और यूनिवर्सल डिज़ाइन समावेशी विकास के अच्छे उदाहरण हैं। किसी भी स्थिति के लिए समावेशी डिज़ाइन तैयार करने के तीन अहम पहलू होते हैं। पहला है समावेशी नीतियाँ बनाने वालों का सामाजिक दायित्व। दूसरा है, ऐसे बदलाव शुरू करने वाले संगठनों को पुरस्कृत करना और तीसरा अहम पहलू है इस प्रकार की पहलों को स्थायी रूप प्रदान करना।

ऐसे बदलाव लागू करने में बड़ी चुनौती नीति स्तर पर और उसके क्रियान्वयन के स्तर पर इन मानकों पर जोर देने की है। समावेशी डिज़ाइन बनाते समय लोगों को डिज़ाइन का मुख्य आधार बताना ज़रूरी है ताकि इमारतों में स्थान, सड़कें, सार्वजनिक पार्क, उद्यान आदि इस प्रकार से बनाए जाएं कि सभी लोग उनका सरलता से इस्तेमाल कर सकें और उन्हें इनके इस्तेमाल से आराम पहुंचे। समावेशी वास्तुकला पर आधारित इमारतों के निर्माण में एक अन्य बड़ी चुनौती यह होती है कि निर्माण कार्यों में लगे सभी कर्मी अपना काम तो बखूबी समझते और करते हैं लेकिन उन्हें समग्र डिज़ाइन की बारीकियों की जानकारी नहीं होती और इसी वजह से वे यूनिवर्सल डिज़ाइन के हिसाब से छोटे-छोटे बदलाव भी नहीं कर पाते। 'सुगम्य भारत' अभियान इन सभी संभावित खामियों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इतनी विविध आवश्यकताओं वाले देश में निर्माण क्षेत्र की मौजूदा चुनौतियों से निपटने की सुनियोजित प्रक्रिया अपनानी ज़रूरी है।

दृष्टिकोण और सिद्धांत

1997 में नॉर्थ कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी के आर्किटेक्टों और डिज़ाइनरों की टीम ने यूनिवर्सल डिज़ाइन के लिए कुछ सिद्धांत तय कर दिए थे। वास्तुकला के किसी भी निर्माण के डिज़ाइन की यूनिवर्सल दृष्टि से उपयुक्तता आंकने के लिए इन सिद्धांतों को कसौटी माना जा सकता है।

- वास्तुकला के किसी भी निर्माण में लोगों की व्यक्तिगत क्षमता या योग्यता को ध्यान में रखे बिना उसके हर व्यक्ति द्वारा समान रूप से इस्तेमाल किए जा सकने का सामर्थ्य होना चाहिए।
- वास्तुकला के किसी भी निर्माण में इस्तेमाल करते समय लचीलापन होना चाहिए।
- वास्तुकला के किसी भी निर्माण में सरलतापूर्वक और सहज अनुमान से इस्तेमाल करने की विशेषता होनी चाहिए।
- वास्तुकला के किसी भी डिज़ाइन में आसानी से समझ आने वाली जानकारी होनी चाहिए और उसका ले-आउट भी सरल ही होना चाहिए।
- वास्तुकला के किसी भी निर्माण में गलतियों को झेलने की क्षमता होनी चाहिए क्योंकि दिव्यांगजनों से गलती या भूलचूक हो सकती है।
- वास्तुकला के किसी भी निर्माण में इस्तेमाल और पहुंच के लिए कम से कम शारीरिक प्रयास की ज़रूरत होनी चाहिए।
- वास्तुकला के किसी भी निर्माण में इस्तेमाल की दृष्टि से पर्याप्त आकार और स्थान होना चाहिए।

यूनिवर्सल डिज़ाइन की व्यवस्था से जुड़ी समस्याओं के हिसाब से नीतिगत पहल के मामले में सुझाव है कि समय आधारित या चरणबद्ध दृष्टिकोण अपनाया जाए।

सार्वजनिक निर्माण के सभी क्षेत्रों में असल उपयोगकर्ता की फीडबैक यानी राय और सुझाव शामिल कर लेने से दिव्यांगजनों को बेहतर किस्म की प्रशासनिक सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सकती हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यूनिवर्सल डिज़ाइन तैयार करने के ऐसे सफल प्रयासों के लिए पुरस्कार और प्रोत्साहन दिए जाने चाहिए।

सुगम्य भारत अभियान

विश्व दिव्यांगता दिवस पर भारत सरकार ने 3 दिसंबर, 2015 को 'ऐक्सेसिबल इंडिया अभियान' शुरू किया था। इस देशव्यापी अभियान का उद्देश्य विकलांगजनों तक सभी सुविधाएं पहुंचाना था। इस अभियान के तीन प्रमुख अंग थे वातावरण तैयार करना, परिवहन क्षेत्र और आईसीटी इकोसिस्टम बनाना।

Scanned with OKEN Scanner

निर्मित पर्यावरण पहुँच

शारीरिक दृष्टि से सभी सुविधाएं हर व्यक्ति की पहुंच में लाना न केवल दिव्यांगजनों के लिए बल्कि सभी के लिए लाभकारी है। स्कूल, चिकित्सा सुविधाएं और कार्यस्थल सहित सभी आउटडोर और इनडोर सुविधाओं में आने वाली बाधाएं और रुकावटें दूर करने के उपाय किए जा रहे हैं। आगे चलकर इनमें सड़क, फुटपाथ, पार्क और उद्यान सहित सभी सार्वजनिक स्थान भी शामिल कर लिए जाएंगे।

स्कूल, चिकित्सा सुविधाएं और कार्यस्थल सहित सभी आउटडोर और इनडोर सुविधाओं में आने वाली बाधाएं और रुकावटें दूर करने के उपाय किए जा रहे हैं। आगे चलकर इनमें सड़क, फुटपाथ, पार्क और उद्यान सहित सभी सार्वजनिक स्थान भी शामिल कर लिए जाएंगे।

सुगमतापूर्ण पहुँच वाली सरकारी इमारत वही होती है जहां किसी भी दिव्यांग को प्रवेश करने और वहां की सभी सुविधाएं इस्तेमाल करने में कोई परेशानी या रुकावट महसूस न हो। इनमें निर्माण व्यवस्था से जुड़ी सेवाएं, सीढ़ियां और रैंप, कॉरिडोर, प्रवेश द्वार, आपात निकास और पार्किंग तथा लाइटिंग (प्रकाश व्यवस्था), संकेत चिह्न, अलार्म सिस्टम और टॉयलेट (शौचालय) जैसी इनडोर और आउटडोर सुविधाएं भी शामिल हैं। इस बारे में विशेष तकनीकी निर्देश आईएसओ 2542:2011 में दिए गए हैं, भवन निर्माण-ऐक्सेसिबिलिटी एंड यूज़ेबिलिटी ऑफ द बिल्ट एनवायर्नमेंट अर्थात् भवन निर्माण तक पहुंच और उसे इस्तेमाल करने की सुविधा, इसमें निर्माण, असेंबली, हिस्से पुर्जों और फिटिंग्स के बारे में भी शर्तें और सुझाव शामिल हैं।

इस कार्यक्रम में निर्दिष्ट किया गया है कि इमारतों की पहुंच क्षमता आंकने के लिए वार्षिक ऐक्सेसिबलिटी ऑडिट होने चाहिए ताकि निश्चित हो सके कि इमारत में मान्य मानकों का ठीक से परिपालन किया गया है। दिव्यांगजन अधिकारिता विभाग भारत के संदर्भ में पहली बार इस आशय का व्यापक कोड तैयार करने में लगा है और यूनिवर्सल डिज़ाइन बनाने की इस प्रक्रिया में 'सुगम्य भारत अभियान' ने उल्लेखनीय योगदान किया है।

मानवनिर्मित भौतिक पर्यावरण से विकलांगों के जीवन में काफी दबाव पड़ रहा है। मौटे तौर पर दिव्यांगता को सामाजिक समस्या माना जाता है इसलिए स्वतंत्र रूप से जीने का अधिकार किसी प्रकार की दया या अहसान नहीं है बल्कि सम्मानित ढंग से जीने का प्राकृतिक अधिकार है। वास्तु,शिल्प के मौजूदा डिज़ाइनों में लोगों की विविध दिव्यांगताओं की अनदेखी कर दी जाती है। वे लोग रोशनी की अपर्याप्त व्यवस्था झेलते हुए ऊबड़खाबड़ पगडंडियों पर ठोकरे खाते हैं और खूबसूरती के लिए बनाई गई अनगिनत घुमावदार सीढ़िया चढ़ने का कष्ट सहते हैं। इस प्रकार वे किसी भी समय दुर्घटना का शिकार बन सकते हैं। इसलिए हमें अपने स्कूल-कॉलेजों, सड़कों, पार्को, संग्रहालयों, रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों और सरकारी कार्यालय आदि के बारे में वास्तुकला की नई कार्ययोजना बनाकर यूनिवर्सल डिज़ाइन अपनाने होंगे। बड़े पैमाने पर लागू करने की विचार-प्रक्रिया चलाकर आगे बढ़ना होगा। डिज़ाइनरों और आर्किटेक्टों को समतावादी धारणा लागू करनी होगी। दिव्यांगता किसी भी समाज या वर्ग में हो सकने वाली समस्या है। वास्तुकला के विशिष्ट मॉडलों में दिव्यांगजनों को ही नहीं बल्कि बच्चों या वृद्धजनों को भी जोखिमभरी बाधाओं की समस्या से जूझना पड़ सकता है। इसी ख्याल से विभिन्न स्तरों पर समावेशी योजनाएं चलाई गई हैं। यूनिसर्वल डिज़ाइनों से अप्रत्यक्ष रूप से सरकार को भी देश के जाने-माने पर्यटन स्थलों में विश्व समुदाय को आकर्षित करने में मदद मिलेगी। ■

संदर्भ

1. मारिया मोंटेफस्को (Maria Montefusco) maria.montefusco@nordicwelfare.org प्रकाशक : एवा पर्सोन गोरानसन

प्रकाशन विभाग के विक्रय केंद्र

नई दिल्ली	पुस्तक दीर्घा, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड	110003	011-24367260
नवी मुंबई	701, सी- विंग, सातवीं मंज़िल, केंद्रीय सदन, बेलापुर	400614	022-27570686
कोलकाता	8, एसप्लानेड ईस्ट	700069	033-22488030
चेन्नई	'ए' विंग, राजाजी भवन, बसंत नगर	600090	044-24917673
तिरुअनंतपुरम	प्रेस रोड, नयी गवर्नमेंट प्रेस के निकट	695001	0471-2330650
हैदराबाद	कमरा सं 204, दूसरा तल, सीजीओ टावर, कवाड़ीगुड़ा, सिकंदराबाद	500080	040-27535383
बेंगलुरु	फर्स्ट फ्लोर, 'एफ' विंग, केंद्रीय सदन, कोरामंगला	560034	080-25537244
पटना	बिहार राज्य कोऑपरेटिव बैंक भवन, अशोक राजपथ	800004	0612-2675823
लखनऊ	हॉल सं-1, दूसरा तल, केंद्रीय भवन, क्षेत्र-एच, अलीगंज	226024	0522-2325455
अहमदाबाद	4-सी, नेप्चून टॉवर, चौथी मंज़िल, नेहरू ब्रिज कॉर्नर, आश्रम रोड	380009	079-26588669
गुवाहाटी	असम खादी एवं ग्रामीण उद्योग बोर्ड, भूतल, एमआरडी रोड, चांदमारी	781003	0361.2668237

Scanned with OKEN Scanner

स्वास्थ्य के लिये वास्तुकला

डॉ राजा सिंह

हम अपनी इमारतों को आकार देते हैं और बाद में यही इमारतें हमें अपने अनुसार ढालती हैं
- विंस्टन चर्चिल

मौजूदा समय में हम अपना काफी वक्त बंद कमरों में गुजारते हैं। पहले हमारे जीवन का प्रकृति के साथ लगातार तालमेल था। हमारी दिनचर्या सूरज उगने से जुड़ी थी। हमारे जीवन की लय सूर्य के साथ कदमताल करती थी। लेकिन हम अपनी मौजूदा जीवनशैली में इंसान को प्रतिदिन संचालित करने वाली इमारती सुविधाओं और उपयोगिताओं पर ज्यादा-से-ज्यादा निर्भर होते जा रहे हैं। इन सुविधाओं में प्रकाश और वायु संचार के कृत्रिम साधन शामिल हैं। बेशक, हमने बंद कमरे की जिस जीवनशैली को चुना है उसे छोड़ना संभव नहीं होगा। लेकिन स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती की देखभाल के लिये उसमें सुधार तो किया ही जा सकता है। स्वास्थ्य के बारे में हमारी आम धारणा का संबंध सिर्फ रोगों से है। लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने इसकी एक ज्यादा व्यापक परिभाषा दी है। उसके अनुसार स्वास्थ्य का मतलब सिर्फ रोगों और दुर्बलता की अनुपस्थिति ही नहीं है। इसमें संपूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक सेहत भी शामिल है। यह परिभाषा हमारी पुरानी वैश्विक समझ को तोड़ती है जिसमें सिर्फ रोगों के निवारण पर ध्यान केंद्रित किया गया था। वास्तव में स्वास्थ्य के दायरे में उपशमन, संवर्द्धन, उपचार, पुनर्वास और देखभाल शामिल हैं। हमारा देश आयुष्मान भारत के तहत इस दिशा में कदम उठाते हुए स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती केंद्रों की स्थापना कर रहा है। हमने उपचारात्मक स्वास्थ्यसेवा के संकुचित दृष्टिकोण से आगे बढ़ते हुए इसमें तंदुरुस्ती को भी शामिल किया है।

1914 में लखनऊ में अखिल भारतीय स्वच्छता सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इसमें स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के सिद्धांतों को शामिल करते हुए भवन और नगर योजना के मौजूदा प्रतिमान की बुनियाद रखी गयी। इसमें कहा गया कि गलियों में समुचित

'ओपन जिम' प्रकृति के बीच कसरत करने की आदत डाल रहे हैं

लेखक नयी दिल्ली के स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर में वास्तुकला विभाग में विजिटिंग फैकल्टी हैं। ईमेल : rajaphd@spa.ac.in

Scanned with OKEN Scanner

गुजरात में केवड़िया रेलवे स्टेशन ऊर्जा कुशल प्रकाश व्यवस्था से सुसज्जित है और ग्रीन बिल्डिंग सर्टिफिकेशन वाला देश का पहला रेलवे स्टेशन है

रोशनी होनी चाहिये। सड़कों की चौड़ाई प्रकाश की उपलब्धता के अनुसार रखी जानी चाहिये। इससे भवनों के अंदरूनी हिस्सों में सूरज की रोशनी की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकेगी। यह सिद्धांत भारत में बाद में निर्धारित सभी शहरी नियमों और नगर योजनाओं का आधार है। सूर्य के प्रकाश और प्राकृतिक वायु संचार को समग्र उपचार के रूप में देखा गया है। इसे तपेदिक की दवा सामने आने से काफी पहले से ही इस तरह के रोगों का उपचार माना गया है। कहा जाता है कि वास्तुकला में आधुनिकतावादी आंदोलन सिर्फ औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप ही विकसित नहीं हुआ। यह पुराने जमाने में बीमारियों का समाधान माने गये आरोग्य आश्रमों का भी नतीजा था। इस सम्मेलन में मच्छर मुक्त मकान को प्रदर्शित किया गया। इसके बाद ही मकानों में मच्छरों का प्रवेश रोकने के लिये खिड़कियों में जाली लगाने जैसा सामान्य उपाय किया जाना लगा। सुविचारित वास्तुकला इस तरह के बुनियादी समाधानों को सामने ला सकती है।

हम भारतीय विश्व के जिन महान शहरों में साल-दर-साल सैलानी या प्रवासी के तौर पर जाते रहे हैं उनका इतिहास हमें हैरान कर सकता है। लंदन और पेरिस को बड़े पैमाने पर आग और बदबू जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। हम विकासशील देश के रूप में स्वास्थ्य, स्वच्छता और रोगों से संबंधित जिन समस्याओं का वर्तमान में सामना कर रहे हैं उनसे इन शहरों को पहले ही गुजरना पड़ा था। पश्चिम के शहरी प्रयोगों के परीक्षित नतीजे हमारे लिये मददगार हो सकते हैं। हम नगर योजना और स्वास्थ्य के अपने उस पारंपरिक ज्ञान का भी उपयोग कर सकते हैं जिसे हमने समय बीतने के साथ ही भुला दिया है।

भारत को स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के उपायों के क्रम में असंक्रामक और असंचारी रोगों के संकट का भी सामना करना पड़ रहा है। इस तरह की बीमारियों में हृदय रोग और कैंसर सबसे ऊपर है। लेकिन सवाल उठता है कि इसका वास्तुकला से क्या संबंध है? वास्तव में, अगर समुचित ध्यान दिया जाये तो वास्तुकला और नगर योजना असंचारी रोगों को घटाने में काफी मददगार हो सकती है। हमारे शहरी विन्यास में घरों के नजदीक पार्क जैसे वर्जिश और मनोरंजन के स्थलों की मौजूदगी स्वस्थ जीवन की कुंजी बन सकती है। हृदय रोग से बचने के लिये जिस सक्रिय जीवन शैली की जरूरत होती है उसमें साइकिल ट्रैक, साइकिलों की उपलब्धता, मोटर वाहन वर्जित क्षेत्र और हरित पट्टी काफी मददगार हैं। शारीरिक और मनोदैहिक कारणों पर गौर करें तो वास्तुकला और कैंसर के बीच भी संबंध है। वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों से लंबे समय तक संपर्क कैंसरकारी साबित हो सकता है। इसलिये भवन निर्माण में अकैंसरकारी पेंटों, फर्नीचर पॉलिशों और गृह सामग्रियों

Scanned with OKEN Scanner

का इस्तेमाल जरूरी है ताकि वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों का जमाव रोका जा सके। जहां तक मनौदैहिक नज़रिये का सवाल है भवनों को आंखों और मन को सुकून देने वाला होना चाहिये। एक अच्छी डिज़ाइन वाली इमारत कामकाज की रोजमर्रा की नीरसता और तनाव को दूर करती है।

भारत ने हाल के वर्षों में स्थापत्य में काफी प्रगति की है। हर जगह विशाल महत्वाकांक्षी परियोजनाएं दिखायी देती हैं जिनसे हमारी पहचान को अभूतपूर्व ऊंचाई मिलती है। हम दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमाएं और विशाल सम्मेलन केंद्र बना रहे हैं। ये केंद्र हमें अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों की मेजबानी करने में सक्षम बनाते हैं जिससे भारत को विश्व में अपना उचित स्थान मिल रहा है। इन विशाल सामुदायिक स्थलों के निर्माण में आंतरिक पर्यावरणीय गुणवत्ता और तंदुरुस्ती का काफी ध्यान रखा जा रहा है। इन इमारतों के अंदर की हवा को बाहरी वायु के समान ही महत्व देने की जरूरत है। संक्रमण का हवा से प्रसार रोकने और व्यावसायिक स्वास्थ्य के लिये हम अब आंतरिक वायु मानक तैयार कर रहे हैं। भवनों के अंदरूनी हिस्सों को स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के लिहाज से अनुकूल बनाने के लिये समुचित उपाय किये जा रहे हैं।

हमारे शहरी विन्यास में घरों के नजदीक पार्क जैसे वर्जिश और मनोरंजन के स्थलों की मौजूदगी स्वस्थ जीवन की कुंजी बन सकती है। हृदय रोग से बचने के लिये जिस सक्रिय जीवन शैली की जरूरत होती है उसमें साइकिल ट्रैक, साइकिलों की उपलब्धता, मोटर वाहन वर्जित क्षेत्र और हरित पट्टी काफी मददगार हैं। शारीरिक और मनोदैहिक कारणों पर गौर करें तो वास्तुकला और कैंसर के बीच भी संबंध है। वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों से लंबे समय तक संपर्क कैंसरकारी साबित हो सकता है। इसलिये भवन निर्माण में अकैंसरकारी पेंटों, फर्नीचर पॉलिशों और गृह सामग्रियों का इस्तेमाल जरूरी है ताकि वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों का जमाव रोका जा सके।

सभ्यता की जीत आम नागरिकों के लिये अच्छी गुणवत्ता वाले मकानों के प्रावधान में निहित है। इसलिये इन मकानों की योजना और निर्माण पर राष्ट्रीय महत्व की इमारतों जितना ही ध्यान दिया जाना चाहिये। सरकार प्रधानमंत्री आवास योजना के जरिये शहरी गरीबों को किफायती मकान मुहैया करा रही है। गरीबों के लिये विश्व स्तरीय मकानों के साथ ही भव्य सरकारी इमारतों का निर्माण एक महान राष्ट्र के संतुलित विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

सबसे ज्यादा जरूरी है कि हम स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के लिये हमारी प्रतिबद्धता को मजबूत करें। हर इमारत को स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया जाना चाहिये। इसका राष्ट्र के संपूर्ण स्वास्थ्य और सेहत पर प्रवर्धक प्रभाव पड़ेगा। इसके लिये भारतीय मानक ब्यूरो (आईएसआई) की सभी अत्याधुनिक भवन संहिताओं और मानकों का अनुपालन उपयोगी साबित हो सकता है। इनमें राष्ट्रीय भवन संहिता 2016, एसपी 41 जैसी उपसंहिताएं और भवनों की कार्यात्मक आवश्यकताओं का हैंडबुक शामिल है। भवनों में सुखद प्रकाश व्यवस्था काफी महत्वपूर्ण है। इस बारे में भारत में एक प्रकाश व्यवस्था संहिता भी बनायी गयी है। स्वास्थ्य के अनुकूल इमारतों के लिये हमें बाहर देखने के बजाय अपने अंदर झांकने की जरूरत है। भारतीय मानकों के वैकल्पिक हिस्सों का भी अनुपालन कर रहे वास्तुकार और निर्माता सुरक्षित, स्वास्थ्य के लिये अनुकूल और मजबूत भवनों का निर्माण सुनिश्चित कर रहे हैं।

हम एक राष्ट्र के तौर पर सेहत के लिये आवश्यकताओं को पूरा करने के लिहाज से विश्व का मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं। प्राचीन ज्ञान और हमारे मौजूदा संस्थान इन आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं। वास्तुकला और नगर योजना भवनों और शहरों के निवासियों के लिये स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के मुख्य तत्व हैं। इमारत और शहर की हर नयी योजना के साथ इस तथ्य का पुनर्संधान किया जाना चाहिये। ■

झुग्गी-झोपड़ी निवासी लाभार्थियों के लिए दिल्ली की भूमिहीन कैंप में 3024 रेडी टू मूव फ्लैट्स

ऐतिहासिक धरोहर सहेजता सालारजंग संग्रहालय

एफ एम सलीम

सालारजंग संग्रहालय न केवल पुरातन एवं अनोखी वस्तुओं के संग्रहण के लिए लोकप्रिय है, बल्कि कला, संस्कृति और शैक्षणिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में भी उभरा है। कला प्रदर्शनियों, नृत्य, संगीत एवं रंगमंचीय आयोजनों के लिए भी यहाँ के सभागार महत्वपूर्ण केंद्र माने जाते हैं। यहां विश्व का सबसे बड़ा निजी संग्रह है जहां निज़ाम के नवाबीकाल की बेशक़ीमती और हैरतअंगेज़ विरासत को प्रदर्शित किया गया है।

दुर्लभ और अनोखी वस्तुओं का संग्रहण मनुष्य की पुरानी आदतों में से एक है। इनसान चीज़ों के बहाने अपनी स्मृतियों को समेटता रहता है। उसकी इसी आदत ने संग्रहालय की संकल्पना को जन्म दिया है। आज दुनिया भर में दुर्लभ, अनोखी व अजूबा वस्तुओं के संग्रहालय सैलानियों के आकर्षण का केंद्र हैं। यह केंद्र न केवल मानव, मानवता और उसकी रुचियों का मुंह बोलता इतिहास है, बल्कि उसकी विकास यात्रा का भी परिचय देते हैं। हैदराबाद का सालारजंग संग्रहालय भी ऐसे ही केंद्रों में से एक है, जो एक ही व्यक्ति द्वारा संग्रहित वस्तुओं का अपनी तरह का एकमात्र संग्रहालय है।

कोविड महामारी के बाद जहाँ दुनिया भर में पर्यटन की दुनिया फिर से अपनी सामान्य स्थिति की ओर लौट रही है, वहीं पर्यटन प्रेमी भी भ्रमण पर निकलने लगे हैं। संग्रहालयों में भी सैलानियों की संख्या बढ़ने लगी है। सालारजंग संग्रहालय भी बीते छह सात महीनों में अपनी सामान्य स्थिति की ओर लौट रहा है। यहाँ प्रतिदिन जहाँ दो से तीन हज़ार लोग आते हैं, वहीं छुट्टियों के दिन यह संख्या लगभग 6 से 7 हज़ार तक पहुंच जाती है। संग्रहालय ने हाल ही में दो गैलरियों की पुनर्स्थापना की है। इनमें भारतीय कांस्य और दक्षिण भारत की लघु कलाएं शामिल हैं। इनका उद्घाटन राज्यपाल डॉ तमिलिसै सौंदरराजन ने किया।

भारतीय कांस्य गैलरी पहली बार 1968 में बनायी गयी थी। इस गैलरी में कुल 108 वस्तुओं को प्रदर्शन के लिए रखा गया है। यह भारत के विभिन्न हिस्सों के साथ-साथ नेपाल और तिब्बत से संग्रहित की गयी हैं। 9वीं शताब्दी ईस्वी के पल्लव काल से संबंधित भगवान विष्णु की एक शानदार छवि इस गैलरी में प्रदर्शित है। 14वीं शताब्दी की विजयनगर काल की चार फुट ऊंची नटराज की प्रतिमा, और भगवान शिव जी की पत्नी पार्वती, 13वीं शताब्दी की चोल कांस्य मूर्ति, जो एक आसन पर खड़ी है, उत्कृष्ट कृतियों में से एक है।

लेखक हैदराबाद, तेलंगाना में वरिष्ठ पत्रकार हैं। ईमेल : fmsaleem2@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

अन्य कलाकृतियाँ भी मूर्ति कला की उत्तम कृतियाँ हैं। पार्श्वनाथ जी की 8वीं शताब्दी की एक उत्कृष्ट कांस्य प्रतिमा भी दर्शनीय शामिल है, जिसमें नौ सिरों वाला कोबरा उनके सिर पर एक छत्र बनाता है।

दक्षिण भारतीय लघु कला दीर्घा में 138 कलावस्तुओं का संग्रहण है। विशेष रूप से यह कलाकृतियाँ तमिलनाडु, केरल, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक की लकड़ी की नक्काशी पर केंद्रित हैं। देवी-देवताओं की चंदन की छवियों, शीशम के फर्नीचर, पीतल की पट्टियों के साथ खूबसूरती से नक्काशीदार अलमारियाँ, घड़ी के केस, दरवाजे के पैनल और स्क्रीन का एक समृद्ध संग्रह इस गैलरी में प्रदर्शित किया गया है। गैलरी में लाख के फर्नीचर और पर्दे भी हैं जो आमतौर पर चमकीले रंग के होते हैं और फूलों के डिज़ाइन के साथ चित्रित होते हैं। तेलंगाना 'निर्मल' कला के उत्तम नमूने भी इसमें प्रदर्शित हैं।

खास बात यह है कि सालारजंग संग्रहालय न केवल पुरातन एवं अनोखी वस्तुओं के संग्रहण के लिए लोकप्रिय है, बल्कि कला, संस्कृति और शैक्षणिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में भी उभरा है। कला प्रदर्शनियों, नृत्य, संगीत एवं रंगमंचीय आयोजनों के लिए भी यहाँ के सभागार महत्वपूर्ण केंद्र माने जाते हैं। हाल ही में कुचिपुड़ी नृत्यांगना पूजिता कृष्णा द्वारा दो दिवसीय फीट ऑन अर्थ फेस्टिवल का आयोजन किया गया था। भारतीय कला और संस्कृति के साथ लोगों को जोड़ने के लिए केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय द्वारा लगभग 20 दिन तक अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय दिवस के अंतर्गत कई तरह की गतिविधियाँ आयोजित की गयीं।

उल्लेखनीय है कि सलारजंग संग्रहालय की स्थापना 1951 में हुई थी। इसके संस्थापक सलारजंग का परिवार दक्खिनी इतिहास के सबसे प्रतिष्ठित परिवारों में से एक माना जाता है। इस परिवार के पांच सदस्य तत्कालीन निज़ाम शासन में प्रधानमंत्री रह चुके हैं। सालारजंग तृतीय नवाब मीर यूसुफ अली खान 1912 में प्रधानमंत्री नियुक्त किये गये थे। उन्होंने 1914 में प्रधानमंत्री का पद छोड़ दिया और अपने जीवन को अपनी कला और साहित्य के खजाने को समृद्ध करने के लिए समर्पित कर दिया। उनके महल दीवान ड्योढ़ी में विश्व के कोनों-कोनों से कलात्मक वस्तुओं के विक्रेताओं का तांता लगा रहता था। विदेशों में उनके अपने एजेंट थे, जो उन्हें प्रसिद्ध प्राचीन व्यापारियों से कलात्मक वस्तुओं के कैटलॉग और सूचियां भेजते रहते थे। सालारजंग ने यूरोप और मध्य पूर्वी देशों की यात्रा कर वहाँ से प्राचीन वस्तुओं, दुर्लभ पांडुलिपियों, पुस्तकों और कलाकृतियों का संग्रहण किया। 16 दिसंबर, 1951 को सलारजंग के घर दीवान ड्योढ़ी को ही संग्रहालय घोषित कर दिया गया। 1961 में इसे भारत सरकार ने राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया। इसका वर्तमान भवन भी ऐतिहासिक महत्व रखता है, जहाँ यह 1968 से संचालित है। इसका उद्घाटन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ ज़ाकिर हुसैन द्वारा किया गया था।

सलारजंग संग्रहालय में यूरोपीय, एशियाई और सुदूर पूर्वी देशों की विभिन्न उत्कृष्ट कृतियों के अलावा रोम की वील्ड रेबेका की एक संगमरमर की मूर्ति, लुईस-16 द्वारा टीपू सुल्तान को उपहार में दी गयी हाथी दांत से बनी कुर्सियां, हरे पत्थर से बनी रेहल (बुक-स्टैंड) (इस पर 'शमसुद्दीन अल्तमश' का नाम लिखा है), एक निशानेबाज की अंगूठी (इस पर मुग़ल सम्राट शाहजहां का नाम लिखा है), हरे पत्थर से कीमती रत्नों से सजा एक बड़ा चाकू और फल काटनेवाला एक चाकू (इनके बारे में दावा किया जाता है कि ये क्रमश: जहांगीर और नूरजहां के हैं) जैसी वस्तुएं दर्शनीय हैं। कृष्ण-लीला आधारित कलाकारियों के भारतीय लघु चित्रों का अद्‌भुत संग्रह, फिरदौसी के 'शाहनामा' की पांडुलिपि, भारत में लिखा हुआ एक प्राचीन चिकित्सा विश्वकोश भी कुछ खास दर्शकों को अपनी ओर खींचता है।

संग्रहालय का सबसे बड़ा आकर्षण इसका घड़ी कक्ष है, जिसमें फ्रांस, इंग्लैंड, स्विट्ज़रलैंड, जर्मनी, हॉलैंड इत्यादि जैसे कई यूरोपीय देशों की घड़ियाँ हैं और संग्रहालय की संगीत घड़ी के बारे में कहा जाता है कि इसे सलारजंग तृतीय ने इंग्लैंड के कुक एंड केल्वे से खरीदा था। इसमें हर घंटे एक टाइमकीपर इसके ऊपरी डेक से निकलता है और समय के अनुसार डंका बजाकर लौट जाता है। कहा जा सकता है कि आज जब सूचना प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के युग में मनोरंजन के कई सारे स्रोत हैं, फिर भी हज़ारों की संख्या में सैलानी सालारजंग संग्रहालय आते हैं और स्मृतियों को सहेजते हुए अपनी जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास करते हैं। ■

Scanned with OKEN Scanner

भारत की जी-20 अध्यक्षताः महत्व और अवसर

भारत की जी-20 अध्यक्षता समावेशी, महत्वाकांक्षी, निर्णायक और कार्रवाई-उन्मुख होगी....अगले साल हम यह सुनिश्चित करने का प्रयास करेंगे कि जी-20 नए विचारों की परिकल्पना करने और सामूहिक कार्रवाई में तेजी लाने के लिए एक वैश्विक प्रमुख प्रेरक के रूप में कार्य करे, साथ में,...हम जी-20 को वैश्विक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक बनाएंगे।'

- 16 नवंबर 2022 को बाली में जी-20 शिखर सम्मेलन के समापन सत्र में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की टिप्पणी

बीस देशों का समूह (जी-20) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का प्रमुख मंच है। यह सभी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक संरचना और संचालन को कार्यरूप देने और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जी-20 सदस्य वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85 प्रतिशत, वैश्विक व्यापार का 75 प्रतिशत से अधिक और विश्व की लगभग दो-तिहाई आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भारत की अध्यक्षता

जी-20 के अध्यक्ष के रूप में भारत का कार्यकाल 01 दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक होगा। भारत के लिए यह, अंतरराष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर वैश्विक एजेंडे में योगदान करने का एक अनूठा अवसर है। भारत एक ओर विकसित देशों के साथ घनिष्ठ संबंध रखता है, वहीं विकासशील देशों के विचारों को अच्छी तरह समझता और अभिव्यक्त करता है। प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण से निर्देशित, भारत की विदेश नीति वैश्विक मंच पर नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए विकसित होती रही है।

बीस देशों का समूह- जी-20 अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग का प्रमुख मंच है। यह सभी महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय आर्थिक मुद्दों पर वैश्विक संरचना तथा संचालन का निर्धारण करने और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

जी-20 का अध्यक्ष अपने कार्यकाल के लिए एजेंडा निर्धारित करता है, विषयों और पहचान के क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है, चर्चा करता है और परिणाम के दस्तावेज प्रदान करता है। भारत ऊर्जा, कृषि, व्यापार, डिजिटल अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य और पर्यावरण से लेकर रोजगार, पर्यटन, भ्रष्टाचार निवारण तथा महिला सशक्तीकरण और सबसे कमजोर तथा वंचितों को प्रभावित करने वाले क्षेत्रों सहित विविध सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्राथमिकताओं के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग की पहचान करेगा, उसे उजागर करेगा, और मजबूत करेगा।

जी-20 का मंत्र है- एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य। भारत के ये विचार और मूल्य ही विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं। भारत का अध्यक्ष पद पर आसीन होना न केवल देश के लिए यादगार बनेगा, बल्कि भविष्य इसे विश्व के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में भी आंकेगा।

नई दिल्ली शिखर सम्मेलन

जी-20 के राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों का 18वां शिखर सम्मेलन 9-10 सितंबर 2023 को नई दिल्ली में होगा। यह शिखर सम्मेलन मंत्रियों, वरिष्ठ अधिकारियों और नागरिक समाज के बीच पूरे वर्ष आयोजित होने वाली सभी जी-20 प्रक्रियाओं और बैठकों की परिणति होगी। नई दिल्ली शिखर सम्मेलन के समापन पर जी-20 नेताओं की घोषणा को मंजूरी दी जाएगी, जिसमें संबंधित मंत्रिस्तरीय और कार्य समूह की बैठकों के दौरान की गई चर्चा और सहमत प्राथमिकताओं के प्रति नेताओं की प्रतिबद्धता शामिल होगी।

इंडोनेशिया के राष्ट्रपति श्री जोको विडोडो 16 नवंबर 2022 को बाली में जी-20 शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को सांकेतिक रूप से जी-20 की अध्यक्षता सौंपते हुए

Scanned with OKEN Scanner

जी-20 की उत्पत्ति

जी-20 की स्थापना वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा के लिए वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए एक मंच के रूप में, एशियाई वित्तीय संकट के बाद 1999 में की गई थी। 2007 के वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संकट के मद्देनजर इसे राज्य/सरकार के प्रमुखों के स्तर पर उन्नत किया गया था, और 2009 में, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के लिए प्रमुख मंच के रूप में प्राधिकृत किया गया था।

जी-20 ने शुरुआत में बड़े पैमाने पर व्यापक आर्थिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया, लेकिन इसके बाद से इसने व्यापार, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा, पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और भ्रष्टाचार निवारण सहित अन्य विषयों के लिए अपने एजेंडे का विस्तार किया।

जी-20 सदस्य

जी-20 समूह में 19 देश (अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, ब्रिटेन, अमरीका) और यूरोपीय संघ शामिल हैं।

भारत, जी-20 अध्यक्ष के रूप में, नियमित अंतर्राष्ट्रीय संगठनों (संयुक्त राष्ट्र, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व व्यापार संगठन, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन, एफएसबी तथा ओईसीडी) और क्षेत्रीय संगठनों (एयू, एयूडीए-नेपाड और आसियान) के अध्यक्षों के अलावा, आईएसए, सीडीआरआई और एडीबी को अतिथि अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के रूप में आमंत्रित करेगा।

जी-20 का कार्य

1. जी-20 अध्यक्ष एक वर्ष के लिए जी-20 एजेंडा चलाता है और शिखर सम्मेलन की मेजबानी करता है। जी-20 में दो समानांतर ट्रैक होते हैं: वित्त ट्रैक और शेरपा ट्रैक। वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक के गवर्नर वित्त ट्रैक का नेतृत्व करते हैं जबकि शेरपा, शेरपा ट्रैक का नेतृत्व करते हैं।
2. इन दो ट्रैक के भीतर, विषयगत रूप से अनुकूलित कार्य समूह हैं जिनमें सदस्यों के प्रासंगिक मंत्रालयों के साथ-साथ आमंत्रित/अतिथि देशों और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। शेरपा वर्ष के दौरान वार्ता की देखरेख करते हैं, शिखर सम्मेलन के लिए एजेंडा मदों पर चर्चा करते हैं और जी-20 के मूल कार्य का समन्वय करते हैं।
3. कई ऐसे समूह हैं जो जी-20 देशों के प्रबुद्ध समाज, सांसदों, थिंक टैंक, महिलाओं, युवाओं, श्रम, व्यवसायों और शोधकर्ताओं को एक साथ लाते हैं।
4. समूह के पास स्थायी सचिवालय नहीं है। अध्यक्षता पिछले, वर्तमान और आगामी अध्यक्ष द्वारा समर्थित होती हैं। भारत की अध्यक्षता के दौरान, इस तिकड़ी के देश- इंडोनेशिया, भारत और ब्राजील हैं।

प्रतीक चिह्न और विषय

जी-20 प्रतीक चिह्न भारत के राष्ट्रीय ध्वज के जीवंत रंगों - केसरिया, सफेद, हरा, और नीला से प्रेरणा लेता है। यह भारत के राष्ट्रीय फूल कमल के साथ पृथ्वी ग्रह को जोड़ता है जो चुनौतियों के बीच विकास को दर्शाता है। पृथ्वी जीवन के प्रति भारत के ग्रह-हितैषी दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसकी प्रकृति के साथ पूर्ण समरसता है।

G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

भारत की जी-20 अध्यक्षता का विषय - 'वसुधैव कुटुम्बकम' या 'एक पृथ्वी एक परिवार एक भविष्य' को महाउपनिषद के प्राचीन संस्कृत पाठ से लिया गया है। यह विषय अनिवार्य रूप से, सभी जीवित वस्तुओं-मानव जीवन, पशु, पौधे और सूक्ष्मजीव के महत्व और पृथ्वी पर तथा व्यापक ब्रह्मांड में उनके परस्पर संबंध की पुष्टि करता है। यह विषय व्यक्तिगत जीवन शैली के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास के स्तर पर, इससे संबद्ध, पर्यावरणीय रूप से संधारणीय और जिम्मेदार विकल्पों के साथ, लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवन शैली) को भी उजागर करता है।

इसका प्रतीक चिह्न और विषय मिलकर भारत की जी-20 की अध्यक्षता का प्रभावशाली संदेश देते हैं, जो दुनिया में सभी के लिए न्यायसंगत और एकसमान विकास के लिए प्रयासरत है। ■

स्रोत: पत्र सूचना कार्यालय की अनुसंधान इकाई

Scanned with OKEN Scanner

इन्टरप्रेटिंग जियोमेट्रीज़ : फ्लोरिंग ऑफ राष्ट्रपति भवन

लेखक टीम : चंडीगढ़ कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर, चंडीगढ़

भाषा: अंग्रेजी, मूल्य - प्रिंट वर्जन : 2870 रुपये, ई-वर्जन : 2152 रुपये

यह पुस्तक देश के प्रथम नागरिक का निवास यानी राष्ट्रपति भवन के ऐतिहासिक फर्श पैटर्न का खुलासा करती है। इसमें लेखकों ने राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली की जटिल फर्श रचनाओं को प्रतिचित्रित और प्रलेखित किया है और फिर उनकी गूढ़ व्याख्या की है। इस प्रकाशन का विचार परिसर की अंतर्निहित महिमा और महत्व से उपजा है। राष्ट्रपति भवन के प्रारंभिक सर्वेक्षण में अद्वितीय ज्यामितीय विन्यास और रचनाओं वाले फर्श के उत्कृष्ट पैटर्न का पता चला। ये फर्श पैटर्न जो पुष्पीय और अमूर्त दोनों हैं परिसर के विभिन्न भागों जैसे प्रवेश कक्षों, सीढ़ियों, भव्य कक्षों, समारोह कक्षों और परिचारक स्थलों में मौजूद हैं और फिर भी उन्हें साथ जोड़ते हैं। लाल और बादामी बलुआ पत्थर, संगमरमर, सीमेंट, भारतीय पेटेंट पत्थर, लकड़ी और टेराज़ो जैसी विभिन्न सामग्रियों का उपयोग एक दृश्य सौंदर्य प्रस्तुत करता है जो स्थानगत विशेषता को क्रमिक रूप से और भिन्न स्थलों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रवाह को बेहतरीन रूप प्रदान करता है। भारत में यह एक अनूठी मिसाल है जहां इस तरह की विराट और महलनुमा प्रकार और अनुपात की इमारत ने फर्श में ज्यामिति कला को उकेरा है और देश के प्रथम नागरिक के निवास के प्राचुर्य, भव्यता और ऐतिहासिक महत्त्व को और भी बढ़ाया है। इसलिए लेखकों के लिए 1912 में (यह निर्माण जो 1929 तक चला) भारत के वायसराय के निवास के लिए सर एडविन लुटियंस द्वारा डिज़ाइन किए गए फर्श पैटर्न के इस अद्वितीय संचय का दस्तावेजीकरण करना आवश्यक हो गया।

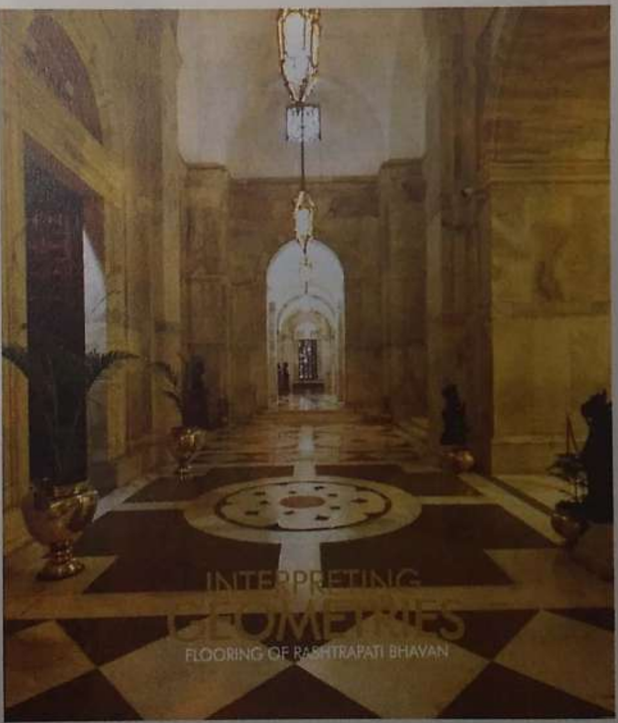

यह पुस्तक इस एच-आकार की इमारत के केंद्रीय क्षेत्र के महत्वपूर्ण कक्षों की चर्चा करती है। आरंभिक अध्याय में डिज़ाइन सिद्धांत और रायसीना हिल पर राष्ट्रपति भवन की स्थापना और एच-आकार की इमारत में इस तरह के अनूठे फर्श डिज़ाइनों के सृजन की प्रेरणा का वर्णन किया गया है। अगले दो अध्याय फर्श पैटर्न के दस्तावेज़ीकरण और गूढ़ व्याख्या से सम्बन्धित हैं और प्रत्येक अध्याय में दो तलों यानी ऊपरी तहखाने का तल और मुख्य तल पर बनाये पैटर्न का संग्रह है। इन अध्यायों में विभिन्न चरणों में फर्श के डिज़ाइन को समझने के लिए कई वास्तुशिल्पीय फर्श प्लान चित्र, फर्श पैटर्न चित्र और व्याख्यात्मक रेखाचित्र शामिल हैं। लेखकों ने डिज़ाइन के अनुपात और सिद्धांतों (समरूपता, लय, संतुलन, क्रम, पदानुक्रम आदि) की प्रणाली की समझ के आधार पर निर्माण परियोजना के प्रारंभ के दौरान एडविन लुटियंस द्वारा बनाए गए फर्श के उपलब्ध अभिलेखीय चित्रों के आधार पर पैटर्न की गूढ़ व्याख्या की है।

पुस्तक में लगभग 22 स्थानों की जांच की गयी है जिसमें से 31 पैटर्न की डिज़ाइन प्रेरणा और ज्यामिति को समझने के तरीके के बारे में क्रमानुसार चित्रात्मक वर्णन किया गया है। इनमें से प्रत्येक अध्याय पूरे तल की एक मुख्य योजना के साथ शुरू होता है जिसमें व्याख्या किये गए प्रत्येक पैटर्न का स्थान दिखाया गया है। प्रत्येक पैटर्न की व्याख्या का आरंभ द्वि-आयामी चित्रों के माध्यम से फर्श योजना को दर्शाने वाले क्षेत्र के स्थानिक विन्यास के विवरण के साथ शुरू होता है। अग्रिम चरण प्रत्येक फर्श पैटर्न की संरचनात्मक ग्रिड, प्रांगण के अनुसार खुलने वाले स्थान की व्यवस्था, दृश्य और स्थानिक अक्षों के परिप्रेक्ष्य में व्याख्या की ओर ले जाते हैं जिससे फर्श पैटर्न के समग्र विकास को समझा जाता है। अंतिम चरण में पाठक रंग योजना और पत्थर की काट के साथ सम्पूर्ण रूप से प्रलेखित फर्श के बारे में जान सकता है। व्याख्या चरणों के बाद साइट पर लेखकों द्वारा प्रलेखित विस्तृत स्टोन कट्स (पत्थर की नक्काशी) को उजागर करने के लिए प्रत्येक पैटर्न के साथ एक ट्रेसिंग/गेटवे शीट संलग्न की गयी है।

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, भूमि और लोगों, आज़ादी का अमृत महोत्सव, कला और संस्कृति, वनस्पतियों और जीवों, गांधी साहित्य, आत्मकथाओं और भाषणों, विज्ञान और बाल साहित्य सहित राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर प्रकाश डालने वाले प्रकाशनों की एक विस्तृत श्रृंखला से परिचित होने और खरीदने के लिए www.publicationsdivision.nic.in पर जाएं। ■

संपादकीय पृष्ठ पर दिया गया डिज़ाइन इसी पुस्तक से लिया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

भारतीय कला : उद्भव और विकास
(वास्तु-मूर्तिशिल्प-चित्र)

लेखक : हरिपाल त्यागी

मूल्य : 555/- रुपये

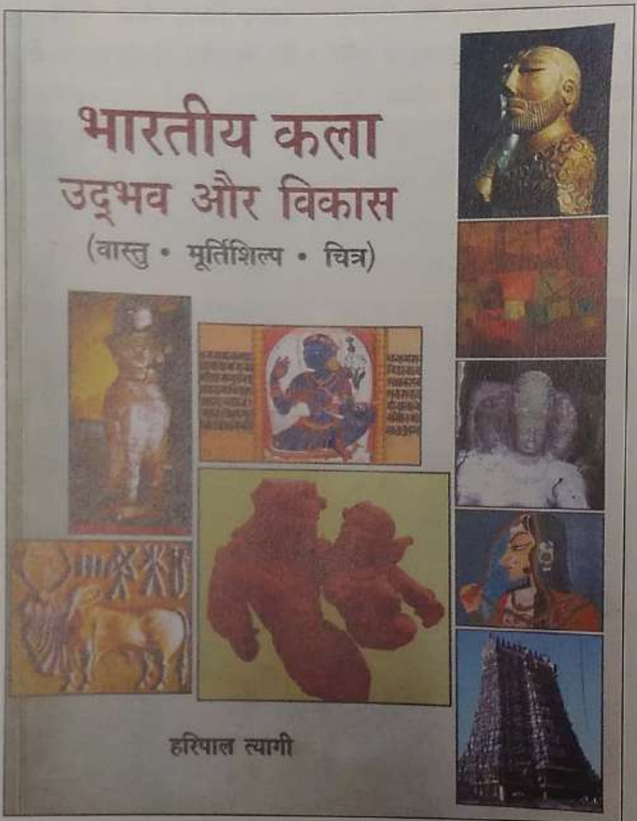

इस पुस्तक में भारतीय परिप्रेक्ष्य में वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला उद्भव और विकास के क्रमिक अध्ययन का विश्लेषण किया गया है। इसका उद्देश्य पारंपरिक कला के गौरवपूर्ण इतिहास संबंधी बुनियादी समझ से तो पाठकों को अवगत कराना है ही, साथ ही, आधुनिक और समकालीन कला प्रवृत्तियों, उनमें निहित उद्देश्यों तथा समस्याओं पर विमर्श करना भी है। पुस्तक की पाठ्य सामग्री केवल कला के विद्यार्थियों, अध्यापकों और कला के संपर्क में किसी भी रूप में रह रहे व्यक्तियों तक ही सीमित न होकर और अधिक व्यापक है।

इस पुस्तक की सामग्री से सभ्यता और संस्कृति के विकास में कला की भूमिका और शक्ति, व्यक्तित्व के विकास में उसकी जरूरत, जीवन में उसके महत्व और शिक्षा में उसकी अनिवार्यता पर विचार करने का अवसर मिलेगा।

पुस्तक में हड़प्पा सभ्यता में कला का स्थान तथा पूर्व वैदिक काल से उत्तर वैदिक काल तक पौराणिक ग्रंथों में कला के प्रतिमान, वैदिक साहित्य में कलाओं के साक्ष्य, ऋग्वेद में वास्तुशास्त्र के प्रमाण, वैदिककाल का शिल्पी तथा विष्णुधर्मोत्तर पुराण में कला-साक्ष्य पर अनूठी सामग्री दी गई है।

साथ ही स्तंभ-स्तूप और शिलालेख, शुंगकाल का कला वैभव, प्राक् अजंता काल तथा शक-कुषाण काल में कला पर विशेष सामग्री दी गई है।

इसके अलावा गुप्तकालीन कला का स्वर्णिम इतिहास, गुप्तकालीन मूर्तिकला (प्रस्तर), भित्ति चित्रों की महान परंपरा और अजंता पर वास्तुकला को चित्रों के साथ बहुत सुन्दर तरीके से समझाया गया है।

पुस्तक में मध्यकाल में उत्तर भारत की कला, जिसमें कश्मीर, हिमाचल पर्वत क्षेत्र के मंदिर, उत्तर भारतीय नदी-घाटियों का वास्तु वैभव, गुजरात, काठियावाड़, राजस्थान में शिखर नागर मंदिरों की परंपरा, मध्यप्रदेश के मंदिर, ओडिशा के नागर मंदिर के साथ ही दकिखनी मंदिर एवं मूर्तिशिल्प तथा मध्यकालीन चित्रकला के प्रमाण का ब्योरा दिया गया है।

Scanned with OKEN Scanner

पुस्तक से लिया गया अंश –

दुनिया भर के सभी छोटे-बड़े मानव-समूह, चाहे जिस भी परिस्थिति में हों, इतिहास की किसी भी परीक्षा से उन्हें गुजरना पड़ता हो, दुनिया के किसी भी कोने में रहते हों, स्वाभाविक रूप से सृजनशील ही होते हैं। सृजनात्मकता मनुष्य जीवन का अभिसन्न अंग है। इसी कारण मनुष्य दुनिया भर के सभी प्राणियों से ऊपर हैं। सृजन की गति से ही काल की गति विकसित हुई है। सृजन प्रक्रिया में उन्होंने औजारों का निर्माण किया। मानव मस्तिष्क ने औजारों की सहायता से और भी नए-नए औजार बनाए और इसी तरह, चिंतनपरक प्रक्रिया में, विभिन्न कलाओं का निर्माण हुआ। मनुष्य के विभिन्न क्रिया-कलापों में अलग-अलग ढंग और तौर-तरीके प्रयोग में लाए जाने लगे। इस प्रक्रिया में उनके कार्य और कार्य करने के औजार दोनों ही अधिकाधिक सुघड़ एवं परिष्कृत होते गए।

हमारे भारतीय कला मूल्यों का कितना विशाल भंडार प्राकृतिक कारणों या फिर बाहरी आक्रमणों से नष्ट हुआ, कला के पारंपरिक इतिहास की कितनी कड़ियां कहां-कहां से टूट गईं, इसका कोई लेखा-जोखा हमारे पास नहीं है, न ही उसका अनुमान लगा पाना संभव है।

मनुष्य द्वारा विविध प्रकार के सृजनात्मक कार्यों में चित्रकला के साथ कलाओं के अन्य रूप भी प्रस्फुटित हुए, इसी से मानव सभ्यता का विकास हुआ। जाहिर है, कला का इतिहास उतना ही पुराना है जितना मनुष्य का। जब हम कला के उद्भव और विकास पर बात करते हैं, तो प्रकारांतर से यह मनुष्य के उद्भव और विकास पर बात करना ही है।

भारतीय उपमहाद्वीप में चित्रकला एवं अभिघटन कला (मूर्तिकला या प्रतिमाएँ) के उद्भव और विकास का संपूर्ण और क्रमबद्ध ब्यौरा देने में कई कठिनाइयाँ हैं, क्योंकि अधिकांश भाग आज भी कालकवलित हैं या फिर उसे समय ने ही हमसे छुपा लिया है। उदाहरण के लिए हड़प्पा सभ्यता को ही लें, जिसे एक विकसित सभ्यता के रूप में स्वीकृति मिली है, उसका अवश्य ही कोई शैशवकाल भी रहा होगा, जिसकी हमें कोई ठोस जानकारी नहीं है। सिंधुघाटी की इस सभ्यता से संबंधित थोड़ी-सी जो कला वस्तुएं सामने हैं, उनसे भी हमारा परिचय ज्यादा पुराना नहीं है। पिछली शताब्दी के तीसरे दशक में यदि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक सर जॉन मार्शल के निर्देशन में रायबहादुर दयाराम साहनी ने रावी तट के हड़प्पा नगर की खोज न की होती तो हम आज भी अंधेरे में ही होते। हड़प्पा के बाद मोहनजोदड़ो की भी खोज हुई। जबकि सिंधुघाटी की सभ्यता के अंतर्गत विस्तृत भू-भाग, जो बलूचिस्तान से गुजरात तक फैला है, के बारे में जानकारी आज़ादी मिलने के बाद से ही शुरू हुई है। ■

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के बारे में जानने के लिए

डाउनलोड करें और क्विज खेलें।

/dpd_india @DPD_India /publicationsdivision